चैत्र माह, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 71, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | मंगलवार 05 अप्रैल 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

गोरखनाथ मंदिरः अल्लाह-हू-अकबर के नारे लगाते हुए हथियार लेकर मंदिर में घुसा था, आतंकियों की साजिश हो सकती है सिपाहियों पर हमला, एटीएस-एसटीएफ एडीजी कर रहे जांच

गोरखपुर को दहलाने की साजिश !

गोरखपुरः गोरखपुर के गोरखनाथ मंदिर में रविवार रात हुआ अटैक आतंकी हमला था। एडीजी लॉ एंड ऑर्डर प्रशांत कुमार ने कहा कि मंदिर पर हमला एक गंभीर साजिश का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि हमलावर अहमद मुर्तजा अब्बासी के लैपटॉप जो डिटेल्स मिली है उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह आतंकी घटना है। एटीएस और एसटीएफ दोनों मिलकर हमले की जांच कर रही है। हमलावर अब्बासी ने 2015 में मुंबई आईआईटी से केमिकल इंजीनियरिंग की थी। उधर, इससे पहले सोमवार सुबह इस हमले का करीब 34 सेकेंड का वीडियो सामने आया है। इस वीडियो को कार में बैठे एक शख्स ने बनाया है। वीडियो में साफ दिख रहा है कि हमलावर मुर्तजा हाथों में धारदार हथियार लिए हुए है। अफरा-तफरी का माहौल दिख रहा है। रविवार शाम करीब 7 बजकर 20 मिनट पर पीएसी जवानों पर हमला किया गया। सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मी मौके से भाग खड़े हुए। मंदिर के मुख्य पश्चिमी गेट से लेकर परिसर के अंदर तक करीब 15 मिनट तक संदिग्ध ने तांडव मचाया और मंदिर सुरक्षा में लगाए गए पुलिस वाले उसके डर से भागते रहे। लेकिन, अनुराग नाम के एक पुलिसकर्मी की सूझबूझ से वो पकड़ा गया।

'अल्लाह हू अकबर' का नारा लगाकर बोला, मुझे गोली मार दो'ः 2015 में आईआईटी मुंबई से केमिकल इंजीनियर कर चुका मुर्तजा हाथ में हथियार लिए गोरखनाथ मंदिर और थाने के ठीक सामने वाली सड़कों पर दौड़ता रहा। पब्लिक और पुलिस वाले उसे देख भागते रहे। इस बीच मुर्तजा ने 'अल्लाह हू अकबर' का नारा भी लगाया और चिल्ला- चिल्ला कर पुलिस वालों से अपील कर रहा था कि "मैं चाहता हूं कि तुम लोग मुझे गोली मार दो।"

बहादुर जवानों को दिया जाएगा 5-5 लाख का इनामः वहीं, एसीएस (गृह) अवनीश अवस्थी ने बताया कि दो पीएसी और एक पुलिस का जवान हमले में घायल हुए हैं। उन्होंने बहादुरी से हमले को विफल किया है। अगर हमलावर मंदिर में प्रवेश कर जाता तो भक्तों को नुकसान पहुंचा सकता था। इन तीनों बहादुर जवानों को 5-5 लाख रुपए का इनाम दिया जाएगा।

बढ़ाई गई गोरखनाथ मंदिर की सुरक्षा बहरहाल, पुलिस सक्रियता और मंदिर सुरक्षा की पोल खुलते ही इस मामले की जांच यूपी एटीएस ने ले ली है। इसके साथ ही मंदिर की सुरक्षा भी बढ़ा दी गई है। मंदिर के मुख्य गेट पर सख्त चेकिंग

के बाद ही किसी को अंदर जाने दिया जा रहा है। इसके साथ ही युवक के आतंकी कनेक्शन और उसकी मंशा की जांच में एटीएस जुटी हुई है।

डॉ. अब्बासी के परिवार का सदस्य है मुर्तजाः संदिग्ध मुर्तजा अहमद अब्बासी शहर के मशहूर डॉ. अब्बासी के ही परिवार का सदस्य है। वे यहां अब्बासी नर्सिंग होम परिसर में ही परिवार के साथ रहता है। एटीएस परिवार के साथ-साथ बाकी लोगों से भी पूछताछ कर रही है।

एटीएस ने शुरू की जांच, खंगाल रही विदेशी कनेक्शनः एसएसपी डॉ. विपिन टाडा ने बताया कि देर रात अळर ने जांच की कमान संभाल ली है। एटीएस और पुलिस टीम हमलावर अहमद मुर्तजा अब्बासी के घर पहुंची। उसके पिता और अन्य परिवार वालों से पूछताछ शुरू की। एटीएस उसका विदेशी कनेक्शन भी तलाश रही है।

आतंकी कनेक्शन या दंगे की साजिश तो नहीं

एटीएस जांच कर रही है कि कहीं इसमें आतंकी कनेक्शन तो नहीं है।

भारत सर्वाधिक एफडीआई पाने वाला देशः निर्मला

नई दिल्लीः सोमवार को केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को लोकसभा में कहा कि भारत सर्वाधिक विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) प्राप्त करने वाला देश बना हुआ है और भारतीय खुदरा निवेशकों ने शेयर बाजारों से एफपीआई के बड़ी मात्रा में धन निकासी के बाद पैदा हालात को संभालने की क्षमता विकसित की है।

खुदरा निवेशकों ने खुद को साबित कियाः लोकसभा में प्रश्नकाल में कांग्रेस सांसद शशि थरूर के सवाल का जवाब देते हुए सीतारमण ने कहा कि विदेशी निवेश को केवल एफआईआई (विदेशी संस्थागत निवेशक) और एफपीआई (विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक) से नहीं मापना चाहिए। उन्होंने कहा कि एफआईआई और एफपीआई की निर्भरता ब्याज दरों पर होती है और उनमें उतार-चढ़ाव होता रहता है। उन्होंने कहा कि एफआईआई और एफपीआई आते-जाते रहते हैं। लेकिन आज भारतीय खुदरा निवेशकों ने साबित किया है कि कोई भी झटका लगे, उसे संभाला जा सकता है। गौरतलब है कि शशि थरूर ने भारतीय बाजार से विदेशी निवेशकों द्वारा 1.14 लाख करोड़ रुपये से अधिक धन निकाले जाने का जिक्र करते हुए विदेशी निवेशकों का निवेश कम होने की प्रवृत्ति के बारे में सवाल किया था।

एफडीआई से हो रहा बड़ा फायदाः इस पर वित्त मंत्री सीतारमण ने कहा कि भारत में कोविड से पहले से सर्वाधिक एफडीआई आ रहा था, जो कोविड महामारी के संकट काल में भी अच्छी स्थिति में रहा और उसके बाद अब भी बेहद अच्छी स्थिति में है। उन्होंने कहा कि खुदरा निवेशकों ने आज भारत के बाजारों में काफी विश्वास पैदा किया है। निर्मला सीतारमण ने आगे बोलते हुए कहा कि एफडीआई के अच्छी स्थिति में होने से हमें संकेत मिलता है कि जो पैसा आ रहा है, उसका निवेश इस देश में हो रहा है और इस तरह हमारे लिए रोजगार सृजन हो रहा है तथा संभावनाएं बन रही हैं। यह एफआईआई और एफपीआई से नहीं हो रहा।

पूर्व कांग्रेस नेता अशोक तंवर आप में हुए शामिल

नई दिल्लीः पंजाब विधानसभा में आम आदमी पार्टी (आप) को मिली सफलता के बाद पार्टी अब दूसरे राज्यों में पांव पसार रही है। इसी क्रम में सोमवार को हरियाणा कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष अशोक तंवर आप में शामिल हो गए। तंवर को पार्टी के मुखिया अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली बुलाकर पार्टी में शामिल कराया है। तंवर ने ट्वीट कर कहा, जनप्रिय नेता अरविंद केजरीवाल के कुशल नेतृत्व में जनहित में किए जा रहे ।

कानून व्यवस्था को मजबूत करेगा क्रिमिनल बिलः शाह

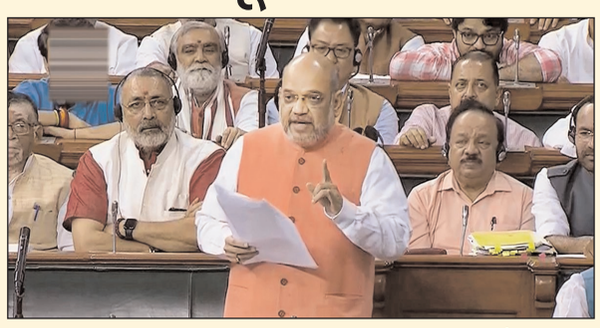

नई दिल्लीः केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को लोकसभा में आपराधिक प्रक्रिया (पहचान) विधेयक- 2022 पर चर्चा की शुरूआत करते हुए कहा कि सरकार की मंशा इस कानून व्यवस्था को और मजबूत करना है। लोकसभा में इस विधेयक को पारित करने के लिए प्रस्तुत करते हुए शाह ने कहा कि यह विधेयक बंदी शिनाख्त अधिनियम 1920 के स्थान पर लाया गया है। सरकार की मंशा इसके पीछे कानून को मजबूत करना है, बंदियों को सजा के बाद सुधारने का प्रयास करना है और कानून एवं व्यवस्था को मजबूत करना है। गृह मंत्री ने कहा कि विधेयक से कानून व्यवस्था और मजबूत होगी। उन्होंने कहा कि विधेयक को लाने का यह बिल्कुल सही अवसर है अन्यथा जरूरी बदलाव में देरी हो जाएगी। चर्चा में भाग लेते हुए कांग्रेस के मनीष तिवारी ने विधेयक को स्थाई समिति को भेजने का अनुरोध किया।

उन्होंने कहा कि इससे राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो को 75 वर्षों के लिए सैंपल डाटा इकट्ठा करने का अधिकार मिलेगा। डाटा प्रोटेक्शन अधिनियम के बिना अपराध के मामले में निर्दोष साबित होने पर अपना डाटा हटा नहीं पाएगा । इस कानून के नागरिक अधिकार और स्वतंत्रता पर भी प्रभाव होगा।

रूस-यूक्रेन युद्धः मायकोलीव पर बरसीं मिसाइलें

कीवः रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध के 40 दिन हो गए हैं। इसके बावजूद दोनों देश पीछे हटते नजर नहीं आ रहे हैं। तमाम अंतरराष्ट्रीय कोशिश के बीच दोनों देशों में वार्ता से उम्मीदें बंधी हुई हैं। इस बीच यूक्रेनी शहर मायकोलीव पर रूसी मिसाइलों की बरसात ने वहां जीवन तहस-नहस कर दिया है। एक अन्य यूक्रेनी शहर मैरियूपोल में डेढ़ लाख लोग फंसे हैं जिन्हें अपना भविष्य अंधकार में नजर आ रहा है। रूस अब कुछ शहरों पर ध्यान केंद्रित कर तेज आक्रमण की रणनीति बना रहा है। डोनाबास में रूसी सेनाएं पूरी तरह हमलावर हो गयी हैं। रूस वहां लगातार हमले कर क्षेत्र को जबर्दस्त नुकसान पहुंचा रहा है। यूक्रेन की सेना भी पीछे हटने को तैयार नहीं हैं। यूक्रेन की ओर से डोनाबास में रूसी सेनाओं के हमले का जोरदार जवाब दिया जा रहा है। डोनाबास के अलावा रूसी सेना ने यूक्रेन के मायकोलीव शहर पर एक बार फिर हमला करना तेज कर दिया है। मायकोलीव के मेयर क्लेंडर सेनकेविच ने बताया कि शहर पर रूसी मिसाइलों की बौछार से स्थिति अस्त व्यस्त हो गयी है।

मंत्री-पुत्र की जमानत पर 'सुप्रीम' फैसला सुरक्षित

लखीमपुर-खीरीः लखीमपुर खीरी हिंसा मामले में सुप्रीम कोर्ट में आज सुनवाई हुई। कोर्ट ने गृह-राज्यमंत्री अजय मिश्रा टेनी के बेटे आशीष मिश्रा की जमानत रद्द करने की याचिका पर फैसला सुरक्षित रखा है। सीजेआई एनवी रमना की स्पेशल बेंच ने इस मामले पर सुनवाई की।

एसआईटी की निगरानी कर रहे हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज ने आशीष मिश्रा की जमानत रद्द करने की अपील करने की सिफारिश की थी। सुप्रीम कोर्ट ने चिट्ठी पर वढ सरकार से जवाब मांगा था।

गंभीर किस्म का था अपराध, सरकार ने कहाः यूपी सरकार की ओर से वकील महेश जेठमलानी ने कहा कि यह बहुत ही गंभीर मामला है। सरकार ने जमानत नहीं देने की मांग की थी, लेकिन हाईकोर्ट का इस मामले में विचार कुछ और था। अपील पर सरकार का रुख अभी भी वही है जो पहले दायर किए गए हलफनामे में था। वाहन के कुचलने से लोगों की मौत हुई। मुद्दा गोली से चोट का नहीं है, षडयंत्र की परतें खोलनी जरूरी है।

आशीष से फ्लाइट रिस्क नहींः यूपी सरकार ने हालांकि यह भी कहा कि आशीष मिश्रा के बारे में फ्लाइट रिस्क नहीं है। वह गवाहों के साथ छेड़छाड़ नहीं कर सकता, हमने हर गवाह को सुरक्षा प्रदान की है, हमने जमानत का पुरजोर विरोध किया था। लखीमपुर खीरी हिंसा मामले में सुप्रीम कोर्ट की निगरानी कमेटी ने सोमवार को स्टेटस रिपोर्ट दाखिल की है। स्टेटस रिपोर्ट में कहा गया है कि आशीष मिश्रा की जमानत रद्द करने की सिफारिश की गई थी।

रक्ळ ने 2 बार जमानत रद्द करने की सिफारिश भी की थी। रिपोर्ट में कहा कि साक्ष्य के अनुसार आशीष मौके पर था। आशीष को डिप्टी सीएम के मार्ग बदलाव की जानकारी भी थी।

अधर में पाकिस्तानी सियासत

इस्लामाबादः पाकिस्तान की सियासत फिलहाल अधर में है। रविवार को निवर्तमान प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव खारिज होने और उनकी सलाह पर राष्ट्रपति की ओर से संसद भंग किए जाने के फैसले को लेकर पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को सुनवाई शुरू हुई, लेकिन कोई फैसला न हो सका। अब सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई मंगलवार तक के लिए स्थगित कर दी है। पाकिस्तान की नेशनल असेंबली में रविवार को पांच मिनट के अंदर इमरान खान के खिलाफ पेश अविश्वास प्रस्ताव को खारिज कर दिया गया। इसके बाद तेजी से कई घटनाक्रम हुए। इमरान खान ने इसके तुरंत बाद संसद भंग कर नए चुनाव कराने की संस्तुति राष्ट्रपति को भेजी और इस पर राष्ट्रपति ने तुरंत अपनी सहमति देते हुए संसद को भंग कर दिया। इसके बाद से विपक्ष का हंगामा जारी है।

उधर, सुप्रीम कोर्ट ने तुरंत मामले का संज्ञान लेते हुए संबंधित पक्षों से जवाब तलब कर सोमवार को सुनवाई का फैसला किया था। सोमवार को मामले की सुनवाई शुरू तो हुई किन्तु कोई फैसला नहीं हो सका। कोर्ट ने मामले की सुनवाई एक दिन के लिए स्थगित कर दी। अब मंगलवार दोपहर 12.30 बजे सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई होगी।

पेट्रोल-डीजल फिर हुआ महंगा

नई दिल्लीः अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में नरमी के बावजूद पेट्रोल-डीजल के दाम में फिर बढ़ोतरी हुई है। सार्वजनिक क्षेत्र की तेल विपणन कंपनियों ने पेट्रोल की कीमत में 40 पैसे प्रति लीटर और डीजल के भाव में 43 पैसे प्रति लीटर का इजाफा किया है। इस बढ़ोतरी के साथ ही राजधानी दिल्ली में सोमवार को पेट्रोल और डीजल की कीमतें बढ़कर क्रमशः 103.81 रुपये प्रति लीटर और 95.07 रुपये प्रति लीटर हो गयी है। इंडिया ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक देश के अन्य महानगरों, मुंबई में पेट्रोल की कीमत बढ़कर 118.83 रुपये प्रति लीटर और डीजल का भाव 103.07 रुपये लीटर हो गई है। वहीं, कोलकाता में पेट्रोल की कीमत अब 113.45 रुपये प्रति लीटर, जबकि डीजल की कीमत 98.22 रुपये प्रति लीटर हो गई है। इसी तरह चेन्नई में पेट्रोल की कीमत 109.34 रुपये और डीजल की कीमत 99.42 प्रति लीटर पर पहुंच गयी है। बता दें कि पिछले दो हफ्तों में पेट्रोल-डीजल 8.40 रुपये प्रति लीटर महंगा हो गया है।

उल्लेखनीय है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम में गिरावट जारी है। हफ्ते के पहले कारोबारी दिन ब्रेंड क्रूड 0.8 फीसदी की गिरावट के साथ 103.98 डॉलर प्रति बैरल पर ट्रेंड कर रहा था। वहीं, डब्ल्यूटीआई क्रूड 98.93 डॉलर प्रति डॉलर पर कारोबार कर रहा था।

श्रीनगर में आतंकी हमला, जवान शहीद, एक घायल

श्रीनगरः श्रीनगर में लाल चौक के पास सोमवार को आतंकियों ने सीआरपीएफ पर हमला कर दिया। बताया जा रहा है कि इस हमले में एक सीआरपीएफ का जवान शहीद हो गया है। पुलिस ने बताया कि श्रीनगर में हुए आतंकी हमले में सीआरपीएफ का एक जवान शहीद हो गया है, जबकि एक अन्य घायल हो गया है, जिसे एसएमएच अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। हमले की सूचना मिलते ही पुलिस और सुरक्षा बल के जवान मौके पर पहुंच गए हैं। उन्होंने इलाके को घेर कर आतंकियों की तलाश के लिए अभियान शुरू कर दिया है। इससे पहले आज जिला पुलवामा में आतंकियों ने एक बार फिर दो गैर स्थानीय लोगों को निशाना बनाया। दहशतगर्दों ने पुलवामा के लजोरा में दो लोगों को गोली मार कर घायल कर दिया। दोनों घायलों को एसएमएच अस्पताल में भर्ती कराया गया है। दोनों घाटी के बाहर के रहने वाले बताए जा रहे हैं। वहीं, रविवार की शाम को पुलवामा जिले के ही लिट्टर इलाके में पोल्ट्री की गाड़ी लेकर आए दो गैर-कश्मीरियों को आतंकियों ने गोली मार दी थी। घायलावस्था में दोनों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। दोनों पंजाब के पठानकोट के रहने वाले हैं। घटना के बाद पुलिस तथा अन्य सुरक्षा बलों के वरिष्ठ अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर घटना की जानकारी हासिल की। प्रत्यक्षदर्शियों से पूछताछ के बाद पूरे इलाके को घेर कर तलाशी अभियान चलाया जा रहा है, ताकि उन्हें धर दबोचा जाए। वहीं, 29 मार्च को बारामुला के सोपोर कस्बे में सीआरपीएफ के बंकर पर बुर्का पहन कर ओवर ग्राउंड वर्कर महिला ने हमला किया था। महिला का कनेक्शन लश्कर-ए-तैयबा से जुड़ा बताया गया है। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है। वह पहले भी कुछ आपराधिक मामले में शामिल पाई गई है।

पिछले माह दो मजदूरों को मारी गई थी गोलीः आतंकियों ने पिछले महीने दो मजदूरों गोली मारी थी। 21 मार्च को पुलवामा जिले के गांजू इलाके में बिहार के रहने वाले मजदूर विश्वजीत कुमार को गोली मार दी थी।

राज्यसभा में 6 नए सदस्यों ने ली सदस्यता की शपथ

नई दिल्लीः भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) उम्मीदवार के तौर पर निर्विरोध निर्वाचित होने के बाद सोमवार को एस फान्गनॉन कोन्यक ने राज्यसभा की सदस्यता की शपथ ली। वह नगालैंड से उच्च सदन में पहुंचने वाली पहली महिला सदस्य हैं। इसके साथ ही पूर्वोत्तर से राज्यसभा पहुंचने वाली भाजपा की पहली महिला सदस्य भी हैं। कोन्यक के साथ ही पांच अन्य निर्वाचित सदस्यों ने भी उच्च सदन की सदस्यता की शपथ ली। इसके साथ ही वर्ष 1990 के बाद उच्च सदन में 100 का आंकड़ा पार करने वाली भाजपा पहली पार्टी बन गई है। कोन्यक नगालैंड भाजपा महिला मोर्चा की अध्यक्ष हैं। राज्यसभा सभापति एम. वेंकैया नायडू ने सोमवार को असम, केरल और नगालैंड के नवनिर्वाचित 6 सदस्यों को सदन की सदस्यता की शपथ दिलाई। कोन्यक ने नगालैंड की पारंपरिक वेशभूषा में शपथ ली। उनके अलावा, शपथ ग्रहण करने वालों में असम से भाजपा की पवित्र मार्गरिटा, यूनाइटेड पीपुल्स पार्टी लिबरल (यूपीपीएल) के रवंगवरा नारजारी, केरल से कांग्रेस की जेबी माथेर हीशम, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) के संदोष कुमार और मार्क्सवादी पार्टी (माकपा) के एए रहीम शामिल हैं।

खबर संक्षेप

लटके हाईटेंशन तार की चपेट में आई तीन भैंस,झुलस कर एक की मौत दो नाजुक

घूरपुर। बिजली विभाग की लापरवाही के चलते क्षेत्र के मोहिनीपुरवा गांव एक किसान तीन भैंस अचानक लटके हाईटेंशन तार की जद में आकर बुरी तरह से झुलसने लगी । किसी तरह लोगों ने तार की चपेट से भैस को दूर किया लेकिन तब तक एक भैंस की मौत हो गई। तथा दो गंभीर रूप से झुलस गई। मोहिनीपुरवा निवासी इंद्रजीत यादव सोमवार की दोपहर अपनी भैंस गांव के बाहर नाले के पास चरा रहे थे ।अचानक नाले के पास लटके हाईटेंशन तार की चपेट में भैंस आ गई । जिससे एक भैंस की मौत हो गई और दो गंभीर रूप से झुलस गई । घटना से ग्रामीणों में बिजली विभाग के अधिकारियों के प्रति गुस्सा है।

शिक्षा से ही देश की दशा और दिशा में होगा बदलाव : डीएम

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। सोमवार के दिन श्रावस्ती जनपद से मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी द्वारा स्कूल चलो अभियान के आगाज के क्रम में सोमवार के दिन दांदूपुर स्थित संविलियन स्कूल में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में यमुनापार के कई विधायको ने भाग लिया । इस बीच डीएम प्रयागराज भी मौजूद रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ विधायक गणों व डीएम द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। कार्यक्रम के शुभारंभ के बाद मुख्यमंत्री के कार्यक्रम का लाइव प्रसारण प्रोजेक्टर के माध्यम से दिखाया व सुनाया गया । इस बीच मौजूद विधायक करछना पीयूष रंजन निषाद ने उपस्थित अभिवावकों व जनप्रतिनिधियों से अपील करते हुए कहा कि सरकार शिक्षा के क्षेत्र में पहले से ज्यादा योजनाओं को लेकर आ रही है ,जब तक समाज के अंतिम छोर में बैठा एक एक बच्चा शिक्षित नहीं होगा तब तक प्रदेश का समुचित विकास नहीं होगा । इसी क्रम में बारा विधायक डॉ वाचस्पति व कोरांव विधायक राजमणि कोल ने भी शिक्षा के प्रति चल रही सरकार की योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में मौजूद छात्र छात्राओं ने इस मौके रंग बिरंगे सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति कर लोगों का मन मोह लिया ।मौजूद डीएम संजय खत्री ने शिक्षा के बारे में कहा कि जब तक देश

स्कूल चलो अभियान को लेकर दांदूपुर के संविलियन स्कूल में भव्य कार्यक्रम का हुआ आयोजन

जिलाधिकारी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते जन प्रतिनिधि

का हर तबका और हर नागरिक शिक्षित नहीं होगा देश की दशा और दिशा में बदलाव नहीं होगा ।उन्होंने कहा कि निश्चित ही हम भागमभाग जिंदगी की भागदौड़ में आगे निकलने की होड़ में लगे हैं ,लेकिन हम अपने पाल्यो को सही समय पर उनका मार्ग दर्शन नही कर पा रहे हैं, हमे अपने पाल्यो की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना होगा क्योंकि जिसके लिए हम परेशान है वह वही है,जिसे हम देख नहीं पा रहे हैं ।कार्यक्रम में एसडीएम करछना अमृता सिंह,बीडीओ चाका सपनावस्ती,अध्यक्ष प्राथमिक शिक्षक संघ देवेंद्र श्रीवास्तव,बीईओ कोरांव राजीव प्रताप सिंह,जसरा अखिलेस वर्मा,जिला समन्यवयक प्रशिक्षण डॉ विनोद मिश्र,एसआरजी प्रशांत ओझा,वंदना श्रीवास्तव,अमर सिंह,राजेन्द्र पांडेय,ईआरपी सुधीर पांडेय ,विवेक मिश्र ,अरविंद मिश्र,शशिकांत सिंह,सावित्री,आदि अभिवावक छात्र, प्रधान ,विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री का लाइव प्रसारण देखा। इसके बाद बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया इस शैक्षिक स्टाल भी लगाया गया ।जिसका डीएम ने अवलोकन किया ।जनप्रतिनिधियों द्वारा उद्बोधन के बाद स्कूल चलो अभियान की रैली निकाली गई और बच्चों केसाथ भोजन किया गया। कार्यक्रम आयोजन के बाद कायाकल्प कर बेहतर कार्य करने वाले प्रधान व नामांकन बढ़ाने वाले शिक्षकों तथा सर्वाधिक अंक पाने वाले बच्चों को सम्मानित किया गया । निधि जैन द्वारा प्रेरणा पर स्वरचित गीत सुनाया गया । अंत मे बीईओ चाका कैलाश सिंह ने आभार व्यक्त किया और सभी को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया । कार्यक्रम का संचालन सुनील तिवारी ने किया । फातिमा ,मनोज कुमार, नीलम सिंह,शरद,कमर सुल्ताना, अतुल तिवारी,मनोज सिंह,दिनेश कुमार ,मनोज ,शरद शुक्ल,संदीप गुप्त, विमलेश तिवारी आदि रहे।

न्यूज झरोखा

शौच करने गए युवक पर 4 लोगों ने किया जानलेवा हमला युवक की हालत गंभीर

मेजा। मेजा थाना सिरसा चौकी अंतर्गत ग्राम सभा छतवा में युवक सुबह बाहर गया शौच के लिए पहले से घात लगाए बैठे 4 लोगों ने धारदार हथियार से किया हमला युवक की हालत गंभीर है। प्राप्त जानकारी के अनुसार सुनील कुमार पुत्र शिवलाल सुबह सो के उठा घर से शौच के लिए बाहर निकला तभी पहले से घात लगाए चार लोग मोटू ,आशीष ,गोरे मुन्ना सिंह,आदि लोग युवक पर किया जानलेवा हमला जिससे युवक की हालत गंभीर सूचना पर हंड्रेड नंबर गाड़ी पहुंची हमलावर फरार हो गए घायल को उपचार के लिए सिरसा ले गए चौकी इंचार्ज हरिश चंद शर्मा ने कहां की तहरीर मिली है जांच कर कारवाई किया जाएगा।

प्रमोद कुमार त्रिपाठी स्वच्छ भारत अभियान के बने करछना विधानसभा संयोजक

करछना। भारतीय जनता पार्टी जिला यमुनापार की ओर से करछना के बस्तर गांव निवासी प्रमोद कुमार त्रिपाठी को जिला अध्यक्ष विभव नाथ भारती की संस्तुति पर स्वच्छ भारत अभियान के जिला संयोजक सत्येंद्र कुमार मिश्र की ओर से करछना विधानसभा क्षेत्र का स्वच्छता अभियान का संयोजक मनोनीत किया गया है। उनके मनोनयन से विधानसभा क्षेत्र के भाजपाइयों में हर्ष व्याप्त है। भाजपा के संदीप तिवारी राजा तिवारी मोनू तिवारी विजय शंकर तिवारी शिवेंद्र कुमार पांडेय आशीष कुमार पांडेय शिवम मिश्र विकास पांडेय आदि भाजपाइयों ने खुशी का इजहार करते हुए जिला इकाई समेत नवनियुक्त स्वच्छ भारत अभियान के संयोजक प्रमोद कुमार त्रिपाठी को बधाई दी है।

प्रधान जंघई द्वारा हाईमास्ट पोल लाइट लगवाई गई

जंघई। जंघई बाजार के निवासियों एवं बाजार में आवागमन करने वाले राहगीरों के लिए ग्राम पंचायत जंघई में व्यस्ततम स्थानों एवं तिराहों पर जिसमें बाईपास, पुरानी पुलिस चौकी एवं बाबा नगर में हाई मास्टलाइट प्रधान जंघई फूलवंती देवी द्वारा सोमवार को लगवाया गया। जंघई ग्राम पंचायत जो की लगभग नगर पंचायत की सभी मानक रखती है लेकिन नगर पंचायत अभी तक नही हो सका है ।प्रधान नगर पंचायत का रुप रेखा देने के लिए लगातार कार्य कर रही हैं जिसमें सभी का सहयोग मिल रहा है। हाईमास्ट लाइट लगते समय अमित राय, विपिन दुबे ठेकेदार, राजन पांडेय, रोहित पांडेय, सन्तोष चौरसिया, आशीष मिश्रा, छोटे शर्मा, बबलू गुप्ता, पिंटू दुबे, राजकुमार पांडेय आदि लोग मौजूद रहे।

एसएसपी ने धीरेंद्र सिंह को सौपी थानाध्यक्ष मेजा की कमान

सिरसा। प्रयागराज एसएसपी प्रयागराज ने सहायक पुलिस अधीक्षक आईपीएस चिराग जैन को थाना प्रभारी घूरपुर की कमान सौंपी है। और घुरपुर थाना प्रभारी को स्थानांतरित कर मेजा थाना प्रभारी की कमान सौंपी है। सोमवार को एसएसपी अजय कुमार ने तत्काल प्रभाव से थाना प्रभारी घूरपुर धीरेन्द्र सिंह को स्थानांतरित कर मेजा थाना प्रभारी की जिम्मेदारी सौंपी। बता दें कि दो दिन पूर्व एसएसपी ने कोतवाल मेजा रहे तुषार दत्त त्यागी को लाइन हाजिर कर दिया था।

विद्यालय में मनाया गया विदाई समारोह

लेडियारी। तहसील कोरांव के बड़ोखर में स्थित शारदा कान्वेंट स्कूल में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में स्वयं प्रबंधिका शिव कुमारी एवं नाथेस्वर तिवारी रहे। विदाई समारोह कार्यक्रम में बच्चों द्वारा नृत्य, गीत जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। बच्चों द्वारा स्कूल की सजावट भी की गई थी। श्रेया सिंह, आषुतोष सिंह, आकांक्षा केशरी, पलक सिंह एवं खुशी मिश्रा द्वारा नृत्य एवं अस्मिता सिंह, निधि सिंह, हर्ष उपाध्याय, शिवम सिंह, आनन्द सिंह एवं श्रुति मिश्रा द्वारा गीत प्रस्तुत किए गए जिसे देखकर अतिथियों ने खूब सराहा। इस दौरान मुख्य रूप से अनीता, हरिओम द्विवेदी, प्रमीला मिश्रा, राधा केशरी, रोहित ओझा आदि सभी अध्यापक एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

गेंहू की खड़ी फसल में बिजली का तार टूटने से लगी आग

बिजली का तार टूटने से गेहूं की खड़ी फसल जलकर खाक

अखंड भारत संदेश

सिरसा। प्रयागराज मेजा क्षेत्र के मेजिया गांव में लगी आग ने 5 बीघे गेहूं की खड़ी फसल को जलाकर खाक कर दिया। घटना की खबर मिलते ही दमकल कर्मियों ने ग्रामीणों की मदद से आग पर काबू पायागर्मी का मौसम आते ही आग लगने की घटनाएं सामने आने लगती हैं। कई बार खेत में आग लगने से किसान की खड़ी फसल बर्बाद हो जाती है और नुकसान सहना पड़ता है। ताजा मामला मेजा क्षेत्र के मेजिया गांव का है। जहां दो जगह गेहूं की खड़ी फसल में बिजली का तार टूटने से आग लग गई, जिसके चलते 4 किसानों के खून पसीने की कमाई जलकर खाक हो गई ।खेतो में लगी भीषण आग ने 5 बीघे गेहूं की खड़ी फसल को जलाकर खाक कर दिया। घटना की खबर मिलते ही दमकल कर्मियों ने ग्रामीणों की मदद से आग पर काबू पाया, लेकिन तब तक गेहूं की खड़ी फसल जलकर खाक हो चुकी थी ।तेज हवा के कारण आग भयंकर रूप धारण कर तेजी से 5 बीघे की खड़ी फसल को अपने आगोश में ले लिए ।दरअसल सोमवार की दोपहर बाद मेजा के मेजिया में गेहूं की खड़ी फसल में अचानक लगी। आग ने विकराल रूप धारण कर लिया और देखते ही देखते 8 किसानों अरुण मौर्य, इंद्रमणि कुशवाहा, मंजे सुरेंद्र, सुनीता देवी, शोभनाथ, रामसुमेर, नेबबुलाल, गेदुराही गांव के दूरपति की लगभग 5 बीघे से ज्यादा गेहूं की खड़ी फसल और लालजी यादव का बगीचा जलकर खाक हो गया। पहले तो ग्रामीणों ने खुद ही आग पर काबू पाने की कोशिश की, लेकिन तेज हवा के कारण किसानों द्वारा आग पर काबू नही पाया जा सका ।इसी बीच किसानों द्वारा फायर ब्रिगेड को भी सूचना दी गई लेकिन जब तक फायर ब्रिगेड की गाड़ियां मौके पर पहुंचती तब तक 5 बीघे गेंहू की फसल जलकर खाक हो गई ।दमकल कर्मियों और ग्रामीणों की मदद से आग को रोकने में सफलता मिली। पीड़ितों ने तहसील प्रशासन से जांच कराकर मुआवजे की मांग की है।

रस्तीपुर, खखैचा में बिजली का तार गेहूं की खड़ी फसल पर गिरा 5 बीघा फसल जलकर खाक

जंघई। रस्तीपुर, खखैचा ठकुरान बस्ती में सोमवार को करीब 9 बजे गेहूं की फसल के उपर से जा रहे जर्जर तार के गिर जाने के कारण देखते ही देखते पूर्व प्रधान छत्रपाल सिंह, पप्पू सिंह, बड़ेलाल सिंह, धनजीत सिंह की 5 बीघा गेहूं जलकर राख हो गया। ग्रामीणों ने प्रयास करके आग बुझाई, नहीं तो और फसल जल सकती थी सूचना पर दमकल की गाड़ी पहुंची तब तक ग्रामीणों ने आग बुझा दिया था। ग्रामीणों ने बताया कि विद्युत विभाग को जर्जर तार बदलने की सूचना दी गई थी लेकिन बदला नहीं गया ।हल्की हवा चलने पर तारों में घर्षण होने के कारण चिंगारियां निकलने लगी और तार कटकर फसल पर गिर पड़ा। सूचना पर बसपा प्रत्याशी रहे इंजीनियर घनश्याम पांडेय मौके पर पहुंचे और उपस्थित प्रभारी थानाध्यक्ष, चौकी इंचार्ज जंघई, लेखपाल से नुकसान की भरपाई के लिए कहा वार्ता किया। ग्रामीणों एवं किसानों में मायूसी एवं कष्ट दिखाई पड़ा अपनी आंखों के सामने अपनी लागत, परिश्रम बर्बाद होता देखकर क्योंकि कुछ दिनों बाद फसल की कटाई होने वाली थी कि अचानक जलकर राख हो गई।

श्रद्धालुओं ने मां चंद्रघंटा की पूजा अर्चना कर उतारी आरती

झूंसी। नवरात्र के तीसरे दिन भक्तों ने मां चंद्रघंटा के स्वरूप की पूजा अर्चना कर आरती उतारी। क्षेत्र के मंदिरों में सोमवार की सुबह मंगला आरती के बाद भक्तों के दर्शन के लिए कपाट खोले गए तो चंद्रघंटा की पूजा-अर्चना के लिए भक्तो का जनसैलाब उमड़ पड़ा। जमुनीपुर स्थित शक्तिपीठ मां ऐन्द्री धाम पर दिन भर घंटे घड़ियाल, ढोल के साथ मंत्रोचार गूँजते रहे। साप्ताहिक मेला भी लगा रहा दर्शन पूजन के लिए पहुंचे भक्तों ने मेले में खरीददारी भी की। शाम को मां दुर्गा के तीसरे स्वरूप चंद्रघंटा का भव्य सिंगार किया गया आरती में भक्तो का जनसैलाब उमड़ पड़ा। इस दौरान व्यवस्था में दयाशंकर पांडे, लालजी तिवारी, कमल सिंह पुजारी चक्रधर, राजा गिरी आदि मौजूद रहे। वहीं कोटवा स्थित मां अन्नपूर्णा धाम बुड्ढी मईया मंदिर में सुबह मंगला आरती के बाद से भक्तों के आने का सिलसिला शुरू हो गया जो कि देर रात तक चलता रहा पूरे दिन जगत जननी मां जगदंबा के जयकारों से मंदिर परिसर गूंजता रहा आचार्य लालमणि तिवारी, धर्मेंद्र जी महाराज विश्व के कल्याण के लिए दुर्गा सप्तशती का पाठ कर रहे हैं। शाम को महा आरती के बाद प्रसाद वितरण किया गया इस दौरान शमशेर बहादुर सिंह, सृजन मिश्रा हरिकेश सिंह, मोतीलाल, अरमान, हर्षित व्यवथा में लगे रहे।

अलंकरण प्रतिभा के साथ-साथ अंकपत्र वितरण कार्यक्रम संपन्न

जारी। स्कूली शिक्षा और प्रोत्साहन के कार्यक्रमों से बच्चों में छिपी प्रतिभा निखर कर सामने आती है ।जो देश का गौरव बनती है। उक्त बातें स्वामी विवेकानंद कॉन्वेंट स्कूल जारी बाजार में प्रतिभा अलंकरण व अंकपत्र वितरण कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष अयोध्या प्रसाद केसरवानी ने कही। बता दें की सोमवार सुबह 10:00 बजे के करीब जारी बाजार में स्थित स्वामी विवेकानंद स्कूल में अंक पत्र वितरण के साथ प्रतिभा अलंकरण का कार्यक्रम रखा गया था ।जिसमें मुख्य रुप से विशिष्ट अतिथि भारतीय जनता पार्टी के मंडल अध्यक्ष कौंधियारा शिव प्रसाद केसरवानी मंडल अध्यक्ष नारीबारी अंजनी लाल रहे। उक्त कार्यक्रम में विद्यालय के कक्षा में स्थान पाने वाले छात्र छात्राओं को ग्राम गडैया खुर्द प्रधान पति रंजीत गुप्ता ने सम्मानित व पुरस्कृत कर उनका उत्साह वर्धन भी जमकर किया गया। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं के अलावा अध्यापक और अभिभावक बंधु सहित क्षेत्र के दर्जनों संभ्रांत नागरिक मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के प्रधानाचार्य अजय केसरवानी ने किया।

ऊंचडीह गांव में जंगली जानवर के हमले से मवेशी घायल, मचा हड़कंप

मेजा प्रयागराज। उरुवा ब्लाक के अंतर्गत ग्राम सभा ऊंचडीह बाजार में हफ्ते भर से जंगली जानवरों का आतंक बतादे कि ऊंचडीह बाजार में भैंस के बच्चे गाय के बच्चों को जंगली जानवर ने एक हफ्ते में 5 को शिकार बनाया है । खाना पीना खाकर रात को सो रहे किसान लंगड़ भारतीय अमरजीत कुशवाहा जवाहर लाल कुशवाहा आशा जैसल के भैस व गाय के बच्चों को अभी तक जंगली जानवर शिकार बना चुका है जिससे लोगों में भय का विषय बना हुआ है अगर सही समय पर वन विभाग ने संज्ञान में नहीं लिया तो आगे और घटनाये घट सकती है जिसमें गांव में छोटे छोटे बच्चों घरों से बाहर नहीं निकलने दिया जा रहा है। जिससे गांव में भय व्याप्त है।

स्कूल चलो अभियान के तहत बच्चों ने निकाली जागरूकता रैली

अखंड भारत संदेश

जसरा। बेसिक शिक्षा परिषद प्रयागराज द्वारा स्कूल चलो अभियान के तहत सुबह रैली निकाल कर ग्रामीणों को जागरूक किया गया। बाद में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा टीवी पर बच्चों को उनका उद्बोधन सुनाया गया। विकास खंड जसरा के प्राथमिक विद्यालय अमरेहा, उच्च प्राथमिक विद्यालय जसरा में स्कूल चलो अभियान के तहत रैली निकाली गई। रैली में बच्चे हाथ में नारे लिखे हुए स्लोगन लिए नारे लगा रहे थे- हम सबने अब ठाना है,स्कूल हमें अब जाना है।अज्ञान का अंधेरा दूर भगेगा, घर घर शिक्षा का दीप जलेगा।एक भी बच्चा छूट न जाए,हर एक बच्चा पढ़ने जाये। सुन लो भैया सुन लो बहना, स्कूल में सब बच्चों को है पढ़ना। शिक्षा ऐसी सीढ़ी है, जिससे चलती पीढ़ी है आदि तरह तरह के नारे लगा रहे थे। रैली के बाद विद्यालय के बच्चों व अभिभावकों संग प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा टीवी पर चल रहा उनका उद्बोधन सुनाया गया। इस मौके पर ग्राम प्रधान अमरेहा राम मनोहर कुशवाहा, प्रधान जसरा आशीष कुमार सोनकर, प्रधानाध्यापक उपेन्द्र कुमार द्विवेदी, प्रधाना ध्यापिका जसरा डा. दीपशिखा, दिलीप तिवारी, ऊषा देवी, अहमद आमिर, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री आरती देवी,सीमा देवी व दर्जनों अभिभावक गण मौजूद रहे।

किसान देश का अन्नदाता है : अनुज सिंह

अखंड भारत संदेश

सहसों। भारतीय किसान यूनियन की मजबूत ग्राम इकाई से किसानों की सभी समस्याएं हल की जा सकती है। किसान ही देश का अन्नदाता की अग्रणी भूमिका निभाता है। उक्त बातें सहसों के थानापुर गांव में रविवार को भारतीय किसान यूनियन (अ) की ब्लॉक स्तरीय बैठक में युवा विंग के प्रदेश अध्यक्ष अनुज सिंह ने कही। उन्होंने कहा किसान देश की रीढ है। देश की आर्थिक मजबूती में किसान की महत्वपूर्ण भूमिका है।

गत माह कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक किसानों ने आंदोलन में भाग लिया। जिसका परिणाम यह रहा कि तीनों कृषि बिल सरकार को वापस लेना पड़ा। आज प्रदेश सरकार अप्रैल माह के पूर्व ही प्रचार-प्रसार के माध्यम से क्रय केंद्रों पर गेहूं खरीदने के लिए चिल्ला रही है। संगठन का उद्देश्य व्यक्तिगत व राजनीति से दूर रहकर, जाति व धर्म से ऊपर उठकर केवल किसानों के हित एवं सामाजिक कार्यो के लिए संकल्पित होना चाहिए। सभी कार्यकर्ता संगठित होकर प्रतिमाह होने वाले चौपाल में शामिल होकर ग्रामीण स्तर पर किसानों की समस्याओं के निराकरण के लिए संगठन के माध्यम से त्वरित समाधान करायें। इस अवसर पर सदस्यता अभियान चलाकर किसानों को संगठन से जोड़ा गया। इस मौके पर राज करण यादव, अजय सिंह, हरि भान सिंह, पंकज यादव, मुलायम पाल, नीरज यादव, रामदुलार, रोहित तिवारी, जीत लाल यादव ने संगठन की सदस्यता ग्रहण की। इस अवसर पर प्रमुख रूप से मंडल अध्यक्ष शालिक राम यादव, जिला महासचिव लल्लू पटेल, जिला उपाध्यक्ष अनुराग यादव, आयोजक चंद्रधर यादव एवं राजबहादुर यादव, पंचू यादव, हितेंद्र यादव, शुभम, विकास आदि उपस्थित रहे।

रमजानुल मुबारक में गरीबों की मदद करना बहुत सवाब का काम है : मुफ्ती फजलुर्रहमान कासमी

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। मुफ्ती फजलुर्रहमान कासमी ने कहा कि रमजानुल मुबारक महीना इस्लामी शरियत के अनुसार सबसे पवित्र महीना है, क़ुरान और दूसरी आसमानी पुस्तकें इसी महीने में अवतारित की गयी,। मुफ्ती फजलुर्रहमान ने कहा कि रमजान के शुरू होने से पहले ही प्यारे नबी रमजान की फजीलत से लोगों को बता देते थे ताकि लोग रमजान के महीने की कद्र करें ।और ज्यादा से ज्यादा इबादत करें ,। रमजान में एक फर्ज नमाज पढ़ने पर 70 फर्ज के बराबर सवाब दिया जाता है,। रमजान का महीना गम खारी का महीने है गरीबों परेशान लोगों को इस महीने में ज्यादा से ज्यादा दान किया जाता है,। ताकि अधिक से अधिक से सवाब मिले । मुफ्ती ने कहा कि इस बरकत वाले महीने में देश की उन्नती विकास और आपसी भाईचारा कायम रहे इसके लिए दुआ करें, इफ्तार के वक़्त दुआ कबूल होती है। इसलिए उस वक़्त दुआ का एहतिमाम करें रमजान में एक बबारकत रात शबे कद्र है इस रात में इबादत करने पर बहुत ज्यादा सवाब है इसलिए उस रात में इबादत करें रमजान के रोजे फर्ज हैं रमजान के रोजे रखने पर बहुत ज्यादा सवाब है अल्लाह रोजा रखने वाले को अपनी तरफ से बदला देगा,रोजा का छोड़ना बहुत ही बड़ा गुनाह है, रमजान में रात में तरावीह की नमाज सुननत है छोड़ना गुनाह है इसलिए रमजान की कदर करें इस पवित्र महीने में देश की खुशहाली और अमन शांति के लिए खास तौर से दुआ करें अल्लाह ताला प्यारे वतन को हमेशा आबाद रखे और देशवासियों में आपस में भाईचारा को कायम रखे।

क्रासिंग का फाटक टूटने से दोनों छोर पर लगा लम्बा जाम

जसरा। प्रयागराज बांदा राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित जसरा बाजार से होकर गुजरने वाले प्रयागराज मुंबई रेल मार्ग के गेट नंबर 24 क्रासिंग का फाटक एक मालवाहक वाहन की टक्कर से टूट गया । जिससे लगभग 4 किलोमीटर लंबा जाम लग गया। जिसमें फंसकर यात्री हलकान होते रहे। सोमवार की शाम लगभग पौने पांच बजे एक मालवाहक वाहन ने बंद हो रहे रेलवे क्रॉसिंग के बार में जोरदार टक्कर मार दिया। जिससे क्रॉसिंग का बार क्षतिग्रस्त हो गया तथा बीच सड़क पर हवा में फाटक लटक गया। जिससे क्रॉसिंग के दोनों ओर लगभग 4 किलोमीटर वाहनों का लंबा जाम लग गया। जिसमें सैकड़ों वाहनों में हजारों की संख्या में यात्री भीषण गर्मी में बिल बिलाते रहे। लगभग एक घंटे बाद रेल कर्मियों ने किसी प्रकार से टूटे हुए बार को हटाया। लेकिन वाहनों की लंबी कतार के कारण समाचार लिखे जाने तक जाम लगा रहा। जिससे इस मार्ग से गुजरने वाले हजारों यात्री भीषण गर्मी में परेशान होते रहे।

जसरा फाटक पर कब बनेगी आरओबी : 2022 विधानसभा चुनाव के पूर्व केन्द्र सरकार के मंत्री द्वारा जसरा को बाईपास के साथ ही रेलवे फाटक पर आरओबी इसी अप्रैल महीने में काम शुरू करने की बात केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा था। आरओबी के बन जाने के बाद जसरा बाजार के दिन भी बहुर जाएंगे।

खबर संक्षेप

तमंचा, बम व बाइक के साथ लूट गैंग पांच गिरफ्तार

घूरपुर। घूरपुर पुलिस टीम ने सोमवार की शाम इलाके के बुंदावा नहर पुलिया के पास से पांच संदिग्ध व्यक्तियों को पकड़ कर उनके पास तमंचा,कारतूस व बम सहित बरामद किया है। थाना प्रभारी आईपीएस चिराग जैन ने सोमवार के दिन ही घूरपुर थाने की कमान संभाला । इसी बीच पुलिस टीम के साथ वह इलाके के बुंदावा नहर पुलिया के पास संदिग्ध लोगों की जांच कर रहे थे ।इसी बीच पांच संदिग्ध व्यक्ति पुलिस को देखते ही भागने लगे । पुलिस ने घेर कर पांचों को पकड़ लिया ।थाने ले आकर तलासी ली गई तो उनके पास से दो तमंचा 315 बोर व चार जिंदा कारतूस व चार बम के साथ एक बाइक बरामद हुई । पुलिस ने बताया कि पकड़े गए सभी इलाके में लूटपाट करते थे ।पकड़े गए चितौरी गांव के संदीप पटेल ,दौना के विकास भारतीय ,लेउदी के मोनू उर्फ अंकित यादव,चितौरी के उमेश पाल वरामसिंह पटेल उर्फ दुअन्नी हैं। सभी आरोपी घूरपुर थाना क्षेत्र के सभी को जेल भेजा जा रहा है।

एक दिन पहले लव मैरिज करने वाले युवक ने ट्रेन से कटकर दी जान

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जार्जटाउन में हुई स्तब्ध करने वाली घटना में 22 वर्षीय शुभम केशरवानी ने ट्रेन के आगे कूदकर जान दे दी। एक दिन पहले ही उसने प्रेम विवाह किया था। उसके पास से एक सुसाइड नोट मिला जिसमें उसने अपनी मौत का जिम्मेदार पत्नी व उसके दो प्रेमियों को ठहराया है। पुलिस का कहना है कि परिजनों ने सुसाइड नोट के आधार पर तहरीर दी है जिस पर पत्नी समेत तीन पर आत्महत्या के लिए उकसाने का केस दर्ज किया गया है। जांच पड़ताल की जा रही है ।कीडगंज के मलाकराज का रहने वाला शुभम पुत्र राजेंद्र केशरवानी चौक स्थित एक कंपनी में काम करता था। वह दारागंज की रहने वाली एक युवती को पसंद करता था। 22 मार्च को दोनों परिजनों को कुछ बताए बगैर घर छोड़कर चले गए थे। जिस पर दोनों परिवारों ने उनकी गुमशुदगी दर्ज कराई थी। 22 मार्च को दोनों वापस आ गए और कोर्ट के समक्ष बयान दिया कि वह बालिग हैं और एक-दूसरे के साथ ही रहना चाहते हैं।

आर्य समाज मंदिर में की थी शादी

इसके बाद से युवती को लेकर शुभम अपने ही घर में रहने लगा। एक दिन पहले दोनों चौक स्थित आर्य समाज मंदिर पहुंचे और वहां प्रेम विवाह कर लिया। पुलिस के मुताबिक, सोमवार सुबह शुभम बिना परिजनों को कुछ बताए ही घर से निकल गया। कुछ देर बाद सोहबतियाबाग के पास रेलवे ट्रैक पर पहुंचकर उसने ट्रेन के आगे कूदकर जान दे दी ।जानकारी पर पहुंची पुलिस ने छानबीन की और तब तक सूचना मिलने पर परिजन भी आ गए। जांच पड़ताल के बाद पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम केलिए भेज दिया। जार्जटाउन एसओ बृजेश कुमार सिंह ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर जांच पड़ताल शुरू कर दी गई है ।पुलिस के मुताबिक, मृतक के पास से मिले सुसाइड नोट में लिखा है कि मेरी मौत के जिम्मेदार मेरी पत्नी व उसके दो प्रेमी नीरज व संदीप निषाद हैं। शादी से पहले उसकी पत्नी के दोनों से संबंध थे लेकिन उसने यह बात उससे छिपाए रखी। शादी के बाद भी उसके मना करने के बावजूद उसने उनसे संपर्क बनाए रखा। सोशल मीडिया के जरिए उनसे चैटिंग करती रही। ऐसे में अब मैं जीना नहीं चाहता हूं।

स्कूल चलो अभियान में सम्मानित किए गए सर्वश्रेष्ठ बच्चे

शंकरगढ़। जनपद में सोमवार से स्कूल चलो अभियान का शुभारंभ कर दिया गया है। जनपद मुख्यालय के साथ-साथ ब्लाक मुख्यालयों पर भी स्कूल चलो अभियान कार्यक्रम का आगाज किया गया है। प्रदेश स्तर पर किए गए इस कार्यक्रम का दूरदर्शन पर प्रसारण किया गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने श्रावस्ती में स्कूल चलो अभियान का आगाज किया ।जनपद के बीआरसी शंकरगढ़ में उक्त कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया गया। बीआरसी शंकरगढ़ में आयोजित इस कार्यक्रम में ब्लाक प्रमुख निर्मला देवी, प्रधान संघ के अध्यक्ष पुष्पराज सिंह,सभासद सुजीत केसरवानी,अखिलेश सिंह पटेल, मनीष, मंगला प्रसाद सिंह, मनोज केसरवानी, एआरपी अमित सिंह, सचिन कुमार, शुभांक पांडेय, विजय कुमार सिंह, नृपेंद्र सिंह, संदीप सिंह मौजूद रहे। इसी क्रम में कंपोजिट विद्यालय शंकरगढ़ में आयोजित स्कूल चलो अभियान के तहत कक्षा में प्रथम आने वाले और सर्वाधिक उपस्थिती दर्ज करवाने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। इसमें कक्षा आठ की अंजली वर्मा, कक्षा सात में दयाशंकर सोनी, कक्षा छह में योगिता, कक्षा पांच में दीपिका, कक्षा चार में श्रेया केसरवानी, कक्षा तीन में रोहन को पुरस्कृत किया गया। इसके अलावा उपस्थिति में अभिनय और ऋषभ को सम्मानित किया गया। इस मौके पर शिक्षक वीरेंद्र सिंह समेत तमाम अभिभावक भी मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

परीक्षा के दौरान खड़ी बाइकों में लगी आग मची अफरा-तफरी

सहसों। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की इंटर की चल रही परीक्षा के दौरान उस समय अफरा तफरी मच गई जब विद्यालय परिसर के बाहर परीक्षार्थियों की खड़ी बाईकें अचानक धू धू करके जलने लगी सूचना पाकर मौके पर क्षेत्राधिकारी सहित थरवई पुलिस ने पहुंच कर मामले की जांच पड़ताल शुरू कर दी। सोमवार को यूपी बोर्ड की इंटर मीडिएट की परीक्षा थरवई थाना अंतर्गत क्षेत्र के देवनहरी गांव स्थित श्री कृष्ण इंटर कॉलेज में जीव विज्ञान एवं गणित की परीक्षा चल रही थी कि अचानक जिसमे छात्रों की बाईके विद्यालय परिसर की बाउंड्री के बाहर खड़ी थी। परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में मशगूल थे। इसी बीच दो बजे अचानक अज्ञात कारणों से बाइकों के पास एकत्र खरपतवार में आग लग गई। देखते-देखते 6 बाईकें तथा तीन साइकिलें जलकर राख हो गई। पास पड़ोस वालों ने अपने संसाधनों से आग पर काबू पाया। सूचना पाकर तब तक दमकल भी फूलपुर से आ गया। जानकारी पाकर फौरन सीओ फूलपुर राम सागर तथा थाना थरवई की पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। आवश्यक लिखा पढ़ी करके जली हुई बाईकें व साइकिले थाने ले गए। पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी है।

मिशन इंद्रधनुष के तहत किया गया टीकाकरण

मेजा। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मेजा में मिशन इंद्रधनुष के तहत 2 साल तक के बच्चों को बीसीसी,पेंटा ,रोटा, पोलियो, एमआर का टीकाकरण व गर्भवती महिलाओं को टीडी का टीकाकरण किया गया। जिसमें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अधीक्षक डॉ ओमप्रकाश, स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी अंजू राय, एएनएम अनिता देवी,आशा संगिनी मंजू प्रजापति, आंगनबाड़ी कार्यकर्ती रेखा गुप्ता, आशा राम लली व गर्भवती महिला उपस्थित रही।

संचारी रोग नियंत्रण को लेकर बच्चों ने निकाली रैली

सोरांव। सोरांव बीआरसी के अंतर्गत परिषदीय विद्यालय सराय वृसिंह उर्फ सराय बाहर में कार्यरत प्रधानाध्यापिका डोला बनर्जी और ग्राम विकास अधिकारी अखिलेश कुमार तथा ग्राम प्रधान मनोरमा देवी के संयुक्त निर्देशन में बच्चों संग एक रैली निकाली गई। उक्त रैली क्षेत्र के हाजी गंज,बादलपुर,असवा,बाहर सराय गांव से होते हुए विद्यालय परिसर में आकर समापन किया गया। इस मौके पर ग्राम प्रधान हाजीगंज प्रेम सत्यार्थी, सहायक अध्यापिका सविता राही, रेनू यादव, सुमन रानी, सुलोचना संग आंगनवाड़ी अर्चना देवी, आशा कलावती, सफाई कर्मी धर्मेंद्र कुमार, सुजीत कुमार, छेदीलाल, ग्राम प्रधान पति राम गणेश मौर्य, समाजसेवी शमशेर पटेल ने बच्चों के साथ पूरे ग्राम सभा में भ्रमण किया। लोगों को संचारी रोग नियंत्रण के बारे में विस्तार से बताए जागरूकता के पर्चे भी बांटे।

नैनी में युवती के साथ सामूहिक दुष्कर्म, आरोपियों ने बनाया वीडियो

अखंड भारत संदेश

नैनी। थाना क्षेत्र के एक मोहल्ले में रहने वाली एक युवती के साथ दो युवकों द्वारा सामूहिक दुराचार का मामला प्रकाश में आया है। आरोपियों ने दुराचार करने के साथ ही युवती का वीडियो भी बना लिया था। वह वीडियो दिखाकर युवती को लगातार गलत काम करने के लिए ब्लैकमेल कर रहे थे। पीड़िता की मां ने सोमवार को नैनी कोतवाली में दो युवकों के खिलाफ तहरीर दी है। पुलिस ने उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। नैनी कोतवाली क्षेत्र के एक मोहल्ले में रहने वाली एक विधवा सब्जी लगाकर अपने परिवार को भरण पोषण करती है। एक सप्ताह पहले पास मोहल्ले में रहने वाला एक युवक अपने दोस्त के साथ उसके घर पहुंचा। युवती को घर में अकेला देखकर दोनों ने उसके साथ दुराचार किया और इसका वीडियो भी बना लिया। युवती का आरोप है कि जब उसने इसका विरोध किया तो आरोपियों ने वीडियो वायरल करने की धमकी देते हुए उसे ब्लैकमैल करना शुरू कर दिया।

वीडियो वायरल की धमकी देकर मनमानी का बना रहे थे दबाव

पीड़िता ने बताया कि वीडियो की धमकी देकर वह मनमानी करने का दबाव बनाने लगे। इससे परेशान होकर युवती ने पूरी घटना अपनी मां से बताई। इसके बाद पीड़िता की मां रविवार शाम को पीडीए पुलिस चौकी पहुंची और अपनी शिकायत दर्ज कराई। आरोप है कि चौकी पर मामले को लेकर घंटों पंचायत भी चली। सोमवार को पीड़िता अपने मां व परिजनों के साथ नैनी कोतवाली पहुंची और पूरा घटना क्रम बताया ।पीड़िता की मां ने नैनी निवासी शहजादे व सहसो निवासी मन्नू उर्फ मोनू के खिलाफ तहरीर दी है। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। इंस्पेक्टर कुशल पाल सिंह ने बताया कि पीड़िता की मां ने दुराचार व उसका वीडियो बनाकर ब्लैकमेल करने की शिकायत करते हुए दो युवकों के खिलाफ तहरीर दी है। तहरीर पर अरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है। एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है तथा दूसरे की तलाश में दबिश दी जा रही है।

रेप के आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

घटना के 24 घंटे बाद भी रेप पीड़िता का पुलिस नही करा सकी बयान

झूंसी। लखनऊ में प्रॉपर्टी डीलिंग का काम करने वाली युवती से रेप करने वाले आरोपी को तो झूंसी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है पर घटना के 24 घण्टे बाद भी पीड़ित का बयान नही दर्ज करा सकी। जिससे नाराज कुछ अधिवक्ताओं ने पुलिस पर मामले में लापरवाही बरतने का आरोप लगाते हुए थाने पहुच गए। देवरिया की रहने वाली 20 वर्षीय युवती लखनऊ में रहती है वही प्रॉपर्टी डीलिंग का काम करती है। रविवार को युवती एम्बुलेंश से झूंसी थाने पहुची और कहा कि अंदावा के एक होटल में उसके साथ रेप हुआ है। तभी रेप पीड़िता की ओर से कई अधिवक्ता थाने पहुँच गये। पुलिस से लिखित शिकायत करते हुए बताया कि उस्तापुर महमूदाबाद के राजकुमार ने फोन कर उसे प्रॉपर्टी के लिए झूंसी बुलाया था वह रविवार की सुबह लखनऊ से झूंसी आई राजकुमार से जमीन का सौदा हुआ। उसे 50 हजार रुपये भी पीड़िता ने दिए आरोप है कि राजकुमार ने उसे अपने परिचित के होटल अंदावा में आया। जहा नास्ते में नशीला पदार्थ खिलाकर उसके साथ रेप कर फरार हो गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश में जुट गई। देर रात पुलिस ने आरोपी राजकुमार को गिरफ्तार कर पूछताछ कर रही है। इंस्पेक्टर झूंसी एसपाल सिंह ने बताया कि मेडिकल होने में देर हो गया जिसकी वजह से पीड़िता का बयान नही कराया जा सका।

रिजल्ट संग ट्रॉफी पाकर नौनिहालों के खिले चेहरे

सोरांव। सोरांव क्षेत्र के खरगापुर स्थित एक शिक्षण संस्थान में बच्चो का अपने गुरु जी से परीक्षा परिणाम संग ट्राफी पाकर खुशी का ठिकाना न रहा। संस्था के प्रबंधक और प्रधानाचार्य ने सैकड़ों बच्चो को 31 मार्च को ट्राफी वितरण कर नए सत्र की शुरूआत की। जानकारी के अनुसार ब्लॉक संसाधन केंद्र मऊआइमा के अंतर्गत खरगापुर में स्थित शिक्षण संस्थान सविता ज्ञान विद्या मंदिर का सत्र 2021-22 का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा तथा अध्ययनरत छात्र/छात्राओं का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत होने से क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है। संस्था के प्रबंधक राजेश कुमार श्रीवास्तव ने अपने संस्था के सभी बच्चो को रिजल्ट संग एक ट्राफी देकर सम्मानित किए। जिसमे एलकेजी की नैंसी पटेल,श्रेया पटेल, तथा रूही पटेल को तथा पहली दर्जा के शिवा यादव,प्रियांशी पटेल, जान्हवी यादव को तथा दूसरी दर्जा के अभिमन्यु यादव, आराध्या पटेल, काव्य पाण्डेय को तथा तीसरी दर्जा के तुलसी यादव, खुशी यादव, अनिरुद्ध यादव को तथा चौथी दर्जा के दीपक मौर्य,प्रीति यादव, लवकुश को वही पांचवी दर्जा के अनामिका यादव, सोनाली वैश्य, खुशी यादव, को तो छठी दर्जा के मधु यादव, प्रार्थना मिश्रा, अंतिम मौर्य को वही सातवीं दर्जा के विशेष कुमार, माही पाण्डेय, अंशिका वैश्य,तथा आठवीं के दर्जा के वैष्णवी वैश्य,सुहानी द्विवेदी, तथा खुशी तिवारी ने कक्षावार क्रमशः प्रथम, द्वितीय,और तृतीय स्थान पाकर अपना ही नहीं बल्कि अपने स्कूल और मां-बाप का भी नाम रोशन किया है। वहीं विद्यालय के प्रधानाचार्य अतुल कुमार श्रीवास्तव ने सभी बच्चो को आगे अध्ययन करने के लिए अगली दर्जा में नाम लिखवाने और शिक्षणकार्य को अनवरत जारी रखने के लिए सभी बच्चो को सुझाव भी दिए तथा वहीं विद्यालय के प्राइमरी ग्रुप के प्रधानाचार्य सूबेदार मौर्य ने कहा कि शिक्षा वह शेरनी का दूध है जो पिएगा वही दहाडेगा। इसलिए सभी बच्चे मन और लगन लगाकर पढ़ाई करें। जब भी शिक्षा के क्षेत्र में समस्या उत्पन्न हो अपने संबंधित विषय के गुरुओं से संपर्क कर समस्या का निस्तारण जरूर करें। इस मौके पर संस्था के संरक्षक विनय कुमार श्रीवास्तव, अनुराग पाल,रविंद्र प्रताप श्रीवास्तव, संतोष कुमार द्विवेदी, राकेश कुमार यादव, जगत कुमार पाल,शुभम कुमार विश्वकर्मा, धीरज कुमार यादव, राजेंद्र कुमार यादव, साक्षी पाल, आशीष कुमार श्रीवास्तव संग सभी छात्र छात्राएं मौजूद रहे।

प्रतियोगी छात्र को मारी गई गोली, इलाज के दौरान मौत

मृतक के घर मचा कोहरामतथा इन्सेट में मृतक की फाइल फोटो

अखंड भारत संदेश

हनुमानगंज। सराय ?इनायत थाना क्षेत्र के पालिकरनपुर गांव में प्रतियोगी छात्र को पड़ोसी युवक ने गोली मार दी। घायल युवक की इलाज के दौरान एस ?आर ?एन में मौत हो गई। युवक की मौत की खबर मिलते ही घर में कोहराम मच गया। पुलिस आरोपी की तलाश में दबिश दे रही है। कुछ लोगो को पूछताछ के लिए हिरासत में पुलिस ने लिया है। आरोपी के घर से दो कारतूस सहित तमंचा भी पुलिस ने बरामद किया है। पालीकरनपुर गांव निवासी बाबूचंद्र यादव का बेटा आशीष यादव 21 सोमवार की शाम 7 बजे के करीब ट्रैक्टर से गेहूं की मड़ाई करके घर वापस लौट रहा था। लीलापुर-छिबैया मार्ग पांडेयपुर गांव के सामने एक चाय की दुकान पर चाय पीने के लिए रुक गया। दुकान पर पहले से मौजूद चार-पांच युवकों में से एक युवक आशीष के नजदीक आ कर गोली मार दी। गोली आशीष के सीने में लगी और वह सड़क पर ही गिर पड़ा मौके पर अफरा-तफरी का माहौल उत्पन्न हो गया मौके से सभी युवक फरार हो गए। आनन-फानन में पुलिस को सूचना देकर कुछ लोग घायल युवक को लेकर सहारन पहुंचे जहां इलाज के दौरान आशीष ने दम तोड़ दिया। दल बल के साथ मौके पर पहुंचे थाना प्रभारी सुशील कुमार दुबे आरोपी के घर पर दबिश दी जहां से उसके चाचा को छोटे भाई को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया है खबर लिखे जाने तक किसी ने घटना की कोई लिखित तहरीर पुलिस को नहीं दी थी।

युवक की मौत पर घर में मचा कोहराम : आशीष की मौत से मां उर्मिला देवी व बहनें निशा, छोटी, पूजा और भाई आलोक का रो रो कर बुरा हाल है। आशीष के पिता बाबू चन्द्र यादव एसआई है और इन दिनों उनकी तैनाती लखनऊ में है उन्हें जब बेटे की मौत की खबर मिली तो वरना रहने और तत्काल वहां से घर आने के लिए निकल पड़े। आशीष प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के साथ घर के कार्य में भी हाथ बंटाता।

शॉर्ट सर्किट से लगी आग खड़ी फसल जलकर राख

सहसों। चिलचिलाती गर्मी के महीने में जहां एक ओर किसान अपने फसल को तैयार कर अपने घरों में ले जाने के लिए मेहनतकश है वहीं किसी न किसी तरीके से खड़ी फसलों में आग लग जाने से फसल जलकर राख हो रही है। जानकारी के अनुसार सरायइनायत थाना क्षेत्र के उमरी गांव में सोमवार को दोपहर 2 बजे बिजली की शॉर्ट सर्किट से आग लग गई। जिसमें करीब 15 बीघा खड़ी फसल जलकर राख हो गया। गांव के वीडीओ सिंह, संजय सिंह, निशा देवी, सुरेश बहादुर सिंह, केन्द्र कुमार राय, वीरेंद्र बहादुर सिंह, इंद्रेश बहादुर सिंह, रमेश बहादुर सिंह, रविंद्र बहादुर सिंह, शिव कुमार सिंह, आद्या प्रसाद सिंह आदि लोगों का फसल देखते देखते जल गई। आग की सूचना मिलते ही आसपास के कई गांव के लोग टूट पड़े। पंपिंग सेट चलवा कर आग बुझाने में जुट गए। गनीमत रही कि किसानों ने ट्रैक्टर चलाकर जिन स्थान पर आग लगी थी। उसके चारों तरफ जुताई करना शुरू कर दिया। जुताई होने से एक खेत का दूसरे खेत की खड़ी फसल से संपर्क टूट गया। जिससे आग पर जल्दी काबू पा लिया गया।

कार्यालय ग्राम पंचायत कोखराज विकास खण्ड सिराथू जनपद कौशाम्बी।

(अल्पकालिक निविदा सूचना)

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत कोखराज विकास खण्ड सिराथू में चौदहवां वा पन्द्रहवां वित्त चतुर्थ राज्य वित्त आयोग,मनरेगा योजना,कायाकल्प योजना,राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन के अन्तर्गत शौचालय निर्माण व मरम्मत,नाली निर्माण,नाली मरम्मत,खडन्जा निर्माण,हैण्डपम्प मरम्मत,हैण्डपम्प रिबोर,इण्टरलाकिंग,स्कूल निर्माण व मरम्मत,पंचायत भवन मरम्मत,आंगनबाडी केन्द्र निर्माण व मरम्मत सोलर लाइट सोलर पम्प स्ट्रीट लाइट कूड़ा ट्राली लैपटॉप साइन बोर्ड हैंडपंप रिपोर्ट सामग्री मेज कुर्सी इनवर्टर बैटरी व अन्य कार्यो में प्रयुक्त होने वाली सामग्री आपूर्ति हेतु पंजीकृत फर्मो द्वारा दिनांक 05/04/2022 से 11/04/2022 तक सील बन्द अल्पकालिक निविदा आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 13/04/20202 को 12 बजे दिन में उपस्थित फर्मो के समक्ष खोली जायेगी। निविदा स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार पृथक पृथक होगा। निविदा ग्राम पंचायत में वित्तीय वर्ष 2022-23 में कराये जाने वाले सभी कार्यो हेतु प्रभावी होगा।

लक्ष्मीनारायण मौर्या	**रमेश चंद्र**
पंचायत सचिव	**ग्राम प्रधान कोखराज**
विकास खण्ड सिराथू	**विकास खण्ड सिराथू**
जनपद कौशाम्बी	**जनपद कौशाम्बी**

कार्यालय ग्राम पंचायत वीरकाजी वि. ख. फूलपुर, प्रयागराज

निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2022–23 में मनरेगा/राज्य वित्त आयोग/14वां वित्त आयोग/15 वां वित्त आयोग / कायाकल्प योजना / स्वच्छ भारत मिशन व बी आर जी एफ योजना के अन्तर्गत **वीरकाजी** ग्राम पंचायत के मद से कराए जाने वाले कार्य के लिए कार्यस्थलों पर निम्न सामग्री आपूर्ति हेतु सील बन्द अल्प कालिक निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 05.04.2022 से 10.04.2022 तक कार्यालय कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय / पंचायत भवन में सायं 4 बजे तक निविदा जमा कर सकते हैं जो दिनांक 11.04.2022 को निविदा हेतु गठित निर्माण कार्य समिति के सदस्यो के समक्ष 11 बजे खोली जायेगी।

सामग्रियों का विवरण निम्नवत है:–

क्र0	सामग्री	लम्बाई/मात्रा
1.	ईंट 150 एम एम	प्रति हजार
2.	सिमेंट	प्रति नग
3.	मोरंग बालू	प्रति घन मीटर
4.	महीन बालू	प्रति घन मीटर
5.	स्टोन ब्लास्ट 22.4 एम एम से 35 एमएम (अलग–अलग)	प्रति घन मीटर
6.	ईंट गिट्टी 20 एम एम (40 एम एम)	प्रति घन मीटर
7.	सरिया	प्रति कुन्तल
8.	ह्यूम पाइप 350 एम एम एन पी पी	प्रति नग
9.	ह्यूम पाइप 600/900 एम एम	प्रति नग
10.	सोलर लाईट व स्ट्रीट लाईट	प्रति नग
11.	इंटरलाकिंग ईंट	प्रति हजार
12.	शौचालय सामग्री/दरवाजा कम्पलीट	प्रति नग
13.	पत्थर पटिया विभिन्न साइज	प्रति नग
14.	इण्डिया मार्का 2 हैण्डपम्प मरम्मत सामग्री	प्रति नग
15.	चूना / पेन्ट इत्यादि	प्रति नग
16.	टाईल्स	प्रति नग
17.	किचन सेड सामग्री	प्रति नग
18.	गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा व अन्य सामग्री आपूर्ति	प्रति नग
19.	कोविड 19 के अन्तर्गत आवश्यक सामग्री	प्रति नग

नियम शर्तें :– 1. सामग्री की मात्रा कार्य स्वीकृत होने के बाद की जायेगी। 2. आवश्यकतानुसार सामग्री की आपूर्ति प्रधान एवं ग्राम पंचायत अधिकारी के आदेश पर ही की जायेगी अन्यथा नहीं। 3. सामग्री की मात्रा घटायी या बढ़ायी जा सकती है । 4. सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की निधि से स्वीकृत दर निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी। 5. सामग्री आपूतिकर्ता द्वारा 50 रूपये के स्टाम्प पेपर पर बान्ड भरना अनिवार्य होगा। तदउपरान्त जारी किया जायेगा। 6. सामग्री आपूर्ति के बाद निर्माण समिति के स्वीकृत के बाद भुगतान किया जायेगा। 7. आपूर्तिकर्ता का सेल्स टैक्स विभाग में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है तथा आयकर दाता हो, प्रमाणित छायाप्रति संलग्न की जाय। 8. प्रस्तुत दर पी. डब्ल्यू. डी. की एकीकृत दर से अधिक न हो। 9. सामग्री आपूर्ति ग्राम पंचायत के आदेशानुसार निर्धारित समयावधि अन्तर्गत की जानी अनिवार्य होगी। 10. सामग्री की गुणवत्ता मानक के अनुरूप नही पाये जाने की दशा में भुगतान की धनराशि नियमानुसार कटौती कर ली जायेगी। 11. निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी का होगा।

कमला देवी	**शशि यादव**
(ग्राम प्रधान)	ग्राम पंचायत अधिकारी
ग्राम पंचायत वीरकाजी	ग्रा. पं. वीरकाजी
वि. ख. फुलपुर, प्रयागराज	वि. ख. फूलपुर, प्रयागराज

पत्रांकः मेमो/2022–23/ दिनांक 04.04.2022

कार्यालय ग्राम पंचायत सरायंअब्दुल मलिक वि. ख. फूलपुर, प्रयागराज

निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2022–23 में मनरेगा/राज्य वित्त आयोग/14वां वित्त आयोग/15 वां वित्त आयोग / कायाकल्प योजना / स्वच्छ भारत मिशन व बी आर जी एफ योजना के अन्तर्गत **सराय अब्दुल मलिक** ग्राम पंचायत के मद से कराए जाने वाले कार्य के लिए कार्यस्थलों पर निम्न सामग्री आपूर्ति हेतु सील बन्द अल्प कालिक निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 05.04.2022 से 10.04.2022 तक कार्यालय कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय / पंचायत भवन में सायं 4 बजे तक निविदा जमा कर सकते हैं जो दिनांक 11.04.2022 को निविदा हेतु गठित निर्माण कार्य समिति के सदस्यो के समक्ष 2 बजे खोली जायेगी।

सामग्रियों का विवरण निम्नवत है:–

क्र0	सामग्री	लम्बाई/मात्रा
1.	ईंट 150 एम एम	प्रति हजार
2.	सिमेंट	प्रति नग
3.	मोरंग बालू	प्रति घन मीटर
4.	महीन बालू	प्रति घन मीटर
5.	स्टोन ब्लास्ट 22.4 एम एम से 35 एमएम (अलग–अलग)	प्रति घन मीटर
6.	ईंट गिट्टी 20 एम एम (40 एम एम)	प्रति घन मीटर
7.	सरिया	प्रति कुन्तल
8.	ह्यूम पाइप 350 एम एम एन पी पी	प्रति नग
9.	ह्यूम पाइप 600/900 एम एम	प्रति नग
10.	सोलर लाईट व स्ट्रीट लाईट	प्रति नग
11.	इंटरलाकिंग ईंट	प्रति हजार
12.	शौचालय सामग्री/दरवाजा कम्पलीट	प्रति नग
13.	पत्थर पटिया विभिन्न साइज	प्रति नग
14.	इण्डिया मार्का 2 हैण्डपम्प मरम्मत सामग्री	प्रति नग
15.	चूना / पेन्ट इत्यादि	प्रति नग
16.	टाईल्स	प्रति नग
17.	किचन सेड सामग्री	प्रति नग
18.	गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा व अन्य सामग्री आपूर्ति	प्रति नग
19.	कोविड 19 के अन्तर्गत आवश्यक सामग्री	प्रति नग

नियम शर्तें :– 1. सामग्री की मात्रा कार्य स्वीकृत होने के बाद की जायेगी। 2. आवश्यकतानुसार सामग्री की आपूर्ति प्रधान एवं ग्राम पंचायत अधिकारी के आदेश पर ही की जायेगी अन्यथा नहीं। 3. सामग्री की मात्रा घटायी या बढ़ायी जा सकती है । 4. सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की निधि से स्वीकृत दर निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी। 5. सामग्री आपूतिकर्ता द्वारा 50 रूपये के स्टाम्प पेपर पर बान्ड भरना अनिवार्य होगा। तदउपरान्त जारी किया जायेगा। 6. सामग्री आपूर्ति के बाद निर्माण समिति के स्वीकृत के बाद भुगतान किया जायेगा। 7. आपूर्तिकर्ता का सेल्स टैक्स विभाग में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है तथा आयकर दाता हो, प्रमाणित छायाप्रति संलग्न की जाय। 8. प्रस्तुत दर पी. डब्ल्यू. डी. की एकीकृत दर से अधिक न हो। 9. सामग्री आपूर्ति ग्राम पंचायत के आदेशानुसार निर्धारित समयावधि अन्तर्गत की जानी अनिवार्य होगी। 10. सामग्री की गुणवत्ता मानक के अनुरूप नही पाये जाने की दशा में भुगतान की धनराशि नियमानुसार कटौती कर ली जायेगी। 11. निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी का होगा।

मंजू देवी	**शशि यादव**
(ग्राम प्रधान)	ग्राम पंचायत अधिकारी
ग्रा. पं. सराय अब्दुल मलिक	ग्रा. पं. सराय अब्दुल मलिक
वि. ख. फुलपुर, प्रयागराज	वि. ख. फूलपुर, प्रयागराज।

पत्रांकः मेमो/2022–23/ दिनांक 04.04.2022

गोशाला को स्वावलम्बी बनाने का हो प्रयास : मण्डलायुक्त

मण्डलायुक्त ने बराछा स्थित गोशाला का किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रयागराज मण्डलायुक्त संजय गोयल ने सोमवार को प्रतापगढ़ पहुंचकर जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल के साथ नगर पालिका की गोशाला का निरीक्षण, स्कूल चलो अभियान में शामिल होने के बाद जिला असपताल का भी निरीक्षण किया।

आयुक्त का काफिला सोमवार को अपरान्ह एक बजे बराछा स्थित गोशाला पहुंचा। उनके साथ जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल, सीडीओ ईशा प्रिया, एसडीएम सौम्य मिश्रा, नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह के अलावा जिला पशुधन अधिकारी के लावा

बराछा स्थित गोशाला का निरीक्षण करते मण्डलायुक्त व डीएम।

अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे। लगभग आधे घंटे के निरीक्षण में आयुक्त संजय गोयल ने गोशाला को स्वावलम्बी बनाये जाने पर कार्यवाही करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि गोशाला को अपने संसाधनों से ही अपना व्यय निकालना होगा। इस बारे में गोबर से वर्मी कम्पोस्ट बनाने के भी सुझाव पर चर्चा की गई। वहां मौजूद जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने कहा कि इन दिनों हरे चारे की समस्या है। ऐसे में नगर पालिका महुली मण्डी से बची हरी सब्जियों को खरीदकर गोशाला के पशुओं को खिलाया जाए। गर्मी में पशुओं के पीने के पानी व खाने पर विशेष सतर्कता बरतने पर भी जोर दिया गया। इस बारे में नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि मण्डलायुक्त गोशाला की साफ-सफाई से संतुष्ट नजर आए। आयुक्त संजय गोयल ने राजगढ़ में स्कूल चलो अभियान में भी भाग लिया तथा शाम को मेडिकल कालेज के मरीजों का हाल-चाल लेने पहुंचे। जिले के सारे अधिकारी आज मण्डलायुक्त के आगमन को लेकर सतर्क एवं चैकस दिखाई दिये।

दबंगों ने होमगार्ड को रास्ते में दौड़ाकर पीटा

परियावां, प्रतापगढ़। रविवार की शाम को कोतवाली ड्यूटी पर जा रहे होमगार्ड राम चन्द्र यादव को आधा दर्जन की संख्या में दबंगों ने सड़क पर दौड़ा-दौड़ा कर पीटा। पहले से लाठी डंडा से रास्ते मे घात लगाए बैठे दबंगो ने ड्युटी पर जा रहे होमगार्ड रामचंद्र यादव को दबंगों ने खेत मे जानवर जाने के विवाद में होमगार्ड को जमकर मारा पीटा। सरेआम हो रही होमगार्ड की पिटाई से क्षेत्र में हड़कम्प मच गया। किसी की बोलने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी। पीड़ित होमगार्ड के परिजनों ने चार लोगों के खिलाफ कोतवाली पुलिस को घटना की नामजद तहरीर दिया है। पुलिस ने मामले में मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश में दबिश दे रही है।

स्कूल चलो रैली में शामिल शिक्षक व बच्चे।

मॉडल प्रा0 वि0 जहनईपुर में निकली स्कूल चलो रैली

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सदर विकास खंड के मॉडल प्राथमिक विद्यालय जहनईपुर में आज मुख्यमंत्री के स्कूल चलो अभियान के लाइव प्रसारण के बाद विद्यालय के बच्चों, अभिभावकों एवं शिक्षकों ने स्कूल चलो रैली निकाली। पूरे गांव का भ्रमण करने के उपरांत विद्यालय में शैक्षिक संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रधानाध्यापिका प्राची पांडे ने कहा कि सभी का शिक्षित होना जरूरी है। सभी लोग सरकारी विद्यालयों में बच्चों का दाखिला करा कर निःशुल्क अपने बच्चों को न केवल शिक्षित बनायें बल्कि उत्तम शिक्षा व्यवस्था का लाभ प्राप्त करें। संगोष्ठी में शिक्षक जिष्णेंद्र प्रताप सिंह, प्रधान पति विजयराज यादव, अरुणा मिश्रा, पुष्पा पटेल, कृष्णा यादव, रितु, संजना, रानी, अशोक वर्मा, सरोजा, जय देवी आदि उपस्थित रहे।

हाईस्कूल विज्ञान में 7056 परीक्षार्थी अनुपस्थित

परीक्षा केन्द्रों पर रही परीक्षार्थियों की भीड़

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। माध्यमिक शिक्षा परिषद उ0प्र0 की चल रही परीक्षाओं में आज सोमवार को प्रथम बेला में हाईस्कूल विज्ञान की परीक्षा में कुल 57122 परीक्षार्थी पंजीकृत थे। इनमें से 7056 परीक्षार्थी अनुपस्थित हो गये। केवल 50116 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। इसमें 26497 छात्र व 23619 छात्राएं शामिल थी।

सोमवार को हुई पहली बेला में इंटर में मनोविज्ञान, शिक्षाशास्त्र व तर्कशास्त्र की परीक्षा थी। इसमें जिले भर में 7921 परीक्षार्थी पंजीकृत थे जिसमें 1208 परीक्षार्थी अनुपस्थित हो गये। केवल 6713 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। जिसमें 1722 छात्र व 4991 छात्राएं शामिल थी। आज बड़ी परीक्षा होने के कारण जिला विद्यालय निरीक्षक सहित शिक्षा विभाग के अनेक

अधिकारी परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण करते रहे। इसके अलावा परीक्षा केन्द्रों का आंतरिक परीक्षा दल भी परीक्षार्थियों की तलाशी लेता रहा। शहर के परीक्षा केन्द्रों पर पुलिस की चैक चैबंद व्यवस्था देखने को मिली। प्रशासन की सख्ती के चलते किसी भी परीक्षा केन्द्र पर इस बार सामूहिक नकल या बवाल की सूचना अभी तक नहीं मिली है। कई दिनों तक छोटी परीक्षाओं के बार आज सोमवार को बड़ी परीक्षा होने से केन्द्रों पर परीक्षार्थियों की भीड़ दिखाई दी। उधर द्वितीय बेला में इंटर की जीव विज्ञान और गणित की परीक्षा थी जिसमें कुल 30316 परीक्षार्थी पंजीकृत थे, जिसमें से 3060 अनुपस्थित हो गये। बचे 27256 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। इनमें छात्रों की संख्या 17100 और छात्राओं की संख्या 10156 रही।

कलेक्ट्रेट और तहसीलों में तटकते रहे ताले

एसडीएम की गिरफ्तारी न होने से कर्मचारियों में रोष

एसडीएम की गिरफ्तारी के विरोध में प्रदर्शन करते कर्मचारी।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नायब नाजिर की पिटाई से हुई मौत के मामले में आरोपी एसडीएम ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह की गिरफ्तारी न होने से कर्मचारियों ने सोमवार को कलेक्टेज्ट व तहसील में पूर्ण हड़ताल रखी, जिससे वादकारी भी परेशान हुए। कोई अधिकारी व कर्मचारी कलेक्ट्रेट व तहसीलों में नहीं आ सका और कामकाज ठप रहा।

बता दें कि नायब नाजिर की पिटाई के बाद पहले तो प्रशासन ने ढिलाई बरती और उसके इलाज में लालगंज में एसडीएम की मौजूदगी में उसके इलाज में लापरवाही की गई जिससे शनिवार को उसकी मौत हो गई। मौत के बाद प्रशासन ने एसडीएम के विरुद्ध हत्या का मुकदमा लालगंज में दर्ज करा दिया। इसके बाद से एसडीएम फरार चल रहे हैं। पता चला है कि शासन ने इस मामले को संज्ञान में लेते हुए एसडीएम ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह को निलम्बित कर दिया है लेकिन वह फरार हैं। उनकी गिरफ्तारी नहीं हो रही है। इससे कर्मचारियों में रोष है। एसडीएम की गिरफ्तारी को लेकर प्रतापगढ़ जिले ही नहीं पूरे प्रदेश में आज कलेक्ट्रेट में कार्य नहीं हुए। कर्मचारियों की मांग है कि एसडीएम को गिरफ्तार किया जाए और मृतक के परिजनों को मुआवजा व नौकरी दी जाए। जब तक ये मांगें पूरी नहीं होंगी, कर्मचारी झुकने को तैयार नहीं हैं।

नायब नाजिर की हत्या से वकीलों तथा कर्मचारियों मे उबाल

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। तहसील मे तैनात नायब नाजिर हत्याकांड को लेकर सोमवार को अधिवक्ताओं तथा कर्मचारियों मे यहां जमकर उबाल देखा गया। नाराज कर्मचारियों ने तहसील मे तालाबंदी कर दी तो कर्मचारियों के समर्थन मे सड़क पर उतरे वकीलों ने प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। नाराज अधिवक्ता तथा कर्मचारी नायब नाजिर सुनील शर्मा की हत्या के आरोपी एसडीएम रहे ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह की बर्खास्तगी व गिरफ्तारी की मांग कर रहे थे।

हालांकि शासन ने हत्या का अभियोग पंजीकृत होते ही आरोपी एसडीएम ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। विरोध करने वाले अधिवक्ताओं की मांग है कि आरोपी एसडीएम ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह की फौरन गिरफ्तारी हो। विरोध प्रदर्शन करने वालो मे संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष राममोहन सिंह, महामंत्री प्रवीण यादव, अनिल महेश, देवी प्रसाद मिश्र, अजय शुक्ल गुडडू, लाल राजेन्द्र सिंह, केबी सिंह, सुरेंद्र सिंह, संतोष सिंह, रामलखन शर्मा, प्रमोद तिवारी, हरिश्चंद्र पाण्डेय, आदि अधिवक्ता रहे।

मोदी सरकार जानबूझकर नहीं कर रही महंगाई पर नियंत्रणः प्रमोद तिवारी

अग्निपीड़ितो से मिलकर स्वयं व विधायक मोना की ओर से की मदद

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। केन्द्रीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य प्रमोद तिवारी ने सोमवार को अमावां के गऊघाट सरैंया मे अग्निपीड़ितो से मुलाकात कर स्वयं तथा विधायक मोना की ओर से हर सम्भव मदद का भरोसा दिलाया।

श्री तिवारी ने अग्निपीड़ित छोटेलाल वर्मा व बंशी लाल वर्मा तथा अन्य पीड़ितों से मुलाकात कर क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना की ओर से भेजवाये गये आकस्मिक सहायता किट व स्वयं की ओर से आर्थिक मदद की। वहीं सोमवार को यहां एक

गऊघाट में अग्निकांड से हुए नुकसान का जायजा लेते प्रमोद तिवारी।

दिवसीय दौरे पर पहुंचे प्रमोद तिवारी ने कैम्प कार्यालय पर कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि मोदी सरकार मंहगाई पर जानबूझकर इसलिए नियंत्रण नही कर रही है कि उसके पूंजीपति मित्रों को चुनाव के बाद फिर से फायदे की भरपाई की जा सके। उन्होने कहा कि बारह दिनों मे पेट्रोल व डीजल के दाम जनता को चकमा देते हुए पैसे पैसे मे बढ़ाकर इसका सूचकांक आज साढ़े आठ रुपए बढोत्तरी का पहुंचा दिया गया। श्री तिवारी ने कहा कि गैस के दामों मे जिस तरह से बढोत्तरी की गई है उससे भी पूंजीपतियों को ही लाभ पहुंच रहा है। एक रिर्पोट का हवाला देते हुए श्री तिवारी ने कहा कि 1.5 अरब का मुनाफा गैस के दामों मे बढोत्तरी से सिर्फ रिलान्यस कंपनी को होने जा रहा है। श्री तिवारी ने कहा कि पूंजीपतियो के द्वारा बनाई गई बड़ी कंपनियां मुनाफे मे हैं जबकि आम आदमी की जेब गैस, डीजल व पेट्रोल तथा घरेलू खाद्यान्न सामग्रियों मे लगातार मंहगाई से रोज ढ़ीली हो रही है। प्रमोद तिवारी ने कार्यकताओं से सरकार की नाकामियों को जनता तक पहुंचाए जाने को भी कहा। इस मौके पर भगवती प्रसाद तिवारी, अशोक सिंह बब्लू, अमित सिंह, संतोष द्विवेदी, ज्ञानप्रकाश शुक्ल, दगपाल यादव, ददन सिंह, झबलू राजा, योगेश प्रताप सिंह, इरफान हुसैन, अशोकधर दुबे, राजपति सिंह, पवन शुक्ल, राजू मिश्र, महेन्द्र सिंह, लल्लन सिंह, छोटे लाल सरोज, झुन्ना तिवारी, पप्पू तिवारी, रामकृपाल पासी, छगन सिंह, सुरेंद्र सिंह, त्रिभु तिवारी, मुस्ताक अहमद, अंशुमान तिवारी, ओम पाण्डेय आदि रहे।

एनसीसी कैडेट्स ने गंगाघाट में चलाया सफाई अभियान

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। मदनमोहन मालवीय पी जी कालेज कालाकांकर के एनसीसी कैडेट्स ने एनएमओ डॉ0 शिवभूषण के नेतृत्व में पुनीतसागर अभियान के अंतर्गत गंगातट की साफ सफाई किया।

सिंगल पॉलीथीन के उपयोग हेतु जागरूकता रैली निकाली तथा महाविद्यालय परिसर में महापुरुषों की मूर्तियों की सफाई किया। इस अवसर डॉ सूर्यभान सिंह, डॉ प्रदीप सिंह, डॉ इंदुरेखा सिंह, डॉ विनीता सिंह, डॉ रेखा सिंह, ज्योति गुप्ता, डॉ शिवभूषण डॉ रामकरन डॉ उमेश मिश्र डॉ हवलदार सिंह, डॉ डालचंद आनन्द, भूपेश सिंह, डॉ सृष्टि कुशवाहा, प्रीति सिंह, एस पी सिंह चैहान आदि उपस्थित रहे।

महापुरुषों की मूर्तियों की सफाई करते एनसीसी कैडेट्स।

वाहन की टक्कर से गम्भीर घायल युवक की इलाज के दौरान मौत

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। रविवार की शाम थाना क्षेत्र के खांडे का पुरवा, सराय देवराय निवासी लल्लन पाल (27) वर्ष पुत्र स्व जगन्नाथ पाल बाइक से कटरा गुलाब सिंह बाजार गया था। घर वापस आते समय भगवती पब्लिक स्कूल के सामने अज्ञात वाहन ने उसे जोर दार टक्कर मार दिया, जिससे वह गम्भीर रूप से घायल हो गया।

घटना की खबर सुनकर मौके पर पहुँचे उसके परिजनों व ग्रामीणों ने उसे एक निजी चिकित्सालय पहुंचाया, जहाँ देर रात इलाज के दौरान उसकी मौत हो गयी। मौत की खबर से परिजनों में कोहराम मच गया। मृतक लल्लन की पत्नी मनोजा देवी की सूचना पर पहुँची जेठवारा पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेजा। लल्लन पाल अपने पीछे पत्नी मनोजा देवी के साथ पुत्री शेजल (6) वर्ष व आस्था (3) वर्ष व विधवा मां लालमती व विकलांग बहन है जो अब पत्नी के सहारे ही रहेंगे।

आगजनी मे सैकड़ों बीघा गेहूं की फसल जलकर राख, कोहराम

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। अज्ञात कारणों से लगी भयंकर आगजनी मे किसानो का सैकडो बीघा गेहूं की फसल जलकर खाक हो गयी। वहीं खेतो मे खडे कई पेड भी आगजनी की चपेट मे झुलस गये। फायर ब्रिग्रेड के सूचना के बावजूद बिलम्ब से पहुंचने पर ग्रामीणों मे गुस्सा भी देखा गया।

हालांकि इसके पूर्व ही ग्रामीणों ने किसी तरह आग पर लगभग काबू पा लिया था। बाद मे फायर ब्रिग्रेड ने भी बची खुची आग को बुझवाया। तहसील के प्रतापरूद्रपुर गांव मे सोमवार को दोपहर बाद अचानक खेतों मे आग लग गयी। आग की लपट धीरे धीरे बगल के मोठिन तथा सराय लालमती गांव के भी खेतो मे पहुंच गयी। खेतों मे आग की लपटें विकराल देख डरे गांवो के लोग घर छोडकर भागते दिखे। आगजनी से पीड़ित इन गांवो के बृजलाल मौर्य, सदाशिव मौर्य, राजेन्द्र पटेल, भोला, श्याम नारायण, सरदार प्रजापति, लक्ष्मी नारायण दुबे, नन्हें मौर्या, हरिश्चंद्र यादव, उमाकांत तिवारी, रामऔतार पटेल, बड़के भाय, शोभनाथ, हरिशंकर, नंदलाल दुबे, लक्ष्मी नारायण दुबे, राजेश तिवारी, मुन्ना गौतम, नंदलाल वर्मा, अमृत लाल वर्मा आदि समेत किसानों की गेहूं की फसल जलकर राख हो गयी। आगजनी की सूचना मिलते ही लालगंज कोतवाल कमलेश पाल भारी फोर्स के साथ पहुंचे। वहीं डायल एक सौ बारह की भी कई गाड़ियां फोर्स के साथ पहुंची। क्षेत्रीय लेखपाल केडी पाण्डेय ने भी मौके पर पहुंचकर पीड़ित किसानो को क्षतिपूर्ति दिलाये जाने का भरोसा दिलाया। आगजनी से फसल के नुकसान को लेकर गरीब तबके के किसानों के घरो मे कोहराम भी मचा दिखा। पीड़ित किसानों के घरों मे महिलाएं रोती बिलखती देखी गयी।

महिला की पिटाई का आरोप, दी तहरीर

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली के शिवबोझ निवासी राममूर्ति वर्मा पुत्र राममनोहर ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि सोमवार को सुबह दस बजे उसकी पत्नी घर के समीप बाग मे महुआ बिन रही थी। इस बीच गांव के गयादीन के पुत्र छोटे लाल वर्मा तथा छोटेलाल की पत्नी रन्नू लाठी डंडे से लैस होकर उसकी पत्नी की पिटाई करने लगे। आरोप है कि छोटे लाल ने पीड़ित की पत्नी को हंसिया से प्रहार कर चुटहिल कर दिया। इससे पत्नी के सिर मे गंभीर चोटें आ गयी। उलाहना देने पर आरोपियो ने पीड़ित को जानलेवा धमकी दी। पुलिस का कहना है कि शिकायती पत्र की जांच की जा रही है, कार्रवाई की जाएगी।

सत्कर्म से ही होते है नारायण के दर्शनः वेद व्यास भार्गव

संगीतमयी श्रीमदभागवत कथा में जुटी श्रोताओ की भीड़

भागवत कथा कहते वेद व्यास भार्गव मुनीष।

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सत्कर्म से ही मनुष्य को नारायण के दर्शन प्राप्त होते है उक्त बाते आयोध्या से आए वेद व्यास भार्गव मुनीष ने लखनसेन पुर में चल रही सात दिवसीय संगीतमयी भागवत कथा के प्रथन दिन कही। इस दौरान वेद व्यास ने कहा कि नारायण के दर्शन को पाना जितना कठिन है उतना ही आसान भी है। मनुष्य के सत्कर्म से ही उसका भविष्य बनता है।

श्रीमद्भागवत कथा को सुनने के लिए गाँव के अतिरिक्त आसपास-आसपास गाँव के लोगो के श्रद्वालुओं की भीड़ इकट्ठा हो रही। कथा सुनकर आए श्रद्धालु भावविभोर हो रहे हैं। संध्या आरती कीर्तन के बाद आयोजक चन्द्र प्रताप सिह व प्रेमा देवी द्वारा महाप्रसाद का वितरण किया गया। इस दौरान पिंटू सिहं, जसवंत सिंह, सुरेन्द्र सिंह, कुंवर सिंह, राजेश सिंह, रायबहादुर सिंह समेत सैकड़ों की संख्या में आए श्रद्धालु संगीतमयी श्रीमदभागवत कथा के सागर में गोते लगा रहे हैं।

अष्टभुजा देवी प्रांगण में विराजेगे सपरिवार राम, राधा कृष्ण एवं हनुमान

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सदर विकास खंड के ग्राम सभा गोड़े में अष्टभुजा देवी मंदिर प्रांगण में मंदिर को ग्राम वासियों ने पूरी तरह से सजा संवार कर चमका दिया है। 12वीं शताब्दी के बने इस ऐतिहासिक मंदिर प्रांगण में अब श्रद्धालु श्री राम दरबार, राधा कृष्ण एवं हनुमंत लाल का दर्शन कर सकेंगे, क्योंकि ग्राम वासियों के सहयोग से मंदिर परिसर में उक्त सभी देवताओं की प्रतिमा स्थापित किए जाने की तैयारी पूर्ण हो चुकी है। 19 एवं 20 अप्रैल को मूर्ति पूजन के साथ साथ 21 अप्रैल को ग्राम सभा में मूर्तियों की शोभायात्रा निकालकर भ्रमण कराया जाएगा। शोभायात्रा में क्षेत्रीय लोगों की बड़ी संख्या में भागीदारी रहेगी। 21 अप्रैल को मूर्ति स्थापना के साथ ही साथ सायं 6 बजे से महाप्रसाद की तैयारी भी ग्राम वासियों ने की है। वरिष्ठ अधिवक्ता ग्रामवासी विद्या भान सिंह ने बताया कि ग्राम वासियों पर अष्ट भुजा देवी की कृपा बनी रह।

अंतू से जगेसरगंज के बीच शुरू हुआ ट्रैक नवीनीकरण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जगेसरगंज से अंतू के बीच रेल नवीनीकरण का कार्य सोमवार को हुआ। जिसमें वर्षों पुरानी जर्जर 52 केजी की लाइन को बदलकर उसके स्थान पर 60 की नई लाइन बिछाने का कार्य शुरू कर दिया गया है। करीब तीन किलोमीटर तक नई लाइन डाली जायेगी। सोमवार को करीब डेढ़ किलोमीटर तक नई लाइन डाली गई। बता दें कि अंतू से अमेठी के बीच डबलिंग और विद्युतीकरण का कार्य संपन्न हो चुका है। इसके बाद अंतू से प्रतापगढ़ की तरफ होना है। जिसमें अंतू से जगेसरगंज के बीच शुरूआत हो गई है।

खबर संक्षेप

आधा दर्जन घरों में लगी आग तीन झुलसे, लाखों के नुकसान का अनुमान

कौशाम्बी। महेवा घाट थाना क्षेत्र के अलवारा गांव में सोमवार की दोपहर आग लग जाने से आधा दर्जन से अधिक घरों को आग ने अपनी चपेट में ले लिया है अग्निकांड की घटना में 3 लोग झुलस गए हैं जानकारी के मुताबिक टोले पुत्र खुदाई के घर के अंदर से आग लगी जिसके चपेट में भैयालाल पुत्र सवारे छेद्दू पुत्र कुदई लल्लू पुत्र मुन्नू भोला पुत्र कुसुमा पप्पू पुत्र शंकर मान सिंह पुत्र कुवारे मुरली पुत्र कुंवारे सुरेश पुत्र पितांबर राजेश पुत्र रामगजाधर रूपनारायण पुत्र राम गजाधर राम गजाधर पुत्र बचऊ पहलाडी पुत्र बच्चू शिवचरण पुत्र पहलाडी छुटकू पुत्र बच्चू के घरों में गृहस्थी का सामान जलकर खाक हो गया। जिसमें सचिन पुत्र छेद्दू उम्र 5 वर्ष कमरे के अंदर सो रहा था सचिन रामभवन भानू आज इस घटना में झुलस गए हैं जिनका उपचार चल रहा है अग्निकांड की घटना में लगभग छह लाख रुपए से अधिक का नुकसान बताया जाता है।

संदिग्ध परिस्थितियों में दरोगा के इकलौते बेटे की मौत

मृतक के जेब में मिला सुसाइड नोट प्रतीत कर रहा संदिग्धता

अखंड भारत संदेश

भरवारी कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के भरवारी कस्बे में पानी टंकी के पास एक रिटायर्ड दरोगा के इकलौते बेटे की बीती रात संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई है जानकारी मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने युवक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटनाक्रम के मुताबिक आरपीएफ में दरोगा के पद से सेवानिवृत्त हुए दशरथ लाल कोरी की बीते वर्ष मौत हो चुकी है दरोगा के मौत के 6 महीने बाद उनकी पत्नी की भी मौत हो गई है रिटायर्ड दरोगा के 5 बेटी और एक बेटा है चार बेटियों की शादी हो चुकी है एक बेटी और एक बेटा घर पर रहते हैं बीती रात घर पर कुछ लोग रुके थे रात में राहुल उम्र 23 वर्ष की

युवक की मौत के बाद घर पर लगी भीड़

संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई है बताया जाता है कि राहुल ने पलंग के चद्दर से गांठ बांधकर आत्महत्या कर लिया है लेकिन चिकित्सकों की मानें तो आत्महत्या के लिए पलंग की चद्दर की लंबाई छोटी पड़ जाती है मौके पर पहुंची पुलिस को एक सुसाइड नोट मिला है जिसमें राहुल ने लिखा है कि पापा मम्मी बहन को बहुत प्यार करता हूं मैं बेरोजगार हूं अपनी बहन की शादी कैसे करूंगा इसलिए मैं फांसी लगा रहा हूं यह पत्र भी संदिग्धता उत्पन्न कर रहा है सेवानिवृत्त दरोगा का इकलौता पुत्र राहुल करोड़ो की संपत्ति का एकलौता मालिक था और संदिग्ध परिस्थितियों में उसकी मौत ने तमाम सवाल छोड़ दिए हैं जिस पंखे से उसके आत्महत्या किए जाने की बात की जा रही है पंखे का पाइप और उसका पर नहीं टेड़ा हुआ है युवक के झूल जाने के बाद पंखे के पाइप और पर में इतनी ताकत नहीं होती कि वह बिना टेड़ा हुए रह जाए चद्दर की लंबाई आत्महत्या के लिए चिकित्सकों ने कम बताई है कही करोड़ों की संपत्ति का लालच राहुल की मौत का कारण नहीं बना है यह बड़ी जांच का विषय है और पुलिस ने जांच की तो चौंकाने वाले खुलासे होंगे।

जिले के गठन को पूरे हुए 25 वर्ष

कौशाम्बी। इलाहाबाद जिले से अलग कर-के कौशांबी जिले का गठन 4 अप्रैल 1997 को तत्कालीन मुख्यमंत्री मायावती ने किया था जिले के गठन को 25 वर्ष पूरे हो चुके हैं चुनावी वर्षों में जिले के गठन के दिन नेताओं द्वारा वर्षगांठ मनाई जाती है लेकिन विधानसभा चुनाव हो चुका है इसलिए 4 अप्रैल 2022 को जिले के गठन का जन्मदिन मनाने को नेता भूल गए हैं उन्हें जिले के गठन का दिन याद नहीं था जिले के गठन का जन्मदिन बीते वर्षों में डाइट मैदान में नेताओं ने मनाया था लेकिन पूरे दिन डाइट मैदान में इस वर्ष धूल उड़ती रही है 25 वर्ष के दौरान कौशांबी जिले में विकास की पटरी पर जिले का विकास तेजी से दौड़ा है मूलभूत सुविधाओं को सरकारों ने उपलब्ध कराया है हालांकि इन 25 वर्षों के बीच कौशांबी में अपराध अत्याचार भ्रष्टाचार बढ़े हैं जिसका खामियाजा आम जनता भुगत रही है 25 वर्ष के बीच में किसी भी राजनीतिक दल के नेता ने जिले के बेरोजगारों को रोजगार उपलब्ध कराने का प्रयास नहीं किया है हालांकि लोकसभा चुनाव आते ही राजनीतिक दल के नेता बेरोजगारी के मुद्दे पर मुंह चीरकर भाषण देना शुरू कर देंगे जिले में रोजगार के संसाधन ना होने के चलते बेरोजगारों को पंजाब हरियाणा गुजरात अहमदाबाद मुंबई पुणे लुधियाना दिल्ली आदि शहरों में रोजगार की तलाश में जाना पड़ता है।

न्यूज झरोखा

आधी रात को छत से गिरा युवक मौत

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के पंनवारिया माजरा में आधी रात को छत में सो रहे एक युवक को बंदरों ने परेशान किया जिससे बंदरों के भय से भागा युवक दो मंजिल ऊपर छत से गिर गया है जिससे युवक की मौत हो गई है मामले की जानकारी परिजनों को सुबह हुई है सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटनाक्रम के मुताबिक चरवा थाना क्षेत्र के पंनवरिया माजरा में संपत्त पासी के परिजन घर के नीचे के हिस्से में सो रहे थे गर्मी अधिक होने के चलते संपत पासी का बेटा रामबाबू पासी दो मंजिल ऊपर छत पर सोने चला गया और लगभग 4:00 बजे भोर में बंदरों ने रामबाबू पर हमला बोल दिया जिससे रामबाबू जान बचाकर भागा लेकिन इसी बीच वह दो मंजिल ऊपर छत से नीचे गिर गया जिससे मौके पर तड़पकर उसकी मौत हो गई बंदरों के हमला और रामबाबू की मौत की जानकारी से बेखबर परिजन घर पर सोते रहे सुबह 6 बजे के बाद मामले की जानकारी परिजनों को हुई रामबाबू की मौत की जानकारी मिलते ही परिजनों ने मामले की सूचना स्थानीय पुलिस को दी है मौके पर पहुंची पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

जिले के 2 खिलाड़ियों ने प्रदेश में किया नाम रोशन

कौशाम्बी। जिला एवं राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन कानपुर शहर में किया गया था राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में जिले के 2 खिलाड़ियों ने प्रदेश में अपना नाम रोशन किया है जिससे जिला गौरवान्वित हो रहा है आरती कुशवाहा और अमन मौर्या ने राज्यस्तरीय खेलकूद में हिस्सा लिया था राज्य स्तरीय 15000 मीटर पैदल चाल(वाक रेस) में आरती कुशवाहा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया मूल रूप से करारी क्षेत्र के अषाढा निवासी त्रिभुवन लाल कुशवाहा की पुत्री ने जिले का नाम गौरवान्वित किया है वही जुबरा निवासी अमन मौर्य ने जिला स्तरीय खेल 100 मीटर रेस में प्रथम स्थान प्राप्त किया। दोनों प्रतिभागियों ने कौशांबी जनपद का नाम रोशन किया।

कम्पोजिट विद्यालय परसरा में स्कूल चलो रैली का हुआ आयोजन

भरवारी कौशांबी। सरकारी विद्यालयों में छात्रों की संख्या बढ़े अभिभावकों का झुकाव सरकारी विद्यालयों की ओर हो इस उद्देश्य से योगी सरकार ने 1 अप्रैल से 30 अप्रैल तक स्कूल चलो अभियान का आयोजन करने का निर्देश दिया है इसी क्रम में चायल तहसील क्षेत्र के परसरा स्थित कम्पोजिट विद्यालय में प्रधानाध्यापक रवींद्र मिश्र के नेतृत्व में स्कूल चलो अभियान रैली का आयोजन स्कूली छात्राओं द्वारा किया गया है बैंड बाजे के साथ स्कूल चलो अभियान रैली मैं शामिल स्कूली बच्चे नारे लगाते हुए पूरे गांव की गली गली में घूमे लोगों को जागरूक करते हुए रैली का समापन स्कूल परिसर में हुआ रैली समापन के दौरान स्कूली बच्चों अभिभावकों शिक्षकों को विद्यालय की ओर से पूड़ी सब्जी के साथ विभिन्न प्रकार के पकवान खाने के लिए दिए गए हैं। इस दौरान विद्यालय परिसर में नामांकन मेले का भी आयोजन किया गया था और नामांकन मेले में पहुंचे बच्चों को टीका लगाकर शिक्षकों ने उनका सम्मान स्वागत किया है स्कूल चलो रैली अभियान को लेकर विद्यालय परिसर को गुब्बारा एवं झालरों से सजाया गया था रैली के बाद मुख्यमंत्री के लाइव प्रसारण कार्यक्रम को बच्चों अभिभावकों और शिक्षकों ने देखा है। इस दौरान प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष अशोक द्विवेदी प्रधानाचार्य रविन्द्र मिश्रा शिक्षिका नीतू सक्सेना सरिता चौधरी धीरज सिंह दीप्ति यादव विवेक कुमार मिश्रा सहित तमाम लोग मौजूद रहे

डीएम द्वारा वृहद गौ-संरक्षण केन्द्र, कादिराबाद का किया गया निरीक्षण

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार द्वारा वृहद गौ-संरक्षण केन्द्र, कादिराबाद का स्थलीय निरीक्षण किया गया।जिलाधिकारी द्वारा गोवंशों की ईयर टैगिंग एवं चारा की उपलब्धता आदि का सत्यापन किया गया। गौशाला में चारा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध पाया गया। जिलाधिकारी ने खण्ड विकास अधिकारी को गौशाला में और 02 शेड का निर्माण कराने के निर्देश दियें। उन्होंने केयर टेकरों को भी आवश्यक दिशा-निर्देश दियें निरीक्षण के दौरान मुख्य विकास अधिकारी शशिकान्त त्रिपाठी एवं मुख्य पशु चिकित्साधिकारी सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

एडीएम ने छात्र-छात्राओं को किया स्मार्ट फोन का वितरण

कौशाम्बी। मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप अपर जिलाधिकारी जयचन्द्र पाण्डेय द्वारा महामाया राजकीय महाविद्यालय, ओसा में आयोजित स्मार्ट फोन वितरण कार्यक्रम का द्वीप प्रज्ज्वलित कर शुभारम्भ किया गया तथा स्मार्ट फोन वितरण योजना के प्रथम चरण में आज महाविद्यालय के स्नातक अन्तिम वर्ष के 48 छात्र-छात्राओं को स्मार्ट फोन वितरित किया गया।अपर जिलाधिकारी ने छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा युवा तकनीकी सशक्तिकरण हेतु टैबलेट/स्मार्ट फोन छात्र-छात्राओं को दिये जाने का सराहनीय निर्णय लिया गया है। उन्होंने छात्र-छात्राओं से कहा कि आप लोग अपने अध्ययन में इसका सदुपयोग कर लाभ उठायें इस अवसर पर प्राचार्य ने भी छात्र-छात्राओं को सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन स्मार्ट फोन नोडल अधिकारी डॉ0 अजय कुमार द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डॉ0 अरविन्द कुमार, डॉ0 अनिल कुमार, डॉ0 नीलम वाजपेयी, डॉ0 भावना केसरवानी, डॉ0 रीता दयाल, डॉ0 पवन कुमार, डॉ0 रमेश कुमार, डॉ0 संतोष कुमार एंव डॉ0 शैलेश कुमार आदि उपस्थित रहें।

निरोधात्मक कार्यवाही में 18 अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में चलाये जा रहे अभियान में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना करारी से 02 थाना पश्चिम शरीरा से 02 थाना सराय अकिल 12 थाना चरवा 01 थाना कड़ाधाम 01 कुल 18 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय कर दिया है।

वांछित अभियुक्त गिरफ्तार : कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना चरवा पुलिस बल द्वारा गैंगेस्टर एक्ट से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त गोविन्द पुत्र अदालती निवासी पूरापतई थाना मऊ जनपद चित्रकूट को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

साहब ऐसी कूलर में गेट पर मौजूद होमगार्ड को नहीं नसीब छप्पर

अखंड भारत संदेश

तपनभरी दुपहरी में गेट बंद करता होमगार्ड

कौशांबी। भारतीय संविधान में समान नागरिक अधिकार की बात करने वाले अधिकारी और नेता किस कदर से छोटे कर्मचारियों पर जुल्म ज्यादती करते हैं सरकारी कानून में किस तरह से समान नागरिक अधिकार मेबपक्षपात किया जाता है इसका जीता जागता उदाहरण सरकारी कार्यालयों में देखा जा सकता है साहब एसी कूलर में काम करते हैं और गेट पर मौजूद होमगार्ड खुले आसमान के नीचे तपन भरी दुपहरी में ड्यूटी देते रहते हैं तपन भरी धूप के बीच हो या फिर बारिश ठंड का मौसम के बीच हो उन्हें जी हुजूरी करनी पड़ती है धूप में तपते छोटे कर्मचारियों पर आते जाते साहब की नजर भी पड़ती है लेकिन फिर भी साहब का दिल नहीं पसीजता है हम बात कर रहे हैं कौशाम्बी कलेक्ट्रेट कार्यालय का जहां साहब के लिए एसी कूलर की व्यवस्थाएं हैं कर्मचारी भी कमरों के अंदर एसी कूलर में मौज कर रहे हैं बिजली के गुल होते ही जनरेटर चलाए जाते हैं लेकिन कलेक्ट्रेट के गेट पर गेट खोलने और बंद करने के लिए होमगार्ड की ड्यूटी लगाई गई है यह होमगार्ड पूरे दिन तपन भरी दुपहरी में गेट खोलते बंद करते हैं लेकिन किसी ने भी गेट पर मौजूद होमगार्ड को छावनी की व्यवस्था उपलब्ध कराने का प्रयास नहीं किया है क्या यही समान नागरिक अधिकार है।

महिला कोटेदार का पति कार्ड धारकों से कर रहा गाली गलौज

कौशाम्बी। चायल तहसील के ग्रामसभा दुगार्पुर की कोटेदार अर्चना द्विवेदी के पति ओम प्रकाश द्विवेदी राशन वितरण में घाल मेल कर रहा है कार्ड धारकों को उनके अधिकार के सामान ना देने वाला कोटेदार कार्ड धारकों के साथ गाली गलौज अभद्रता करता है मामले की शिकायत कार्ड धारको ने अधिकारियों से की है लेकिन गाली गलौज करने वाले कोटेदार का बाल बांका नहीं हो सका है जबकि कोटा समूह को दिया गया दो महीने से गांव के कार्ड धारकों को रिफाइंड तेल व अन्य राशन नहीं मिला है गांव में दबंग कोटेदार से कार्ड धारक परेशान हैं शिकायत करने पर भी अधिकारी कोई ठोंस कदम नही उठा रहे हैंगांव दुगार्पुर के मजरा सईद पुर निसाद बस्ती गिठुरा के दलित बस्ती के लोगों को रिफाइंड तेल मांगने पर कोटेदार गाली गलौज ओर धमकी देता है कई सत्ता सीन नेताओ की चाटुकारिता में इतना बल है कि शीर्ष नेताओ के मंसूबों पर पलीता लग रहा है।

दहेज हत्या के अभियुक्त को सुनाई गई 14 वर्ष कारावास की सजा

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। अभियुक्त ओमप्रकाश पुत्र कल्लू निवासी अलवारा थाना महेवाघाट को न्यायालय एडीजे एफटीसी प्रथम जनपद कौशाम्बी द्वारा 14 वर्ष सश्रम कारावास तथा 60 हजार रुपए के अर्थ दण्ड से दण्डित किया अर्थ दण्ड न देने पर अतिरिक्त 09 माह कारावास की सजा सुनायी गयी। थाना महेवाघाट पुलिस बल द्वारा शासन की प्राथमिकता के आधार पर गम्भीर एवं जघन्य अपराधों में पैरवी कर अभियुक्त ओमप्रकाश पुत्र कल्लू को सजा दिलाने के क्रम में पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में प्रभावी पैरवी कराते हुए मानिटरिंग सेल के माध्यम से 14 वर्ष सश्रम कारावास तथा 60 हजार रुपए के अर्थ दण्ड से दण्डित किया अर्थ दण्ड न देने पर अतिरिक्त 09 माह कारावास की सजा सुनायी गयी।

अपहरण के अभियुक्त को सुनाई 07 वर्ष कारावास की सजा

कौशाम्बी अभियुक्त अर्जुन उर्फ बड्डी पुत्र श्याम लाल सोनकर निवासी मोगरी कड़ा थाना मोहब्बतपुर पइसा को न्यायालय स्पेशल जज एससी एसटी एक्ट द्वारा 07 वर्ष कारावास तथा 50 हजार रुपए के अर्थ दण्ड से दण्डित किया अर्थ वण्ड न देने पर अतिरिक्त 01 वर्ष कारावास की सजा सुनायी गयी। थाना मोहब्बतपुर पइसा पुलिस बल द्वारा शासन की प्राथमिकता के आधार पर गम्भीर एवं जघन्य अपराधों में पैरवी कर अभियुक्त अर्जुन को सजा दिलाने के क्रम में पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में प्रभावी पैरवी कराते हुए मानिटरिंग सेल के माध्यम से 07 वर्ष कारावास तथा 50 हजार रुपए के अर्थ दण्ड से दण्डित किया अर्थ दण्ड न देने पर अतिरिक्त 01 वर्ष कारावास की सजा सुनायी गयी।

जनपद में सांसद द्वारा स्कूल चलो अभियान का किया गया शुभारम्भ

अखंड भारत संदेश

छात्रों को टीका लगाते सांसद साथ में खड़े डीएम

कौशाम्बी। मुख्यमंत्री द्वारा जनपद श्रावस्ती से ब्लूस्कूल चलो अभियानद्ध का शुभारम्भ किया गया, जिसका सजीव प्रसारण जनपद के सभी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में किया गया तथा विद्यालयों के छात्र-छात्राओं सहित अन्य गणमान्य लोगों ने मुख्यमंत्री के उद्बोधन को सुना सांसद एवं जिलाधिकारी द्वारा जनपद स्तर पर उच्च प्राथमिक विद्यालय, कादीपुर में आयोजित ब्लूस्कूल चलो अभियानद्ध कार्यक्रम का द्वीप प्रज्ज्वलित कर शुभारम्भ किया गया तथा नवप्रवेशी बच्चों को रोली, चन्दन लगाकर एवं मिठाई खिलाकर स्वागत किया गया सांसद द्वारा नवप्रवेशित छात्र-छात्राओं को स्कूल बैग आदि भी वितरित किया गया। सांसद द्वारा विद्यालय के वार्षिक परीक्षा सत्र 2021-22 में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले मेधावी बच्चों को सम्मानित किया गया तथा विद्यालयों में अधिकतम नामांकन वृद्धि करने वाले अध्यापकों एवं एस0एम0सी0 अध्यक्ष एंव सदस्यां को भी सम्मानित किया गया। तत्पश्चात सांसद, जिलाधिकारी एवं मुख्य विकास अधिकारी ने छात्र-छात्राओं के साथ मिड्-डे-मील भोजन किया कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए सांसद ने बच्चों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनायें देते हुए कहा कि आज बहुत ही गौरव का क्षण है। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में पूरे प्रदेश में ब्लूस्कूल चलो अभियानद्ध का शुभारम्भ हुआ है। उन्होंने कहा कि किसी कार्य को करने के लिए अगर सभी द्वारा सामूहिक सहयोग एवं प्रयास किया जाता है तो वह कार्य अवश्य ही फलीभूत होता है। उन्होंने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप ऑपरेशन कायाकल्प के तहत प्रदेश के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आधार-भूत सुविधाओं से सम्बन्धित प्रशंसनीय कार्य किये जा रहे हैं, इसके लिए उन्होंने मुख्यमंत्री को धन्यवाद भी दिया। उन्होंने अध्यापकों से अपेक्षा की इन्हीं बच्चों में से कोई डॉक्टर, इंजीनियर, आई0ए0एस0 आदि बनकर देश व समाज के विकास में अपना अहम योगदान करेंगे। उन्होंने समाज के लोगां, अध्यापकों एंव माता-पिता से अपेक्षा की कि वे अपने बच्चों को नशा न करने के प्रति जागरूक करें तथा यह संकल्प लेकर जायें कि हम स्वयं नशा नहीं करेंगे तथा न ही बच्चों से नशा का सामान लाने का कार्य करायेंगे। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा आज जनपद श्रावस्ती से स्कूल चलो अभियान का शुभारम्भ किया गया। उन्होंने कहा कि जनपद कौशाम्बी में शिक्षा के स्तर में सुधार हेतु निरन्तर प्रयास किया जा रहा है तथा शासन द्वारा शिक्षा से सम्बन्धित संचालित योजनाओं को जमीनी स्तर पर उतारने का भी प्रयास किया जा रहा है।

8 महीने से सड़क पर बह रहे सीवर के पानी से पीड़ित नगर वासियों का फूटा आक्रोश

ठेकेदार ने लगाए नगरपालिका के अधिकारियों पर 40% कमीशन खोरी का आरोप

अखंड भारत संदेश

नगरपालिका के खिलाफ आक्रोशित नगरवासी

कौशांबी। जनपद मुख्यालय मंझनपुर नगर पालिका क्षेत्र में सड़क चौड़ीकरण अतिक्रमण हटाओ नाला निर्माण के नाम पर कस्बे को नर्क बना दिया गया है पूरे कस्बे में सीवर और नाला का पानी बीते 8 महीनों से सड़कों पर बह रहा है जिससे नगर वासियों को निकलने में दिक्कतें होती हैं कई बार नगर वासियों ने अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराया लेकिन सड़क पर नाला और सीवर का बह रहा पानी नहीं बंद हो सका सोमवार को नगर के दर्जनों लोगों ने नगर पालिका प्रशासन से मुलाकात कर नगर की दुर्दशा की चर्चा की इस दौरान नगर वासियों ने विकास कार्यों के निर्माण में धांधली का भी आरोप लगाया इस पर मौके पर मौजूद ठेकेदार ने स्पष्ट शब्दों में अधिशासी अधिकारी नगर पालिका पर 40% कमीशन खोरी का आरोप लगाते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा है कि अधिकारी कमीशन खाते हैं इसलिए मानक के अनुसार कार्य नहीं हो पाएगा ठेकेदार के कमीशन खोरी के आरोप के बाद नगरवासी असमंजस में पड़ गए हैं इसके पहले भी अधिशासी अधिकारी की शिकायतें हो चुकी है लेकिन 40% कमीशन खाने वाले अधिशासी अधिकारी पर कार्यवाही नहीं हो सकी है जिससे अधिकारियों के हिस्से बंटवारे में ऊपर तक शामिल होने की आशंका जताई जाती है नगर पालिका प्रशासन के पास पहुंचे लोगों ने कहा कि रमजान और नवरात्रि का पर्व चल रहा है और सीवर नाला के सड़को पर बह रहे पानी से होकर लोगों को गुजारना पड़ता है तत्काल नाला और सीवर के सड़क पर बह रहे पानी को बंद कराया जाए इस दौरान भाजपा नेता दुर्गेश गुप्ता अंशुल केशरवानी पूर्व सभासद अनिल कुमार केसरवानी रिंकू सभासद सुमित केसरवानी अभिषेक मोदनवाल गोपी मोदनवाल लाला भाई सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

बसपा की करारी पराजय के लिए मुख्य सेक्टर प्रभारी जिम्मेदार

अखंड भारत संदेश

मण्डलीय समीक्षा बैठक में बसपाई कार्यकताओं का फूटा गुस्सा, मुख्य सेक्टर प्रभारी के आवासीय बूथ संख्या 186 से बसपा प्रत्याशी को मिले मात्र तीन वोट

कौशाम्बी। बहुजन समाज पार्टी को 2022 के विधानसभा चुनाव में मिली करारी हार के कारणों को जानने के लिए बसपा प्रमुख मायावती के निर्देश पर मण्डलीय स्तर पर मंथन शुरू हो गया है। इसी क्रम में जनपद कौशाम्बी के ओसा चौराहा स्थित बसपा कार्यालय पर सम्पन्न मण्डलीय समीक्षा बैठक में जमकर कार्यकताओं ने हंगामा करते हुए समीक्षा बैठक लेने आये वरिष्ठ नेताओं व जिम्मेदार पदाधिकारियों के सामने बसपा कार्यकताओं ने मण्डल के मुख्य सेक्टर प्रभारियों की जमकर न केवल आलोचना की अपितु कई ऐसे तार्किक सवाल खड़े किए जिसका जबाब कार्यकताओं को नही मिला और मौन होकर सभी जिम्मेदार पदाधिकारी शब्दवाणों को झेलते रहे। खुले मंच से बसपा कार्यकताओं ने कौशाम्बी निवासी एक मुख्य सेक्टर प्रभारी जिनका आवास बूथ संख्या 186 में पड़ता है बसपा प्रत्याशी को उस बूथ से मात्र 03 वोट मिले जबकि मुख्य सेक्टर प्रभारी के घर मे ही छः वोट है। बसपा कार्यकताओं ने आरोप लगाया कि पार्टी के जिम्मेदार पदाधिकारी बसपा प्रमुख व बहुजन समाज पार्टी को धोखा दे रहे है। बसपा के एक कार्यकर्ता का कहना है कि सन 2021 मे मेन्टीनेन्स के नाम पर कार्यकताओं ने कौशाम्बी जनपद से पार्टी प्रदेश कार्यालय में जो धनराशि दी गयी उस धनराशि का मात्र 35 प्रतिशत ही जमा किया गया। बसपा प्रमुख मायावती के दिशा-निदेर्शों से हटकर मुख्य सेक्टर प्रभारी अपने निजी स्वार्थ में संगठन का इस्तेमाल कर रहे है। बसपा के समर्पित कार्यकर्ता हासिये पर है पार्टी कार्यकताओं ने मण्डलीय समीक्षा बैठक में जमकर भड़ास निकाल कर अपने आक्रोश व्यक्त किये। बसपा कार्यकर्ता व पूर्व पदाधिकारी सुनील सिंह पटेल का कहना है कि एक मुख्य सेक्टर प्रभारी जो पूर्व मे बहन जी का पुतला जलाये थें उन्हें पार्टी का जिम्मेदार पदाधिकारी बनाना कहा तक उचित है। मण्डलीय समीक्षा करने आये पार्टी नेताओं से मांग रखी गयी कि जो मुद्दे समीक्षा बैठक में उठाये गए है उन्हें बहनजी के संज्ञान में अवश्य लाया जाए अन्यथा जरूरत पड़ी तो कौशाम्बी से बसपा के समर्पित कार्यकर्ता बसपा प्रमुख से मिलकर अपनी बात रखने को मजबूर होंगे।

अज्ञात वाहन की टक्कर से वृद्ध महिला गंभीर घायल

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के नगर पंचायत अझुवा राष्ट्रीय राजमार्ग पर डिवाइडर के पास वृद्ध महिला को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी जिससे महिला गम्भीर घायल हो गयी। किराना के व्यापारी सुभाष साहू वार्ड नं 12 नयानगर में स्थायी तौर पर निवास करते हैं आज सोमवार सुबह उनकी माँ कुसुमा देवी उम्र लगभग 65 वर्ष पत्नी गुरुशरण साहू फूल तोड़कर घर वापस आ रही थी राष्ट्रीय राजमार्ग डिवाडर टायर रिपेयरिंग दुकान के पास अज्ञात वाहन ने कुसमा देवी को टक्कर मार दी जिस पर उन्हें शरीर सहित सिर में गम्भीर चोट लग गयी परिजनों ने स्थानीय अस्पताल में दिखाया जहाँ डॉक्टरों ने बड़े अस्पताल को रिफर कर दिया उनके पुत्र किराना व्यापारी सुभाष साहू ने बताया कि उनकी माता जी की स्थिति गंभीर बनी हुई है कानपुर के अस्पताल में भर्ती है।

आधी रात को दो महिलाओं को घर से उठा लाई पुलिस

अखंड भारत संदेश

कोशांबी। शाम को सूरज ढलने के बाद महिलाओं की गिरफ्तारी पर सुप्रीम कोर्ट ने भी रोक लगाई है मानवाधिकार आयोग ने भी आधी रात को महिलाओं की गिरफ्तारी पर पूरी तरह से रोक लगाने के निर्देश दिए हैं आधी रात को महिलाओं की गिरफ्तारी करने के मामले में महिला आयोग ने भी कड़े रुख अख्तियार किए हैं पुलिस मैनुअल में भी आधी रात को महिलाओं की गिरफ्तारी पर रोक लगाई गई है मीटिंग और कार्यक्रम के माध्यम से महिलाओं की गिरफ्तारी के मामले में बार-बार पुलिस अधिकारी कानून का पाठ पढ़ाने की बात कर रहे हैं एक तरफ उत्तर प्रदेश की योगी सरकार महिलाओं के सुरक्षा को लेकर तमाम कानून नियम निर्देश अधिकारियों को भेज रहे हैं आए दिन जिला प्रोबेशन कार्यालय द्वारा महिलाओं की सुरक्षा और उनकी जागरूकता को लेकर कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं महिलाओं की सुरक्षा और जागरुकता को लेकर कार्यक्रमों के शुरूआत में आला अधिकारी फोटो खिंचवा कर महिला कार्यक्रमों का शुभारंभ कर रहे हैं।

महिला सहायता केंद्र भी स्थापित किए गए हैं लेकिन उसके बाद भी जिले की महिलाओं को उनका अधिकार और सम्मान नहीं मिल रहा है महिलाएं सुरक्षित नहीं है महिलाओं को सुरक्षित करने की बात करने वाले अधिकारी उनके अधिकारों के प्रति गंभीर नहीं दिखाई पड़ रहे हैं जनता की सुरक्षा करने का जिसे जिम्मा मिला है वही कानून की धज्जियां उड़ाने पर लगा हुआ है आखिर कैसे जमीनी हकीकत में महिला कानून का पालन होगा संविधान की शपथ लेकर कानून की रक्षा का वचन देकर वर्दी पहनने वाले थानेदार जब कानून की धज्जियां उड़ा देंगे और कानून की धज्जियां उड़ाने वालों पर कार्यवाही करने में जांच के नाम पर मामले को लटकाया जाएगा तो कैसे कानून का राज स्थापित होगा यह व्यवस्था पर बड़ा सवाल है। महेवाघाट थानेदार सशस्त्र पुलिस जवानों और उप निरीक्षकों के साथ बीती रात थाना क्षेत्र के दलेला गंज मवई गांव पहुंचे और आधी रात को गांव से सिया दुलारी और रानी देवी दो महिलाओं को महेवाघाट की पुलिस जबरिया अपने साथ उठा लाई आधी रात को पुलिस टीम के साथ महिला पुलिसकर्मी भी मौजूद नहीं थी कानून की बात करने वाली थाना पुलिस किस तरह के कानून की धज्जियां उड़ाते हैं इसको देखने वाले पुलिस अधिकारी पुलिस कर्मियों की गलतियों को नजरअंदाज करते हैं मामले की शिकायत महिलाओं के परिजनों ने सोमवार की दोपहर पुलिस अधीक्षक से की लेकिन उसके बाद भी महिलाओं को थानेदार ने अपने हिरासत से नहीं छोड़ा है महिलाओं के विरुद्ध किसी प्रकार का मुकदमा नहीं दर्ज है उनके खिलाफ थानेदार को किसी ने शिकायती पत्र भी नहीं दिया है लेकिन फिर भी दो महिलाओं को आधी रात को कानून नियम की धज्जियां उड़ा कर उठा ले जाने वाले थानेदार पर खबर लिखे जाने तक कार्यवाही नहीं हो सकी है क्या यही योगीराज की कानून व्यवस्था है।

मुकदमा वापस लेने का दबाव बनाने के लिए दलितों पर हमला

कौशांबी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के नारा पुलिस चौकी अंतर्गत चक गांव में राजेश कुमार सोनकर की माता के ऊपर पड़ोसी की चार पहिया गाड़ी चढ़ जाने से महिला की मौत हो गई थी पुलिस ने मामले में मुकदमा दर्ज कर लिया है पुलिस का कहना है कि चालक को मुचलके पर जमानत दे दी गई है वाहन स्वामियों द्वारा दुर्घटना के मुकदमे को वापस लेने का दबाव बनाने के मकसद से मृतक महिला के परिजनों के ऊपर झूठी कहानी गढ़ कर अदालत से मुकदमा दर्ज कराने का प्रयास किया जा रहा है इस मामले में चौकी इंचार्ज नारा की साजिश की बू आ रही है बीती रात वाहन स्वामी के परिवार के आठ 10 लोग मृतक महिला के पति और बेटे को रात 11:00 बजे के घेर लिए और उनके साथ मारपीट की आरोप है कि हमलावरों का कहना है कि दुर्घटना के मुकदमे में समझौता कर लो मुकदमा वापस ले लो नहीं तुम्हारी हत्या कर दी जाएगी बताते चलें कि मृतक महिला के पति और बेटे बाग की रखवाली करते हैं जिससे वह रात में घर के बाहर थे हमले में राजेश सोनकर के हाथ में गंभीर चोट के निशान हैं मामले की शिकायत मंझनपुर कोतवाली पुलिस से की गई है पुलिस ने आरोपी को भी थाने बुलाया है देर शाम तक मामले में मुकदमा नहीं दर्ज हो सका है।

संपादकीय

महाराष्ट्र कांग्रेस की लड़ाई उभरकर सामने आई

महाराष्ट्र कांग्रेस के आपस के झगड़े लगातार बढ़ते जा रहे हैं और डर यही है कि कही पंजाब की तरह यहां भी नेताओं के आपसी अहं का टकराव और लड़ाई इतनी नहीं बढ़ जाये कि राज्य में भी कांग्रेस पूरी तरह खत्म हो जाये। पहले ही कांग्रेस राज्य में चौथे नंबर की पार्टी बन गयी है औ? उसके पास केवल 42 बयालीस ही विधानसभा के सदस्य बचे हैं। उनमें से भी कई बीजेपी जाने को बेकरार है बस सत्ता के कारण टिके हुये हैं। हमें मिली जानकारी के अनुसार महाराष्ट्र में बीजेपी ने एक सर्वे कराया है जिसमें बताया गया है कि अगर अभी चुनाव होतें हैं तो सबके कमजोर कड़ी कांग्रेस ही साबित होगी और कांग्रेस के विधायकों की संख्या 28 तक हो सकती है इसलिए बीजेपी ने अपनी रणनीती बना ली है पहली तो ये कि वो एक तरफ एनसीपी और शिवसेना के नेताओं और मंत्रियों पर हमले करके उनको संभलने का मौका नहीं देगी दूसरी तरफ वो कांग्रेस के विधायकों को पहले तोड़ने और फिर उनको चुनाव में हराने की कोशिश करेगी। असल में बीजेपी को उम्मीद है कि वो कांग्रेस को सीधी टक्कर में हरा सकती है क्योंकि कांग्रेस के नेता आपस में ही उलझे हुये हैं. यही रणनीति वो बीएमसी के चुनाव में भी करने वाली है। बीएमसी में भी अभी कांग्रेस के 28 नगर सेवक ही जिनकी सीटों पर बीजेपी सीधे जीतकर अपनी संख्या इतनी बढ़ाना चाहती है कि बीएमसी पर उसका कब्जा हो जाये इसलिए उसने कांग्रेस के कृपाशंकर सिंह से लेकर राजहंस सिंह तक सभी उत्तर भारतीयों को तोड़ लिया है। महाराष्ट्र में असल में बीजेपी को लगता है कि अगर अभी चुनाव हुये तो शिवसेना कम से कम 55 और एनसीपी 53 सीट जीत सकती है जबकि कांग्रेस ही इकलौती पार्टी है जो सबसे कमजोर है। असल में कांग्रेस के पिछले चुनाव में सबसे ज्यादा सदस्य विदर्भ से ही चुनकर आये थे और वहां पर उसकी सीधी टक्कर बीजेपी से ही है। इस बार मजेदार बात ये है कि बीजेपी के देवेन्द्र फणनवीस और कांग्रेस के नाना पटोले दोनों ही विदर्भ के है और दोनों पहले एक ही पार्टी में काम कर चुके है। नाना पटोले भी सिद्धू की तरह ही कई पार्टियों में और आखिर में बीजेपी में थे और बाद में कांग्रेस में आकर पार्टी अध्यक्ष तक पहुंचे। उनकी स्टाइल भी सिद्धू की तरह है जहां वो खुद ही अपने गठबंधन की सरकार और कांग्रेस के ही मंत्रियों के कामकाज पर सवाल उठाते रहते हैं.नाना की तो विदर्भ से मंत्री विजय वडेटटीवार , नितिन राउत , सुनील केदार औ? यशोमती ठाकुर किसी से नहीं बनती। असल मे नाना पाटोले को जब विधानसभा अध्यक्ष बनाया गया तो उनका कद बढ़ गया था औ? उनको मुख्यमंत्री या कांग्रेस के चेहरे के तौर पर माना जाने लगा लेकिन उसके बाद नाना ने पार्टी प्रेसीडेंट बनने के लिए सिद्धू की तरह ही इस्तीफा दे दिया . कुछ दिन बाद नाना को समझ में आया कि पार्टी अध्यक्ष के साथ साथ ठसक के लिए मंत्री पद भी चाहिये अब नाना कई महीनों से कोशिश कर रहे है लेकिन आलाकमान और महाराष्ट्र कांग्रेस के उनके ही साथी मंत्री नहीं बनने दे रहे है। उधर बीजेपी ने राज्यपाल के सहारे विधानसभा का अध्यक्ष पद भी एक साल से खाली रखा है। ऐसे में नाना की हताशा बढ़ती जा रही है। उन्होनें कांग्रेस के लगभग सारे बड़े नेताओं से दुश्मनी मोल ले रखी है यही वजह है कि आलाकमान कुछ भी कहे महाराष्ट्र में कांग्रेस का कोई बड़ा आंदोलन खड़ा ही नहीं हो पा रहा है यहां तक कि डिजिटल मेंबरशिप भी बुरी तरह नाकाम रही।

सरकार धनी किसानों पर टैक्स लगाएं

आशीष वशिष्ठ

केलकर समिति ने भी 2002 में कहा था कि देश में 95 फीसदी किसानों की इतनी कमाई नहीं होती कि वो टैक्स के दायरे में आएं। मतलब साफ है कि पांच फीसदी किसानों को टैक्स के दायरे में लाया जा सकता है। खेती से होने वाली आय पर टैक्स नहीं लगने से इसका फायदा उन बड़े किसानों के पहुंचता है जो संपन्न हैं या फिर उन बड़ी कंपनियों को जो इस सेक्टर में लगी हैं।

सरकार की नीतियों में विरोधाभास है। टैक्स से छूट के दायरे में खेतिहर जमीन से मिलने वाला किराया, फसल बेचने से होने वाली कमाई, नर्सरी में उगाए जाने वाले पौधे से होने वाली आय, कुछ शर्तों के साथ फार्महाउस से होने वाली कमाई इत्यादि आती हैं

पिछले कई दशकों से इस बात पर चर्चा होती रही है कि अमीर किसानों को भी आयकर के दायरे में लाया जाए। लेकिन तमाम विचार-विमर्श और चिंतन-मंथन के बाद भी कोई सरकार धनी किसानों पर टैक्स लगाने की हिम्मत नहीं जुटा पाई। भारतीय राजनीति में शुरू से ही किसानों की गरीबी का भरपूर फायदा उठाया गया है। देश के राजनीतिज्ञों ने किसानों और गरीबों को एक दूसरे का पर्यायवाची बनाकर पेश करने की कोशिश की। एक किसान गरीब ही होगा लोगों के बीच इस मानसिकता को जान-बूझकर बढ़ावा दिया गया। अमीर किसानों की आय पर टैक्स लगाने की बात हर सरकार में की गयी, लेकिन आज तक यह फैसला नहीं लिया गया क्योंकि सभी को अपना वोट बैंक खोने का डर है। जमीनी हकीकत यह है कि हरित क्रांति आने के 5 दशक होने को हैं, जिसके दौरान हमने किसानों की आय को कई गुना बढ़ते देखा है। हालांकि, आज भी इनकम टैक्स एक्ट के मुताबिक कृषि से होने वाली आय पर भारत में टैक्स नहीं लगता। देश के गरीब किसानों का समझ में आता है, लेकिन यह बात समझ से परे है कि अमीर किसानों की आय पर टैक्स क्यों नहीं लगाया जाता है। क्या अमीर किसान इस देश के नागरिक नहीं है? अमीर किसानों की आय पर कर तो छोड़िए, सरकार उल्टा इन्हें बाकी किसानों के साथ ही भारी-भरकम सब्सिडी प्रदान करती है। अब समय आ गया है कि आय कर के नियमों में बदलाव करके अमीर किसानों की आय पर भी कर लगाने का प्रावधान जोड़ा जाये। अगर यह कहा जाए कि 130 करोड़ की आबादी वाला यह देश सिर्फ साढ़े चार करोड़ लोगों के टैक्स के पैसों से चलता है, तो हैरान न हों। इसमें भी डेढ़ करोड़ करदाता ऐसे हैं, जिनका योगदान नाम भर का है। यानी व्यावहारिक तौर पर देश की कुल आबादी के तीन प्रतिशत से भी कम लोग आयकर देते हैं। कृषि से होने वाली आय पर कर ना लगने से अमीर किसान तो अपना कर बचाते ही हैं, साथ ही इस प्रावधान की वजह से भारत के आयकर इकट्ठा करने की प्रणाली में एक बड़ा ब्लैक होल बन चुका है। हाल के किसान आंदोलन में हमने हरियाणा, पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों को नजदीक से देखा। महंगे कपड़े, स्पोर्ट्स शूज और बड़ी-बड़ी गाड़ियां, बड़े ट्रैक्टर सभी कुछ थे उनके पास। फिर भी उनमें से एक भी

किसान आयकर नहीं देता। कई ऐसे किसान मिल जाएंगे, जिनके पास सैकड़ों एकड़ जमीन है और वे कर देने के बजाय सरकार से ही वसूली कर रहे हैं, चाहे वह एमएसपी में बढ़ोतरी हो या उर्वरकों की कीमतों में सब्सिडी या फिर कम दाम पर या मुफ्त में बिजली। छोटे व्यवसायी इस समय कोरोना महामारी के कारण मार खा बैठे हैं। लेकिन इसके पहले उन्होंने काफी कमाया। वर्ष 2017 में नीति आयोग के सदस्य बिबेक देबरॉय ने सुझाव दिया था कि, एक सीमा के बाद कृषि से होने वाली आय पर भी कर लगाया जाना चाहिए। बिबेक देबरॉय ने इशारा किया था कि कई राज्यों में पहले कृषि आय पर टैक्स लगाने का प्रावधान था। बिहार (1938), असम (1939), पश्चिम बंगाल (1944), ओडिशा (1948), उत्तर प्रदेश (1948), हैदराबाद (1950), त्रावणकोर और कोचीन (1951) एवं मद्रास और ओल्ड मैसूर (1955) में कृषि आय पर कर का कानून था। कुछ राज्यों में अब भी यह मौजूद है। मुख्य आर्थिक सलाहकार अरविंद सुब्रमण्यन ने भी देबरॉय की बातों से सहमति जताई थी। लेकिन सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों से इस पर तीखी प्रतिक्रिया देखने को मिली थी। टैक्स एडमिनिस्ट्रेशन रिफॉर्म कमीशन ने साल 2014 में ही कहा था कि दूसरे पेशे के लोग कृषि आय के नाम पर टैक्स छूट की रकम हर साल बढ़ा रहे हैं। यह वास्तव में टैक्स छूट पाने का एक बेहतरीन जरिया बन गया है। सीएजी की रिपोर्ट में भी इस बात पर चिंता जताई गयी है। टैक्स एडमिनिस्ट्रेशन रिफॉर्म कमीशन ने सुझाव दिया था कि जिन किसानों की कृषि आय 50 लाख रुपये से अधिक हो, उनसे इनकम टैक्स लिया जाना चाहिए। जिन किसानों के पास चार हेक्टेयर से अधिक जमीन है, देश में उनकी आबादी कुल किसानों का सिर्फ चार फीसदी है, लेकिन उनकी कुल कृषि आय किसानों की कुल आमदनी का 20 फीसदी है। ब्रिटिश राज के दौरान 1925 में भारतीय कराधान जांच समिति ने कहा था कि कृषि से होने वाली आय पर टैक्स छूट का कोई ऐतिहासिक या सैद्धांतिक कारण नहीं है। केवल प्रशासनिक और राजनीतिक कारणों से कृषि को टैक्स से दूर रखा गया है। आज की तारीख में भी ये दोनों बातें अमूमन सही हैं। देश की आजादी के बाद पहली बार साल 1972 में बनाई गई केएन राज समिति ने भी कृषि पर टैक्स की सिफारिश नहीं की। यहां तक कि केलकर समिति ने भी 2002 में कहा था कि देश में 95 फीसदी किसानों की इतनी कमाई नहीं होती कि वो टैक्स के दायरे में आएं। मतलब साफ है कि पांच फीसदी किसानों को टैक्स के दायरे में लाया जा सकता है। खेती से होने वाली आय पर टैक्स नहीं लगने से इसका फायदा उन बड़े किसानों के पहुंचता है जो संपन्न हैं या फिर उन बड़ी कंपनियों को जो इस सेक्टर में लगी हैं। सरकार की नीतियों में विरोधाभास है। टैक्स से छूट के दायरे में खेतिहर जमीन से मिलने वाला किराया, फसल बेचने से होने वाली कमाई, नर्सरी में उगाए जाने वाले पौधे से होने वाली आय, कुछ शर्तों के साथ फार्महाउस से होने वाली कमाई इत्यादि आती हैं। लेकिन कृषि पर होने वाली आय को दिखा कर बड़ी कंपनियां बहुत बड़ी रकम पर टैक्स से छूट पा लेती हैं। 2014-15 में कावेरी सीड्स ने कृषि से 186.63 करोड़ रुपए की आय दशार्या था। वहीं मॉन्सांटो जैसी अमरीकी कंपनी ने 94.4 करोड़ कृषि से आय दिखाया था।

तीन नये कृषि कानूनों की वापसी के बाद किसान नेता एमएसपी के गारंटी कानून पर आमादा हैं, तो देशहित में एक विनम्र सुझाव है कि जिन किसानों के पास 2-3 हेक्टेयर से अधिक खेती-योग्य जमीन है और सालाना आमदनी 10-15 लाख रुपए से अधिक है, तो वे किसान आम करदाता की तरह आयकर दें। वे आयकर रिटर्न भी दाखिल करें। एक रिपोर्ट के मुताबिक देश में करीब 86 फीसदी किसानों के पास औसतन 2 हेक्टेयर या उससे भी कम जमीन है। वे गरीब हैं, लेकिन जो बड़े जमींदार हैं, जिनके पेट्रोल पंप भी चलते हैं और जो चमचमाती कारों में सवार रहते हैं, उन्हें आयकर में छूट क्यों दी जाए? प्रश्न यह भी है कि जब सरकार ने आयकर-छूट की नीति बनाई थी, तब आर्थिक स्थितियां कुछ और होंगी, लेकिन अब तो आर्थिक उदारीकरण का दौर है। बड़े किसान आयकर क्यों न दें? उन्हें सबसिडी क्यों दी जाती रहे? यदि एमएसपी की गारंटी देनी है, तो सभी 265 फसलों पर दी जानी चाहिए। फिलहाल सरकार और उसका आयोग सिर्फ 23 फसलों पर ही एमएसपी की घोषणा करते हैं। दूध, मक्खन, मछली, अंडा आदि मुहैया कराने और पशुपालन, मछलीपालन, मुर्गीखाना चलाने वालों को भी एमएसपी क्यों न दिया जाए? देश के प्रतिष्ठित कृषि विशेषज्ञ स्वामीनाथन ने अपनी रपट में अनुशंसा की थी कि गेहूं और धान पर एमएसपी देना बंद करें। उसके बजाय विविध फसलों पर एमएसपी तय किया जाए। जहां तक एमएसपी का सवाल है, चरण सिंह, देवीलाल और महेंद्र सिंह टिकैत भी इसे कानूनी दर्जा नहीं दिला पाए। मौजूदा दौर में यह और भी पेचीदा है, क्योंकि सभी राज्य सरकारों की सहमति भी अनिवार्य है।

पंजाब, हरियाणा और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में कुछ किसान बहुत अमीर हैं। कईयों के पास सौ-सौ एकड़ जमीन है और वे असल में करोड़पति हैं, लेकिन बाकी सभी राज्यों में हमें गरीब किसान देखने को मिलते हैं। गरीब किसानों के भले के लिए अमीर किसानों पर आयकर लगाया जाना ही चाहिए।

रातों-रात स्टारडम की चाहत वाले टिक नहीं पाते

नए सिंगर रातों-रात स्टार बनने की कोशिश करते हैं, इसलिए लंबा नहीं चल पाते। बिना स्ट्रगल किए और बिना किसी गुरु से काम सीखे जो कलाकार थोड़े ही समय में फटाफट सब कुछ पाना चाहते हैं वे कामयाब नहीं हो पाते हैं। टिकाऊ सफलता के लिए कड़ी मेहनत, धैर्य, अनुभव और काबिलियत की जरूरत होती है। यह बात बॉलीवुड के प्रसिद्ध सिंगर मीका सिंह ने कही। उन्होंने कहा, "मैंने 75 रुपए मेहनताने से काम शुरू किया था और दलेर मेहंदी जैसे कई बड़े गायकों का असिस्टेंट बनकर इंडस्ट्री की बारीकियां सीखीं। पहला गाना आया तो मुझे 1000 रुपए मिले थे। पूरा स्ट्रगल करके, समय के साथ आगे बढ़ते हुए आज एक स्टार का दर्जा मुझे हासिल हुआ है, जबकि नए कलाकार इस मुकाम पर रातों-रात पहुंचना चाहते हैं। किसी सिंगर का एक गाना हिट हो जाता है तो वह खुद को कामयाब समझने लगता है, जबकि एक हिट गीत के बलबूते ढाई-तीन घंटे का स्टेज शो नहीं किया जा सकता। आज मेरे खुद के इतने सारे हिट गाने हैं कि अपने ही गाने गाकर मैं तीन घंटे का शो पूरा कर देता हूं। उन्होंने कहा कि उनके कई गाने पिछले एक दशक से लगातार हिट चले आ रहे हैं और लोग आज भी सब गानों को एंजॉय करते हैं।"

इसमें कोई दो राय नहीं कि परमानेंट कामयाबी रातोंरात नहीं मिलती है। रातोंरात कोई व्यक्ति प्रसिद्धि तो पा सकता है, क्योंकि यह सोशल मीडिया का जमाना है, परंतु ऐसी कामयाबी नहीं पा सकता कि लोग उसे सालों साल याद रख सकें। उसके लिए तो प्रतिभा, परिश्रम और अनुभव की गलियों से गुजरना होता है। इन्हीं खासियतों की वजह से मीका सिंह आज सिंगिंग के मामले में बॉलीवुड के किंग कहलाते हैं। वह एक जबर्दस्त परफॉर्मर हैं। मीका सिंह का एक रीएलिटी शो झ स्वयंवर, मीका दी वोटी अगले महीने से स्टार भारत टीवी चैनल पर शुरू होने जा रहा है, जिसमें मीका अपने लिए एक उपयुक्त जीवनसाथी का चुनाव करेंगे। यह एक म्यूजिकल शो होगा, जिसमें करीब 30 युवतियां हिस्सा लेंगी। शो के बारे में उन्होंने कहा, "मैं शादी के लिए खुद को तैयार करने के लिए सब कुछ कर रहा हूं क्योंकि मुझे अच्छा दिखना है। मैंने अपनी खुराक कम कर दी है। मैं जीवन के इस नए चैप्टर को लेकर रोमांचित हूं। मैं एक ऐसी जीवनसाथी की तलाश में हूं जो मुझे समझ सके, मेरे परिवार को खुश रख सके और सबको साथ लेकर चल सके। उन्होंने कहा कि उनका परिवार बस यही चाहता है कि वह अब वैवाहिक जीवन में भी सेटल हो जाएं। उन्हें और कोई उम्मीद नहीं है। "मुझे एक ऐसा साथी चाहिए जो मेरे काम के नेचर को समझ सके, क्योंकि मैं यात्रा बहुत करता हूं, सिंगर ने कहा। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान को शुभकामनाएं देते हुए मीका सिंह ने कहा कि नशा और अपराध बढ़ाने वाले गानों पर रोक लगाने का सरकार का फैसला उचित है। उन्होंने कहा कि उन्होंने भगवंत मान के साथ कई शो किए हैं और मान एक नेकदिल इंसान हैं। बीते दो वर्षों में लॉकडाउन के समय, मीका ने अपने एनजीओ डिवाइन टच के माध्यम से प्रतिदिन एक हजार लोगों के लिए लंगर की व्यवस्था की।

एनजीओ अनेक शहरों में भलाई के कार्य कर रहा है।

अभिव्यक्ति

पाकिस्तान की सरकार और उनके चुने हुए हुक्मरान

संजीव ठाकुर

1947 में स्वतंत्रता के बाद से ही पाकिस्तान की सरकार और उनके चुने हुए हुक्मरान लड़खड़ाते हुए शासन तंत्र चलाते रहे थे। यही हाल इमरान खान का हो चुका है। इमरान खान की पार्टी तहरिके इस्लाम के लगभग 24 सांसद बगावत में उतर गए और इमरान को नेशनल असेंबली बंद करने की सिफारिश राष्ट्रपति को करनी पड़ी। राष्ट्रपति ने नेशनल असेंबली भंग कर दी है। विपक्षी नेता बिलावल भुट्टो, पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के शहबाज शरीफ, पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की बेटी और पार्टी के उपाध्यक्ष मरियम नवाज, विपक्ष की सशक्त आवाज मौलाना फजलुर रहमान ने इमरान के इस फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट मैं दरवाजा खटखटाया है। सुप्रीम कोर्ट ने एक या 2 दिन में सुनवाई कर फैसला करने का आदेश दिया है। विपक्षियों ने एकजुट होकर शहबाज शरीफ को अपना अगला प्रधानमंत्री घोषित कर दिया है। इमरान खान से सेना के सदर कमर जावेद बाजवा ने भी उनको दो टूक शब्दों में कह दिया है कि हम इस मामले में दखल नहीं देंगे। पाकिस्तान में इमरान की गद्दी अब जा चुकी है। इमरान ने विदेशी साजिश का बहाना बनाकर नेशनल असेंबली भंग करवा दी है। क्रिकेट में वर्ल्ड कप जिताने वाले पाकिस्तान के हीरो, पढ़े-लिखे इमरान खान ने अपनी सारी छवि को खराब करते हुए अब जादू टोने का सहारा लेना शुरू कर दिया था। पाकिस्तान की जनता इमरान की इस व्यवहार से आश्चर्यचकित थी। पाकिस्तान की आवाम उनकी बीबी बुशरा बेगम को जादू टोने की इन हरकतों से अच्छी तरह वाकिफ है,और इमरान खान पाकिस्तान की जनता के बर्दाश्त के बाहर हो चुके थे और पूरी तरह से अपनी पत्नी 5 बच्चों की मां बुशरा बेगम की गिरफ्त में है,वे इस मुगालते में थे कि बुशरा बेगम जादू टोने से उनकी गद्दी बचाने में सफल होंगी पर सारी चीजें धरी की धरी रह गई। संसद में विपक्षी पार्टी की मांग पर अविश्वास प्रस्ताव रखा गया था। इमरान के पास नेशनल असेंबली के कुल 341 सांसदों में से कुल 155 सांसद है,और बहुमत के लिए 172 सांसदों की जरूरत थी। इसके अलावा दूसरी तरफ 155 सांसदों में 24 से 30 सांसदों ने बगावती तेवर दिखाकर सिंध हाउस इस्लामाबाद में अपना अड्डा जमाया है। अविश्वास प्रस्ताव में यदि इन 24 सांसदों ने इमरान के पक्ष में वोट नहीं दिया तो इमरान सरकार का गिरना निश्चित ही था। पाकिस्तान के इतिहास में नजर डालें तो पाकिस्तान का इतिहास रहा है कि अब तक निर्वाचित 18 प्रधानमंत्रियों में कोई भी अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाया है, या तो प्रधानमंत्रियों की सरकार गिरा दी गई है या सेना के जनरल ने पाकिस्तान में मार्शल ला लगाकर सैनिक सरकार बना ली थी' जुल्फिकार अली भुट्टो को तो जनरल याह्या खान ने अपदस्थ कर अनेक आरोप लगाकर फांसी की सजा दे दी गई थी।

नवाज शरीफ की दो बार प्रधानमंत्री बने पर दोनों बार अपदस्थ कर दिए गए थे ' नवाज शरीफ अब इंग्लैंड में निर्वासित जीवन जी रहे हैं' अब पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान नियाजी की स्थिति वैसी ही हो गई है, उनके 3 साथी पाकिस्तान छोड़कर विदेश भाग गए हैं। उनके 3 साल के कार्यकाल में पाकिस्तान में महंगाई का पिछले 70 सालों का रिकॉर्ड टूट गया है, महंगाई 35% ऊंचाई पर पहुंच गई मुद्रास्फीति भी आसमान छू रही है, बेरोजगारी चरम सीमा पर है। वैश्विक समुदाय का भरोसा पाकिस्तान की सरकार से टूट गया है' ऐसे में वहां का विपक्षी दल एवं नवाज शरीफ की बेटी मरियम नवाज और अन्य दल इमरान सरकार पर निशाना साधे हुए हैं' इमरान खान और सेना के जनरल बाजवा के बीच भी भारी मनमुटाव की स्थिति आ गई सेना भी चाहती है कि अब विपक्षी दलों के साथ मिलकर नवाज शरीफ जैसा ट्रबल शूटर प्रधानमंत्री पाकिस्तान में स्थापित किया जाए जिससे पाकिस्तान की तमाम समस्याओं का इलाज खोज लिया जाए ' नवाज शरीफ के रूस, चीन, सऊदी अरेबिया और अमेरिका से संबंध इमरान सरकार की तुलना में अच्छे ही रहे हैं' इमरान सरकार ने वैसे भी विश्व समुदाय को धोखे में रख हमेशा कट्टरपंथियों एवं आतंकवादियों को पनाह दी है' अफगानिस्तान ने अमेरिका से अरबों डालर की सहायता लेकर भी तालिबानी आतंकवादियों को लगातार अस्त्र शस्त्र और राजनैतिक मदद अमेरिका को धोखे में रखकर देता आया है' पंजशीर घाटी में भी उसने तालिबानियों को सैनिक तथा हवाई हमले की मदद देकर अब अफगानी लड़कों से लोहा लेकर से खाली करवाया है।

कांशी राम की मेहनत पर पानी फेरती मायावती

निर्मल रानी

उत्तर प्रदेश विधान सभा के पिछले दिनों संपन्न हुए चुनावों में जहाँ भारतीय पार्टी अपनी सीटों में 2017 की तुलना में 57 सीटें कम आने के बावजूद सत्ता में वापस आ गयी वहीँ समाजवादी पार्टी ने बेहतरीन प्रदर्शन करते व अपने मत प्रतिशत में भी इजाफा करते हुये 2017 के मुकाबले लगभग 64 सीटें अधिक हासिल कर कुल 111 सीटों पर विजयी होने के बावजूद सत्ता के जादुई आंकड़े से काफी दूर रही। परन्तु इन चुनावों में सबसे अधिक नुकसान बहुजन समाज पार्टी को उठाना पड़ा जिसे 2017 के मुकाबले 18 सीटें और गंवाकर राज्य की मात्र एक सीट पर ही जीत हासिल हुई। और उस एकमात्र विजयी प्रत्याशी उमाशंकर सिंह के विषय में भी यही बताया जा रहा है कि उन्होंने अपने निजी जनाधार व लोकप्रियता के चलते यह जीत हासिल की है न की मायावती के समर्थन अथवा बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी के नाते। उत्तर प्रदेश में बलिया जिले के अंतर्गत रसड़ा विधानसभा क्षेत्र से विजयी बसपा से निर्वाचित एकमात्र विधायक उमाशंकर सिंह इससे पूर्व भी 2012 व 2017 में यहाँ से विधायक रह चुके हैं। क्षेत्र में समाजसेवी के साथ साथ उनकी रोबिन हुड जैसी छवि बनी हुई है। यही उनकी जीत का प्रमुख कारण माना जा रहा है। सवाल यह है कि देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश की चार बार मुख्य मंत्री रहने वाली मायावती के नेतृत्व में ऐसी क्या कमी रह गयी कि जो मायावती अपनी पार्टी के जनाधार की बदौलत देश के प्रधानमंत्री बनने तक के सपने संजोने लगी थीं आज उनकी वही बसपा मृत प्राय सा राजनैतिक दल क्यों प्रतीत होने लगा है ? गौर तलब है कि 1984 में कांशीराम ने देश में 85 प्रतिशत बहुजनों के मतों के बल पर 15 प्रतिशत सवर्णों द्वारा देश पर राज करने जैसी 'फिलॉसफी ' को सामने रखकर बसपा का जनाधार पूरे देश विशेषकर उत्तर प्रदेश में बढ़ाया था। और 85 बनाम 15 प्रतिशत के इसी फामूर्ले ने उनकी पार्टी को आसमान पर पहुंचा दिया था। कांशीराम जीवन भर अपनी इसी सामाजिक गणित के प्रति कटिबद्ध रहे और सत्ता के लिये उन्होंने अपने इस सामाजिक अंकगणित की कभी बलि नहीं चढ़ाई। कांशी राम ने 2001 में सार्वजनिक तौर पर घोषणा कर कुमारी मायावती को अपना उत्तराधिकारी तो जरूर बनाया परन्तु 2006 में कांशी राम के देहांत के बाद मायावती ने न केवल बसपा संगठन पर पूरा नियंत्रण हासिल कर लिया बल्कि मात्र सत्ता के लिये मनमाने तरीके से कई बार पार्टी की नीतियों व सिद्धांतों से भी समझौता किया। यहाँ तक कि वे कई बार अपने मुख्य नारों को यू टर्न देते हुये अपनी पार्टी की मूल विचारधारा से समझौता करती भी नजर अ ा इ ं । बहुजन समाज के साथ साथ मायावती ने सर्वजन समाज की बात भी करनी शुरू कर दी। दलित समाज के मतों पर अपना एकाधिकार समझने के बाद मायावती ने ब्राह्मण सम्मेलन करने शुरू कर दिये। भरी सभा में वह जिसे गलियां देते व अपमानित करते फिरती थीं उसी समाज को आकर्षित करने के लिये उन्होंने पार्टी व कांशी राम के सिद्धांतों की बलि चढ़ा दी। और इसी भ्रमित करने वाली राजनीति का नतीजा यह निकला कि ताजातरीन विधानसभा चुनावों में मायावती की हालत ' न खुदा ही मिला न विसाल-ए-सनम-न इधर के हुए न उधर के हुए ' जैसी हो गयी। न ही उन्हें 85 प्रतिशत समाज वाले पारंपरिक वोट मिले न ही 15 प्रतिशत समाज के वह मत हासिल हुए जो पहले भी कभी नहीं मिला करते थे।परन्तु मायावती ने अपनी इस ऐतिहासिक हार का ठीकरा दलितों या ब्राह्मणों पर नहीं बल्कि मुसलमानों के सिर पर फोड़ा।जबकि मायावती ने मुस्लिम मतों के लिये ब्राह्मण सम्मेलनों की तरह न तो कोई मुस्लिम सम्मलेन आयोजित किये न ही वे कभी मुसलमानों के दुःख दर्द की साथी बनती दिखाई दीं। इसके बावजूद उनका गुस्सा राज्य के मुस्लिम मतदाताओं पर फूटना उनकी राजनैतिक अदूरदर्शिता के साथ साथ किसी 'प्रायोजित व नियोजित ' साजिश का भी षड्यंत्र नजर आता है।

नेताजी कपड़े बदलें न बदलें पार्टी जरूर बदलना चाहिए

डॉ. सुरेश कुमार

जुबान से पलटना, कही बात से पीछे हटना, पार्टी सिद्धांत से खुद को बड़ा समझना एक सफल नेता की निशानी होती है। नेताजी कपड़े बदलें न बदलें पार्टी जरूर बदलना चाहिए। ऐसा करने से उनकी नेतागिरी की धाक बनी रहती है। सबकी अपनी-अपनी जरूरतें होती हैं। सबके अपने-अपने पेट और मुँह होते हैं। फिर नेता जी की जरूरतों का मुँह कुछ ज्यादा ही बड़ा होता है। न ये कभी भरा था, न भरा है और न कभी भरेगा। ओलंपिक्स में लांग जंप करने वाला खिलाड़ी हार जाए तो खाली हाथ लौटता है जबकि नेता दाएँ-बाएँ, ऊपर-नीचे हर दिशा में जंप करके कुछ न कुछ हथिया ही लेते हैं। वह भी न मिले तो बाजू वाले का ही सही हड़पने की काबिलियत तो रखते ही हैं।

जिस तरह खुली हवा में टहलने से स्वास्थ्य बना रहता है उसी तरह पार्टी बदलते रहने से नेता जी की रौनक बनी रहती है। यही वजह है कि पिछले चार साल में चार सौ से अधिक बड़े नेताओं ने पार्टियों की ऐसी अदला-बदली की जैसे गंगा जी का मेला हो। नारा भी गजब अबकी बार - जंप लगा यार! डंडा वही पर झंडा अलग की तर्ज पर नेता वही पर टोपी अलग की रेस में नेताजी ने चोरी-चोरी, चुपके-चुपके पार्टी बदल ली। और पार्टी भी वही जिसे वे बरसों से गरियाते रहे। गरिया-गरियाकर उनका मुँह गरियाने का शोधालय बन गया। अब ऐसे शोधालय से गरियाने की खरी न निकलेगी तो मीठी-मीठी फुलझड़ी झड़ेगी? पार्टी बदलने के बाद मीडिया का सामना करना कोई इनसे सीखे। यह पूछने पर कि आपने पार्टी क्यों बदली तो ह्यजनता, निर्वाचन क्षेत्र और देश के विकास के खातिर जैसा कर्णप्रिय वनलाइनर कहकर सबके मुँह पर ताला लगा देते। जबकि इस वनलाइनर का गूढार्थ रहिमन पानी राखिए वाले पानी से भी भारी था। अब भला कोई नेता जी को कौन बताए कि विकास नाम का जीव अंग्रेजों के जमाने से ही गायब है। आजादी के बाद सीबीआई, आईबी, रॉ, ईडी सभी को इसी के पीछे लगा दिया। सबने अपने हाथ खड़े कर दिए। आज तक उसकी खोज जारी है। हाल ही में विकास नाम का एक प्राणी पुलिस वालों के हत्थे चढ़ा था।

एलिसा हीली महिला विश्व कप की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुनी गई

क्राइस्टचर्च। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने ऑस्ट्रेलिया की विकेटकीपर बल्लेबाज एलिसा हीली को महिला वनडे विश्व कप के फाइनल में उनकी टीम की इंग्लैंड पर 71 रन से जीत

के बाद टूर्नामेंट की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना। इससे हीली ऑस्ट्रेलिया की पूर्व कप्तान कारेन रोल्टन (2005), इंग्लैंड की क्लेरी टेलर (2009), न्यूजीलैंड की सूजी बेट्स (2013) और इंग्लैंड की टैमी ब्यूमोंट (2017) के विशेष क्लब में शामिल हो गयी हैं। हीली ने न्यूजीलैंड में खेले गये इस टूर्नामेंट में सर्वाधिक 509 रन बनाए। उन्होंने सेमीफाइनल और फाइनल में शतक जमाये जिससे आस्ट्रेलिया ने सातवीं बार खिताब जीतकर अपने रिकॉर्ड को नए मुकाम पर पहुंचाया। इस 32 वर्षीय विकेटकीपर बल्लेबाज ने 56.55 की औसत से रन बनाए और इसके अलावा विकेटकीपर के रूप में चार कैच लिये और चार स्टंप आउट भी किए। हीली को टूर्नामेंट की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुनने वाले छह सदस्यीय पैनल में लिसा स्टालेकर, नासिर हुसैन और नताली गेरमानोस भी शामिल थे।

आईपीएल अपनी मजबूत बल्लेबाजी के दम पर हैदराबाद पर हावी होने की कोशिश करेगा लखनऊ

नवी मुंबई। मौजूदा चैंपियन चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ जीत से अपना अभियान पटरी पर लाने वाला लखनऊ सुपर जायंट्स अपनी मजबूत बल्लेबाजी के दम पर इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में मंगलवार को यहां होने वाले मैच में सनराइजर्स हैदराबाद पर हावी होने की कोशिश करेगा। आईपीएल की नयी टीम लखनऊ अपने पहले मैच में पदार्पण करने वाली एक अन्य टीम गुजरात टाइटन्स से हार गयी थी लेकिन बड़े स्कोरे वाले दूसरे मैच में वह चेन्नई को हराने में सफल रही जिससे निश्चित तौर पर उसका मनोबल बढ़ा होगा। कप्तान केएल राहुल और क्विंटन डिकॉक के रूप में लखनऊ के पास मजबूत सलामी जोड़ी है जिन्होंने चेन्नई के खिलाफ पहले विकेट के लिये 99 रन की साझेदारी की थी। वेस्टइंडीज के इविन लुईस ने 23 गेंदों पर 55 रन बनाये जिससे लखनऊ ने 211 रन का लक्ष्य हासिल करके चेन्नई को हराया था।उसके पास मध्यक्रम में दीपक हुड्डा के रूप में विश्वसनीय बल्लेबाज है। युवा आयुष बडोनी ने छक्के मारने की अपनी क्षमता से इस आईपीएल में अभी तक अपनी छाप छोड़ी है और वह अपनी फॉर्म बरकरार रखने की कोशिश करेंगे।

पंत ने हार के लिए बल्लेबाजों को जिम्मेदार ठहराया

पुणे। दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान ऋषभ पंत ने इंडियन प्रीमियर लीग में यहां गुजरात टाइटंस के खिलाफ 14 रन की हार का ठीकरा बल्लेबाजों के सिर पर फोड़ते हुए कहा कि पिच को देखते हुए लक्ष्य को हासिल किया जा सकता था।टाइटंस के 172 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए दिल्ली की टीम फर्ग्युसन (28 रन पर चार विकेट) और मोहम्मद शमी (30 रन पर दो विकेट) की धारदार गेंदबाजी के सामने नौ विकेट पर 157 रन ही बना सकी।

दिल्ली की ओर से पंत ने सर्वाधिक 43 रन बनाए। टाइटंस ने इससे पहले गिल की 46 गेंद में चार छक्कों और छह चौकों की मदद से 84 रन की पारी से छह विकेट पर 171 रन बनाए। मुस्तफिजुर रहमान (23 रन पर तीन विकेट) और खलील अहमद (34 रन पर दो विकेट) ने हालांकि गुजरात की टीम को अंतिम ओवरों में तेजी से रन नहीं बनाने दिए। पंत ने स्वीकार किया कि इस लक्ष्य को हासिल किया जाना चाहिए था। पंत ने मैच के बाद कहा, ''विकेट को देखते हुए स्कोर काफी बड़ा नहीं था। हम बेहतर बल्लेबाजी कर सकते थे, विशेषकर बीच के ओवरों में। इतने विकेट गंवाने के बाद मैच में वापसी करना मुश्किल होता है।'' उन्होंने कहा, ''जब आपकी टीम हारती है तो दिल टूट जाता है लेकिन हम अगले मैच में सुधार कर सकते हैं।

सीएसके के कोच ने कहा- मुझे नहीं पता था कि मोईन अली इतने अच्छे खिलाड़ी हैं

मुंबई। चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के बल्लेबाजी कोच माइकल हसी टीम के ऑलराउंडर मोईन अली की बल्लेबाजी प्रतिभा से काफी प्रभावित हैं और उन्होंने कहा है कि उन्हें इंग्लैंड के इस क्रिकेटर की क्षमता का अहसास तब हुआ जब वह पिछले साल सीएसके की टीम में शामिल हुए।

हसी ने मोईन की बल्लेबाजी के में कहा कि ईमानदारी से कहूं तो मोईन अली एक अविश्वसनीय खिलाड़ी हैं।

मैंने उन्हें तब पहली बार

करीब से खेलते हुए देखा था जब वह पिछले सत्र में सीएसके टीम में शामिल हुए थे। इसलिए मुझे नहीं पता था कि वह वास्तव में कितने अच्छे खिलाड़ी हैं। वह बेहतरीन बल्लेबाज हैं, एक शानदार खिलाड़ी हैं। वह जितनी अच्छी टाइमिंग से शॉट जमाते हैं वह लाजवाब है।

चेन्नई के पहले दो मैचों में हारने के बावजूद मनोबल बनाए रखने के बारे में हसी ने कहा कि यह वर्षों से सीएसके का गुण है। लंबे समय तक टीम की कप्तानी करने वाले महेंद्र सिंह धोनी और कोच स्टीफन फ्लेमिंग हर समय शांतचित रहते है। पहला मैच हमारे अनुकूल नहीं रहा लेकिन टीम में कोई घबराहट नहीं है क्योंकि यह शुरुआती चरण है।

राष्ट्रमंडल और एशियाई खेलों से पहले पहलवानों के लिये साइ केंद्रों लगेगा शिविर

नई दिल्ली। ओलंपिक पदक विजेता रवि कुमार दहिया, बजरंग पूनिया और साक्षी मलिक उन शीर्ष पहलवानों में शामिल हैं जो इस साल होने वाले राष्ट्रमंडल और एशियाई खेलों की तैयारियों के लिये भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) के सोनीपत और लखनऊ केंद्रों में तीन महीने के अभ्यास शिविर में भाग लेंगे।

यह शिविर एक अप्रैल से शुरू हो गया है और यह 30 जून तक चलेगा। इसमें कुल 124 पहलवान (फ्रीस्टाइल और ग्रीको-रोमन), 23 कोच और सहयोगी स्टाफ हिस्सा लेंगे। साइ के बयान के अनुसार सोनीपत में 75 पुरुष पहलवान शिविर में भाग लेंगे जबकि 49 महिला पहलवान लखनऊ में अभ्यास करेंगे। इन शिविरों में भाग लेने वाले अन्य प्रमुख पहलवानों में विश्व चैंपियनशिप की कांस्य पदक विजेता अंशु मलिक और विनेश फोगाट भी शामिल हैं। साइ के अनुसार आगामी एशियाई चैंपियनशिप के लिये हाल में चयन ट्रायल जीतने वाले, ओपन राष्ट्रीय रैंकिंग टूर्नामेंट के विजेता और सीनियर राष्ट्रीय चैंपियनशिप के पदक विजेता पहलवान इन शिविरों में भाग लेंगे।

भारतीय कोच के रूप में शानदार भूमिका निभाएंगे राहुल द्रविड़ : गांगुली

कोलकाता। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के अध्यक्ष सौरव गांगुली का मानना है कि उनके पूर्व साथी राहुल द्रविड़ में भारतीय कोच के रूप में सफल होने के लिये सभी गुण मौजूद हैं। गांगुली को लगता है कि द्रविड़ में 'प्रखरता, सतर्कता और पेशेवरपन' जैसे गुण हैं जिससे उन्होंने भारतीय कोच के रूप में सफल होना चाहिए।

भारत के पूर्व कप्तान ने कहा, 'वह (द्रविड़) अपने खेल के दिनों की तरह ही प्रखर, सतर्क और पेशेवर हैं। अंतर केवल इतना है कि अब उन्हें भारत के लिए नंबर तीन पर बल्लेबाजी करने की जरूरत नहीं है, जिसमें उन्हें दुनिया के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजों का सामना करना पड़ा था और उन्होंने लंबे समय तक अपनी भूमिका अच्छी तरह से निभाई।' उन्होंने कहा, 'कोच के रूप में भी वह शानदार भूमिका निभाएंगे क्योंकि वह निष्ठावान हैं और उनके पास कौशल है।' बीसीसीआई प्रमुख

होने के कारण द्रविड़ को भारतीय कोच नियुक्त करने में गांगुली की भूमिका अहम रही। उन्होंने रवि शास्त्री की जगह ली है। गांगुली ने कहा, 'प्रत्येक की तरह वह भी गलतियां करेंगे, लेकिन जब तक आप सही काम करने की कोशिश करते हैं, तब तक आप दूसरों की तुलना में अधिक सफलता हासिल करेंगे।' गांगुली ने हालांकि द्रविड़ की तुलना उनके पूर्ववर्ती शास्त्री से करने से इनकार कर दिया।

गांगुली ने कहा, 'उनका व्यक्तित्व अलग है। एक हमेशा चर्चा में रहता है जो उसका मजबूत पक्ष है जबकि दूसरा सर्वकालिक महान खिलाड़ी होने के बावजूद चुपचाप काम करेगा। दो व्यक्ति एक ही तरह से सफल नहीं हो सकते हैं।'

इंग्लैंड को 71 रनों से हरा वर्ल्ड चैंपियन बनी आस्ट्रेलिया, एलिसा की ऐतिहासिक पारी

नई दिल्ली। क्राइस्टचर्च के हेगले ओवल मैदान पर खेले गए वर्ल्ड कप फाइनल में आस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड को 71 रनों से हरा दिया है। आस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड के सामने पहले बल्लेबाजी करते हुए 357 रनों का लक्ष्य रखा था लेकिन पूरी टीम 44वें ओवर में 285 रन बनाकर आलआउट हो गई। आस्ट्रेलिया के लिए ये 7वां वर्ल्ड कप खिताब है। इस टूर्नामेंट में वे अब तक अविजीत रही हैं। इंग्लैंड की तरफ से नताली स्कीवर ने 148 रन की नाबाद पारी खेली और इंग्लैंड की उम्मीदों को जिंदा रखा लेकिन कोई भी बैटर उनका साथ नहीं दे सकीं।

इंग्लैंड की पारी 285 पर सिमटी

357 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी इंग्लैंड के लिए डेनियल वेट और टैमी ब्यूमोंट ने की पारी की शुरुआत की लेकिन जल्द ही डेनियल वेट आउट हो गईं। उन्हें मेगन स्कट ने आउट किया। टैमी ब्यूमोंट के रूप में इंग्लैंड को दूसरा झटका लगा। उन्होंने 27 रन की पारी खेली।

उन्हें स्कट ने अपना दूसरा शिकार बनाया। कप्तान हीथर नाइट के रूप में टीम को तीसरा झटका लगा है। वे 26 रन बनाकर आउट हो गई हैं। उन्हें अलाना किंग ने एलबीडब्ल्यू आउट किया। चौथे झटके के रूप में एमी जोंस को जेस जोनासेन ने अलाना के हाथों कैच आउट कराया। उन्होंने 20 रनों की पारी खेली। 5वें विकेट के रूप में सोफिया डंकले 23 रन बनाकर आउट हुई। उन्हें अलाना किंग ने बोल्ड किया। उन्होंने स्कीवर के साथ 50 रन की साझेदारी की।

छठे विकेट के रूप में कैथरीन ब्रंट 1 रन बनाकर आउट हो गई, उन्हें अलाना किंग ने आउट किया। सोफी एक्लेस्टन केरूप में इंग्लैंड को 7वां झटका लगा। 8वें विकेट के रूप में केट क्रास को जेस जोनासेन ने आउट किया। 9वें विकेट के रूप में 21 रन बनाकर चार्ली डीन आउट हुई।

भारत ने जूनियर हॉकी विश्व कप में जीत से शुरूआत की, वेल्स को 5-1 से हराया

पोटचेफ्सट्रूम। भारतीय महिला हॉकी टीम ने यहां पूल के शुरूआती मैच में अपने से कम रैंकिंग वाली वेल्स को 5-1 से हराकर एफआईएच जूनियर विश्व कप में अपना अभियान शानदार ढंग से शुरू किया। भारतीय टीम के लिये लालरेमसियामी ने चौथे, लालरिंडीकी ने 32वें और मुमताज खान ने 41वें मिनट में मैदान गोल जबकि लालरिंडीकी ने 57वें और दीपिका ने 58वें मिनट में अंत में दो पेनल्टी कॉर्नर को गोल में बदला। वेल्स के लिये एकमात्र गोल मिली होम ने 26वें मिनट में किया।

मैच में भारतीयों ने शुरू में ही पेनल्टी कॉर्नर हासिल कर अच्छी शुरूआत की लेकिन वेल्स की गोलकीपर ने दीपिका की ड्रैग फ्लिक को रोक दिया।लेकिन वेल्स की टीम भारत को लंबे समय तक नहीं रोक सकी और लालरेमसियामी ने संगीता कुमारी

के शॉट को गोल की ओर डिफ्लेक्ट कर चौथे मिनट में बढ़त दिला दी। शुरू में वेल्स ने भारतीय रक्षापंक्ति की परीक्षा ली लेकिन उसकी खिलाड़ी गोलकीपर बिचू देवी को नहीं पछाड़ सकीं। वेल्स ने दूसरे क्वार्टर में होम के मैदानी गोल के जरिये स्कोर 1-1 से बराबर कर दिया। छोर बदलने के बाद वेल्स की टीम आक्रामक हो गयी लेकिन तीसरे क्वार्टर के दूसरे ही मिनट में भारत ने लालरिंडीकी के मैदानी गोल से स्कोर 2-1 कर दिया। भारतीयों ने दबाव बनाना जारी रखा और 41वें मिनट में मुमताज के गोल से 3-1 की बढ़त बना ली। इसके बाद से भारतीयों का दबदबा जारी रहा और वेल्स की रक्षात्मक पंक्ति को अपने प्रतिद्वंद्वियों के लगातार हमले रोकने में मुश्किल हो रही थी। भारतीय कप्तान सलीमा टेटे ने अपने ड्रिबलिंग कौशल से अपनी टीम के लिये मौके बनाकर शानदार प्रदर्शन किया।

उन्होंने चौथे क्वार्टर में कुछ पेनल्टी कॉर्नर हासिल किये लेकिन भारतीय खिलाड़ी इन मौकों का फायदा नहीं उठा सकीं। मैच खत्म होने में चार मिनट का ही समय रह गया था कि दीपिका को एक पेनल्टी कॉर्नर मिला और लालरिंडीकी रिबाउंड पर गोल करने के लिये सही जगह मौजूद थीं जिससे भारतीय टीम का स्कोर 4-1 हो गया।

भारत की मीनाक्षी करीबी हार के बाद थाईलैंड ओपन मुक्केबाजी से बाहर

नई दिल्ली। अभारत की मीनाक्षी फुकेत में महिलाओं के 51 किग्रा वर्ग में स्थानीय मुक्केबाज जुतामास जितपोंग से पहले दौर की हार के बाद थाईलैंड ओपन से बाहर हो गई। इस करीबी मुकाबले में मीनाक्षी को को खंडित फैसले से 3-2 से हार का सामना करना पड़ा। मुकाबले के पहले दौर में, दोनों मुक्केबाजों ने दूर से खेलना बेहतर समझा लेकिन दूसरे दौर में दोनों ने एक दूसरे को कई पंच लगाये।

अंतिम दौर में दोनों मुक्केबाजों के बीच करीबी मुकाबला देखने को मिला जहां मीनाक्षी ने कुछ स्पष्ट घूंसे मारे लेकिन यह उन्हें जीत दिलाने के लिए पर्याप्त नहीं था। प्रतियोगिता में सोमवार को पांच महिलाओं सहित छह भारतीय मुक्केबाज चुनौती पेश करेंगे। महिला वर्ग में मोनिका (48 किग्रा) , रेणु (54 किग्रा) , 2019 एशियाई चैंपियनशिप की कांस्य पदक विजेता मनीषा (57 किग्रा), मोनिका (63 किग्रा) और भाग्यवती कचारी (75 किग्रा) रिंग में उतरेंगी। पिछले सत्र के स्वर्ण पदक विजेता आशीष कुमार 81 किग्रा क्वार्टर फाइनल में स्थानीय मुक्केबाज अफीसित खानखोखरुइया के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेंगे। टूर्नामेंट के पिछले सत्र 2019 में भारतीय दल ने एक स्वर्ण, चार रजत और तीन कांस्य सहित आठ पदक जीते थे।

लॉकी फर्ग्यूसन का बड़ा बयान, शुभमन गिल जल्द बड़ा शतक बनाएंगे

मुंबई। दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ गुजरात के सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल ने 84 रन की शानदार पारी खेली।

शुभमन की इस पारी के बाद टीम के तेज गेंदबाज लॉकी फर्ग्यूसन ने कहा कि वह जल्द ही शतक लगाने वाले हैं। क्योंकि जिस तरह से उन्होंने पुणे के मैदान में बल्लेबाजी की उससे यह लगता है कि उनके बल्ले से जल्द शतक निकलने वाला है।फर्ग्यूसन ने कहा कि मैं शुभमन के साथ तीन साल से खेल रहा हूं पहले कोलकाता नाइट राईडर्स के लिए और उसके बाद अब गुजरात टाइटंस के लिए। एक खिलाड़ी के रूप में उनकी प्रगति को देखकर बहुत अच्छा लगा। इसमें कोई

शक नहीं है कि वह एक शानदार खिलाड़ी है।

उसके पास शॉट खेलने के लिए काफी टाइम होता है।फर्ग्यूसन ने आगे कहा कि मैं उसे नेट्स में गेंदबाजी करता हूं और मैं जानता हूं कि उसे शॉट खेलने के लिए बहुत टाइम मिलता है। पर उसे आज बल्लेबाजी करते हुए देखना और टीम को बड़े स्कोर की तरफ लेकर जाना वाकई कमाल का था। मुझे पता है कि वह निराश होगा कि वह शतक नहीं लगा पाया। पर वह जल्द ही उसके बल्ले से शतक निकलेगा।

ओलिंपिक में क्रिकेट को ले जाने का मकसद इसे वैश्विक पहचान दिलाना : आईसीसी सीईओ

मेलबर्न। आईसीसी (अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) ज्योफ एलार्डिस ने कहा कि ओलंपिक में क्रिकेट को शामिल करने के लिए आईसीसी की कोशिश का मकसद पैसा कमाना नहीं है बल्कि इस खेल की वैश्विक पहुंच बनाने के लिए इसे ऐसे देशों में ले जाने का है जहां यह लोकप्रिय नहीं है।

बर्मिंघम में 2022 के राष्ट्रमंडल खेलों में महिला टी 20 क्रिकेट की शुरुआत के बाद आईसीसी ने इस खेल को ओलंपिक में शामिल करने के लिए प्रयास कर रहा है। कुआलालंपुर में 1998 के राष्ट्रमंडल खेलों में पुरुषों की क्रिकेट प्रतियोगिता पहले ही हो चुकी है। एलार्डिस ने 'एसईएन रेडियो' के कार्यक्रम 'दिस इज योर जर्नी - थैंक्स टू टोबिन ब्रदर्स' में कहा, 'हमारे कई सदस्यों का मानना है ओलंपिक खेल के रूप में क्रिकेट को पहचान मिलने से सरकार और राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के साथ जुड़ाव मजबूत होगा। यह सुविधाओं और प्रदर्शन को बेहतर करने के मामले में वास्तव में फायदेमंद होगा।' उन्होंने कहा, 'हमारे लिए यह निश्चित रूप से पैसा बनाने की कवायद नहीं है। हमारी कोशिश इस खेल को ऐसे जगह पहुंचाने की है, जहां यह लोकप्रिय नहीं है।'

उन्होंने कहा, 'इसका दूसरा मकसद हमारे सभी 106 सदस्यों को सरकार के साथ करीब से जुड़ने का मौका देना है।' आईसीसी के इस शीर्ष अधिकारी ने कहा कि ओलंपिक का हिस्सा बनना कई सदस्य देशों के लिए संबंधित सरकारों के साथ मजबूत संबंध बनाने की दृष्टिकोण से जरूरी है। उन्होंने कहा, 'कुछ देशों में ओलंपिक में शामिल खेल गैर ओलंपिक खेल की तुलना में अपनी सरकार के अधिक करीब रहते हैं।'

आईसीसी ने पिछले साल ओलंपिक खेलों में क्रिकेट को शामिल करने के लिए बोली लगाने के अपने इरादे की पुष्टि की थी। उसने कहा था कि वह 2028 लॉस एंजिल्स, 2032 ब्रिस्बेन खेलों और उससे आगे के लिए ओलंपिक परिवार का हिस्सा बनने की दिशा में काम कर रहा है।

आईपीएल में सट्टेबाजी: पुणे में गुजरात और दिल्ली के मैच पर सट्टा लगा रहे तीन लोग गिरफ्तार, 27 लाख रुपए और 8 मोबाइल फोन बरामद

पुणे। पुणे से सटे पिंपरी-चिंचवाड़ में पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए गुजरात टाइटंस और दिल्ली कैपिटल्स के मैच में सट्टा लगाने वाले गिरोह का भंडाफोड़ किया है। इस मामले में पुलिस ने अभी तक एक फ्लैट से तीन लोगों को अरेस्ट किया है। पुलिस को इनके पास से 27 लाख रुपये नकद और 8 मोबाइल फोन बरामद हुए हैं। जानकारी के मुताबिक, यह हर गेंद पर सट्टा लगा रहे थे। जानकारी के मुताबिक, पुलिस ने जिस फ्लैट पर छापा मारा है वह स्टेडियम से तकरीबन 5 किलोमीटर दूर था।

पुलिस कमिश्नर कृष्ण प्रकाश ने बताया कि खुफिया सूचना के बाद यह छापेमारी की कार्रवाई की गई है। यह बेटिंग का एक बड़ा रैकेट है, इसलिए इस मामले में और लोगों पर भी कार्रवाई हो सकती है। इस छापेमारी में गिरफ्तार किए गए आरोपियों में सनी उर्फ भूपेंद्रसिंह चरणजीत सिंह गिल (38), रिक्की राजेश खेमचंदानी (36) और सुभाष रामकिसन अग्रवाल (57) शामिल हैं। उनके अलावा सनी सुखेजा के खिलाफ आईपीसी की धारा 353, 34, महाराष्ट्र जुआ एक्ट की धारा 4, 5 और भारतीय टेलीग्राफ एक्ट की धारा 21 के तहत मामला दर्ज किया गया है।

मुख्य आरोपी पर पहले भी दर्ज हैं कई केस

आरोपियों के खिलाफ गुंडा विरोधी दस्ते के सहायक पुलिस निरीक्षक हजरत मोहम्मद पठान ने वाकड़ थाने में शिकायत दर्ज कराई है। गिरफ्तार आरोपियों में शामिल सनी गिल पुलिस रिकॉर्ड पर दर्ज शातिर बदमाश है,

उसके खिलाफ पिंपरी पुलिस थाने में कई मामले दर्ज हैं।

ऐसे हुआ सट्टेबाजी के खेल का खुलासा

इस छापेमारी के बारे में जानकारी देते हुए गुंडा विरोधी दस्ते के प्रमुख सहायक पुलिस निरीक्षक हरीश माने ने बताया कि, पुलिस टीम को मुखबिर से पता चला कि, कालेवाड़ी के राजवाढेनगर की एक सोसायटी के फ्लैट में आईपीएल की मैच पर बेटिंग की जा रही है। इसके अनुसार यहां पहुंचकर वैभव पैराडाइज में सनी गिल के फ्लैट पर छापा मारा गया। यहां गुजरात टाइटन और दिल्ली कैपिटल के बीच खेले जा रहे मैच पर बेटिंग ली जा रही थी। यहां तीन लोग मौजूद थे, जिन्हें हिरासत में लिया गया। मौके से 27 लाख 25 हजार 450 रुपए नकद, 8 मोबाइल फोन और जुआ खेलने से सम्बंधित अन्य सामग्री बरामद की गई।

आरोपी ने पुलिस को धमकाने का प्रयास किया

कार्रवाई के दौरान आरोपी सनी गिल द्वारा अपनी 'ऊंची' पहुंच बताकर पुलिस टीम को धमकाने और दबाव बनाने की कोशिश की। ढ्ढक्क के इस सीजन के दौरान सटोरियों के खिलाफ की गई यह अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई मानी जा रही है। इससे शहर के सटोरियों में खलबली मच गई है। बहरहाल इस कार्रवाई के दौरान खुद पुलिस कमिश्नर कृष्ण प्रकाश और क्राइम ब्रांच के सहायक पुलिस कमिश्नर प्रशांत अमृतकर ने यहां पहुंचकर छापेमारी की जानकारी ली।

ब्राजील में बारिश से आठ लोगों की मौत

रियो डी जिनेरियो। ब्राजील के रियो डी जिनेरियो राज्य में भारी बारिश और भूस्खलन से कम से कम आठ लोगों की मौत हो गयी। दमकल विभाग के कर्मचारियों ने यह जानकारी दी। राज्य में रात से

बारिश शुरू हुई, जो सुबह तक जारी रही।भीषण बारिश के कारण क्षेत्र और आस पास के इलाकों में बाढ़ आ गयी।

दमकल कर्मचारियों ने आंग्रा डोस रेइस शहर में पांच लोगों के मारे जाने की पुष्टि की है, इसके अलावा पास के पराटे और मेसक्यूटा में तीन और लोगों की मौत हुई। कम से कम आठ लोग अब भी लापता हैं। गौरतलब है कि करीब दो माह पहले रियो डी जिनेरियो के उत्तर में पहाड़ी इलाके पेट्रोपोलिस में भूस्खलन की घटनाओं में दो सौ से ज्यादा लोग मारे गए थे।

श्रीलंका में विपक्षी सांसदों ने आपातकाल लगाने के खिलाफ प्रदर्शन किया

कोलंबो। श्रीलंका में मुख्य विपक्षी दल समागी जन बलवेगया (एसजेबी) के सांसदों ने कर्फ्यू आदेशों की अवज्ञा करते हुए यहां प्रदर्शन किया। विपक्षी दल के सांसद, देश में अब तक के सबसे खराब आर्थिक संकट के बीच आपातकाल और अन्य पाबंदियां लगाने के राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे कदम का विरोध कर रहे हैं।श्रीलंका की अधिकांश आबादी का व्हाट्सऐप, ट्वीटर, फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया मंचों से संपर्क टूट गया। सरकार ने अपने खिलाफ प्रदर्शनों को आयोजित करने में इनका इस्तेमाल किए जाने का आरोप लगाते हुए इन पाबंदी लगाने का निर्णय लिया है। साइबर सुरक्षा और इंटरनेट शासन पर नजर रखने वाले निगरानी संगठन 'नेटब्लॉक्स' ने श्रीलंका में मध्यरात्रि के बाद रविवार को फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सऐप, वाइबर और यूट्यूब समेत कई सोशल मीडिया मंचों पर पाबंदी लगा दिये जाने की पुष्टि की। विपक्षी सांसद हर्षा डी सिल्वा ने कहा, ''हम श्रीलंका में लोकतंत्र की रक्षा करेंगे।'' विपक्षी सांसदों ने कोलंबो के इंडीपेंडेंस स्क्वायर की ओर मार्च करते हुए नारे लगाए और तख्तियां दिखायी, जिन पर लिखा था : ''दमन बंद करो'' और ''गोटा घर जाओ''। पुलिस अधिकारियों ने स्क्वायर तक जाने वाले रास्तों पर अवरोधक लगा दिए। यह स्क्वायर 1948 में श्रीलंका की आजादी की याद में बनाया गया था। 'कोलंबो पेज' अखबार की खबर के अनुसार, श्रीलंकाई पुलिस ने कर्फ्यू का उल्लंघन करने पर देश के पश्चिमी प्रांत में 664 लोगों को गिरफ्तार किया। ये गिरफ्तारियां शनिवार रात 10 बजे से रविवार सुबह छह बजे के बीच चले अभियान के दौरान की गयी। उन्होंने बताया कि कर्फ्यू का उल्लंघन कर रहे लोगों को पकड़ने के लिए देशभर में और अभियान चलाए जा रहे हैं।

मैक्सिको में गोलीबारी में कम से कम तीन लोगों की मौत

मैक्सिको सिटी। मैक्सिको के अकापुल्को में समुद्र तट के पास स्थित एक रेस्तरां में गोलीबारी और बाद में पुलिस के साथ मुठभेड़ में कम से कम तीन लोगों की मौत हो गई।गूरेरो राज्य के

अभियोजक के कार्यालय ने बताया कि समुद्र तट के पास बने रेस्तरों में दो बंदूकधारी पहुंचे और दो व्यक्तियों की गोली मार कर हत्या कर दी। गूरेरो राज्य में ही अकापुल्को स्थित है।

बाद में, पुलिस ने हमलावारों का पीछा किया और मुठभेड़ में एक हमलावर को ढेर कर दिया, जबकि दूसरा गंभीर रूप से जख्मी हो गया। सोशल मीडिया पर पोस्ट की गई वीडियो में दिख रहा है कि लोग गोलियां चलने के बीच समुद्र तट पर इधर-उधर भाग रहे हैं, जबकि कुछ लोग मेज़ या कुर्सियों की आड़ लेकर छिप गए।

पाकिस्तान में जारी सियासी खींचतान से सेना ने झाड़ा पल्ला, कहा- नेशनल एसेंबली में जो कुछ हुआ उससे कोई वास्ता नहीं

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में गहराते जा रहे सियासी संकट से सेना ने पल्ला झाड़ लिया है। पाकिस्तानी सेना ने अपने आधिकारिक बयान में कहा कि उसका मुल्क के मौजूदा सियासी हालात से कोई लेना-देना नहीं है। समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक फौज के प्रवक्ता मेजर जनरल बाबर इफ्तिखार ने एक निजी टीवी चैनल से बात करते हुए कहा कि नेशनल एसेंबली में जो कुछ हुआ उससे सेना का कोई वास्ता नहीं है।सनद रहे कि पाकिस्तान की सेना ने पाक में आधे से अधिक समय तक शासन किया है।

यही नहीं पाकिस्तानी सेना का मुल्क की सुरक्षा और विदेश नीति के मामलों में काफी दखल रही है। पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा भी पिछले हफ्ते कम से कम दो बार प्रधानमंत्री इमरान खान से मिल

चुके हैं। यही कारण है कि पाकिस्तानी सेना का उक्त बयान कि उसका मौजूदा सियासी खींचतान से कोई लेना-देना नहीं है... वास्तवकिता से दूर नजर आता है।

मालूम हो कि पाकिस्तान में सियासी संकट आठ मार्च को विपक्ष की ओर से लाए गए अविश्वास प्रस्ताव से शुरू हुआ था। वहीं प्रधानमंत्री इमरान खान ने इसे 'विदेशी साजिश' करार देते हुए मामले को नया एंगल दे दिया।

समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक इमरान के अनुसार सेना के शीर्ष नेतृत्व ने पिछले हफ्ते उनसे मुलाकात की थी और राजनीतिक गतिरोध को हल करने के लिए तीन विकल्पों की पेशकश की। इनमें इस्तीफा देना, अविश्वास का सामना करना या जल्द चुनाव कराना शामिल था।

वुहान से भी खराब हो सकती है शंघाई की स्थिति, लगातार बढ़ते कोरोना के मामलों ने बढ़ाई पेरेंट्स की चिंता

बीजिंग। चीन के आर्थिक केंद्र कहे जाने वाले शंघाई में कोरोना के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। इसकी वजह से शहर में पाबंदियां भी बढ़ गई हैं। शहर में पहले से ही डबल स्टेज लाकडाउन जारी है। ऐसे में अब लोगों का भी संयम जवाब देने लगा है। इसकी एक बड़ी वजह शंघाई में कोविड जीरो पालिसी का लागू होना भी है। एएनआई ने चीन की मीडिया रिपोर्ट्स के हवाले से बताया है कि वहां पर अब लोगों ने इस लाकडाउन का विरोध भी करना शुरू कर दिया है। चीन में बीते दिन रिकार्ड संख्या में कोरोना के नए मामले सामने आए हैं।

ग्लोबल फाइनेंशियल हब है शंघाई

गौरतलब है कि पूरी दुनिया में शंघाई की पहचान एक ग्लोबल फाइनेंशियल हब की है। ग्लोबल टाइम्स की खबर के मुताबिक जानकारों को मानना है कि शंघाई में बड़ी संख्या में कोरोना के

मामलों का सामने आना खतरे को संकेत है। जारकारों के मुताबिक यहां का हाल चीन के वुहान से भी अधिक खतरनाक हो सकता है। हालांकि, इन जारकारों का ये भी कहना है कि मामलों की गंभीरता यहां पर वुहान की तरह इस बार नहीं होगी।

कोरोना के बढ़ते मामलों ने बढ़ाई चिंता

एएनआई की खबर के अनुसार शंघाई में कोरोना के लगातार बढ़ते मामलों ने प्रशासन की भी चिंता बढ़ा दी है। स्थिति को देखते हुए सरकार ने मास स्क्रीनिंग का दायरा बढ़ाने की प्रक्रिया फिर से शुरू कर दी है। बीते 24 घंटों के दौरान यहां पर कोरोना के जितने मामले सामने आए हैं वो पिछले तीन दिनों के दौरान सामने आए मामलों से अधिक हैं। रायटर्स के मुताबिक शंघाई में शनिवार को 6051 मामले रिपोर्ट किए गए हैं। इससे पहले इन मामलों की संख्?या 4144 थी। शंघाई नगर निगम कमीश्नर वू कियांयू ने एक प्रेस कांफ्रेंस में बताया कि सरकार अधिक जांच कर रही है, इसकी ही वजह से ये मामले सामने आए हैं।

उन्होंने ये भी बताया कि जीरो कोविड पालिसी की वजह से ही हम इसकी रोकथाम के जल्द उपाय कर पा रहे हैं। मरीजों को सही समय पर इलाज दिया जा रहा है और उन्हें दूसरों से अलग कर आइसोलेट किया जा रहा है। इसकी वजह से अधिक लोगों का जीवन बचाया जा सकता है।

श्रीलंका को भारत अब तक दे चुका है 250 करोड़ रुपये की आर्थिक मदद

कोलंबो। श्रीलंका इन दिनों आर्थिक संकट से जूझ रहा है। इसने भारत से मदद की गुजारिश की थी। इस क्रम में श्रीलंका में भारत के उच्चायुक्त गोपाल बागले ने कहा, 'श्रीलंका के आग्रह पर भारत ने तुरंत प्रतिक्रिया दी। इस साल जनवरी से अब तक भारत की ओर से श्रीलंका को 2.5 बिलियन की मदद दी जा चुकी है। दूसरी ओर लंदन (स्भ्ठुस्न्रश्ठु) के मौलिक अधिकारों की मानिटरिंग करने वाले एमनेस्टी वाचडाग ने श्रीलंकाई सरकार को चेताया कि जनता की सुरक्षा के नाम पर देश में आपातकाल की घोषणा मानवीय अधिकारों के उल्लंघन का बहाना नहीं बनना चाहिए। श्रीलंका में देशव्यापी कर्फ्यू का एलान किया गया है जो सुबह 6 बजे से लेकर सोमवार सुबह 6 बजे तक रहेगा। बता

दें कि देश में गंभीर बिजली संकट के साथ महंगाई चरम पर है।एमनेस्टी इंटरनेशनल ने कहा, 'श्रीलंका में जनता की सुरक्षा के नाम पर लगाया गया आपातकाल मानवाधिकारों के उल्लंघन का बहाना नहीं बनना चाहिए'। राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे ने एक गैजेट जारी किया जिसमें श्रीलंका में तुरंत प्रभाव से पब्लिक इमरजेंसी की घोषणा कर दी। राजपक्षे ने कहा कि देश की जनता के हित व उनकी सुरक्षा के अलावा देश में किल्लतों को देखते हुए आपातकाल लगाने का फैसला लिया गया है।

अमेरिका सोवियत कालीन हथियार यूक्रेन पहुंचाने की करेगा कोशिश, 2,200 करोड़ की सैन्य सहायता भी करेगा जारी

वाशिंगटन। अमेरिका सहयोगी देशों से बातचीत करके सोवियत कालीन टैंकों और अन्य हथियारों को यूक्रेन भेजने की कोशिश कर रहा है। ऐसा वह पूर्वी यूक्रेन में रूसी सेना के बढ़ रहे दबाव का मुकाबला करने के लिए करेगा। इन हथियारों के इस्तेमाल में यूक्रेन की सेना सक्षम भी है। पूर्वी यूक्रेन में रूस लुहांस्क और डोनेस्क पर पूरी तरह से कब्जा कर उन्हें क्रीमिया से मिलाने की कोशिश कर रहा है। बीच में पड़ रहे यूक्रेन के शहर मारीपोल पर कब्जा करके वह पूरी पट्टी तैयार करना चाहता है। इसी रूसी प्रयास को रोकने के लिए अमेरिका यूक्रेन की मदद करेगा।

टैंकों की संख्या को लेकर अभी नहीं किया गया खुलासा

अमेरिका द्वारा यूक्रेन को दिए जाने वाले टैंक किन देशों के आएंगे और वो कितनी संख्या में होंगे। इसको लेकर अभी जानकारी उपलब्ध नहीं कराई गई है। अमेरिकी अधिकारियों के

मुताबिक यह टैंक यूक्रेन को रूस की सीमा से लगे दक्षिणपूर्वी यूक्रेन के डोनबास क्षेत्र में रूसी ठिकानों पर लंबी दूरी हमला करने में कारगर बनाएगा। साथ ही बताया जा रहा है कि युद्ध शुरू होने के बाद से यह पहली बार है जब अमेरिका टैंकों को स्थानांतरित करने में मदद करेगा।

यूक्रेन की अमेरिका 30 करोड़ डालर से करेगा मदद

तुर्की ने मारीपोल से नागरिकों को निकालने में मदद करने का प्रस्ताव रखा है। एपी के अनुसार रूसी सेना का मुकाबला कर रही यूक्रेन की सेना को अमेरिका 30 करोड़ डालर (करीब 2,200 करोड़ रुपये) की सैन्य मदद और मुहैया करा रहा है। हथियारों की इस खेप में लेजर गाइडेड राकेट सिस्टम, ड्रोन, बख्तरबंद वाहन, नाइट विजन डिवाइस और गोला-बारूद हैं। यह जानकारी

> इन हथियारों के इस्तेमाल में यूक्रेन की सेना सक्षम भी है। पूर्वी यूक्रेन में रूस लुहांस्क और डोनेस्क पर पूरी तरह से कब्जा कर उन्हें क्रीमिया से मिलाने की कोशिश कर रहा है।

अमेरिकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन के प्रवक्ता जान किर्बी ने दी है। यूक्रेन युद्ध के सिलसिले में अमेरिका अभी तक यूक्रेन को 1.6 अरब डालर (करीब 11 हजार करोड़ रुपये) से ज्यादा की सैन्य मदद दे चुका है।

काबुल की सबसे बड़ी मनी एक्सचेंज मार्केट में धमाका, दो लोग हुए घायल

काबुल। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में एक विस्फोट होने की बात सामन आई है। स्थानीय मीडिया ने लोगों के हवाले से जानकारी दी है कि प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक धमाका काबुल के मनी एक्सचेंज मार्केट में हुआ है। टोलो न्यूज के अनुसार यह वहां की सबसे बड़ी मनी एक्सचेंज मार्किट है और इस हमले में दो मनी एक्सचेंजर्स घायल हुए हैं। न्यूज ने एक ट्वीट में कहा है कि काबुल के सराय शहजादा में एक विस्फोट हुआ है। हालांकि कई महीनों बाद अफगानिस्तान में कोई विस्फोट की खबर सामने आई है। बता दें कि पिछले साल अगस्त में सत्ता में आने के बाद से तालिबान शासकों ने पूरे देश में सुरक्षा को बढ़ा दिया है।

कई बार काबुल में हो चुके धमाके

बता दें कि काबुल में इससे पहले भी बम धमाके हो चुके हैं, पिछले साल के दिसंबर महीने में ही एक धमाका हुआ था। जानकारी के अनुसार सड़क किनारे यह बम रखा गया था जिसके फटने से कई लोग घायल भी हुए थे। इससे पहले नवंबर में पश्चिमी काबुल में एक वाहन को बम से उड़ाया गया था जिसमें एक की मौत हो गयी थी, जबकि तीन लोग घायल हुए थे।अफगानिस्तान में बम धमाके होना आम बात है और ज्यादातर धमाकों के तार आइएसआइएस से जुड़े होते हैं। हालांकि इस बार के धमाके की अभी तक किसी ने भी जिम्मेदारी नहीं ली है।

रूस ने यूक्रेन के ओडेसा पर दागी कई मिसाइल, शहर के महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को पहुंचा नुकसान

ओडेसा। रूस-यूक्रेन के बीच 39वें दिन भी जंग जारी है। जंग के 40 वें दिन रूस ने यूक्रेन के ओडेसा पर जबरदस्त एयरस्ट्राइक की। इस हवाई हमले में यूक्रेन के ओडेसा को भारी नुकसान हुआ है। ओडेसा क्षेत्रीय सैन्य प्रशासन के आपरेशनल स्टाफ के प्रवक्ता सेरही ब्रैचुक ने कहा ओडेसा पर कई मिसाइलें लांच की गई। जिसमें महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को नुकसान पहुंचा है। उनके मुताबिक, वर्तमान में स्थिति नियंत्रण में है और संबंधित सेवाएं काम कर रही हैं।

ओडेसा सिटी काउंसिल ने दी जानकारी

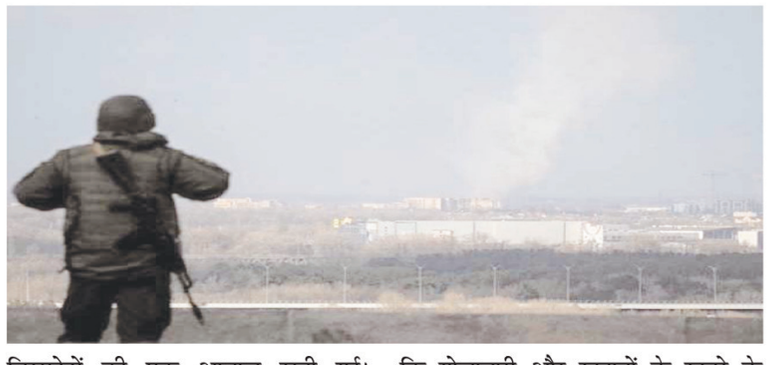

एक प्रत्यक्षदर्शी के हवाले से बताया कि ओडेसा में सूर्योदय से पहले ईंधन डिपो में

विस्फोटों की एक आवाज सुनी गई। सीएनएन के अनुसार, पिछले दो दिनों से क्षेत्र के चारों ओर आसमान में ड्रोन भी देखे गए थे। फिलहाल अब तक किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है।

60 से अधिक विदेशी जहाज यूक्रेनी बंदरगाहों पर हैं खड़े

इस बीच, रूसी राष्ट्रीय रक्षा नियंत्रण केंद्र के प्रमुख मिखाइल मिज़िंत्सेव ने कहा कि गोलाबारी और खदानों के खतरे के कारण 60 से अधिक विदेशी जहाज यूक्रेनी बंदरगाहों को छोड़ने में असमर्थ हैं। उनके मुताबिक, हमले के चलते यूक्रेन के बंदरगाहों में 60 से अधिक विदेशी जहाजों को रोका गया है। रूसी रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता इगोर कोनाशेनकोव ने कहा कि यूक्रेनी नौसेना ने 25 फरवरी से 4 मार्च के बीच आज़ोव सागर और काला सागर में 420 लंगर खदानें रखी थीं। इनमें से कम से कम दस खदानें एक तूफान के बाद काला सागर के पश्चिमी भाग में स्वतंत्र रूप से बह गई। जिसने लंगर के तारों को तोड़ दिया था।

24 फरवरी को शुरू हुआ था युद्ध

आपको बता दें कि डोनेट्स्क और लुहान्स्क पीपुल्स रिपब्लिक (डीपीआर और एलपीआर) द्वारा कीव बलों के खिलाफ खुद का बचाव करने में मदद के लिए अपील करने के बाद रूस ने 24 फरवरी को यूक्रेन में एक विशेष सैन्य अभियान शुरू किया था।

रूस ने कहा कि उसके विशेष अभियान का उद्देश्य यूक्रेन को विसैन्यीकरण और अस्वीकरण करना है। मास्को ने बार-बार जोर देकर कहा है कि यूक्रेन पर कब्जा करने की उसकी कोई योजना नहीं है।

श्रीलंका में राष्ट्रव्यापी कर्फ्यू के उल्लंघन के लिए 600 से अधिक प्रदर्शनकारी गिरफ्तार

कोलंबो। श्रीलंका में 36 घंटों के राष्ट्रव्यापी कर्फ्यू का उल्लंघन करने और बदहाल आर्थिक संकट के मद्देनजर सरकार-विरोधी रैली आयोजित करने के प्रयास के लिए रविवार को देश के पश्चिमी प्रांत में 600 से अधिक व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। सरकार द्वारा सप्ताहांत कर्फ्यू का उल्लंघन करने के लिए विपक्षी सांसदों ने अपने नेता सजित प्रेमदासा के नेतृत्व में यहां ऐतिहासिक चौराहे की ओर विरोध मार्च शुरू किया था। सरकार ने प्रदर्शन के पूर्व नियोजित कार्यक्रम के मद्देनजर सप्ताहांत कर्फ्यू की घोषणा की थी।प्रेमदासा ने कहा, ''हम प्रदर्शन करने से संबंधित जनता के अधिकारों के हनन के लिए सरकार द्वारा सार्वजनिक सुरक्षा अध्यादेश लागू करने का विरोध कर रहे हैं।'' 'कोलंबो गज़ट' में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, रविवार को पश्चिमी प्रांत में कुल 664 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया है। रविवार को 'अरब स्प्रिंग' शैली में को सोशल मीडिया तक जनता की पहुंच को समाप्त करने के लिए इंटरनेट सेवा पर रोक लगाने का आदेश दिया था तथा लोगों के एक

प्रस्तावित विरोध प्रदर्शन से पहले देशव्यापी कर्फ्यू घोषित किया गया था। राष्ट्रपति गोटाबायो राजपक्षे ने शुक्रवार की देर रात एक विशेष गज़ट अधिसूचना जारी करके श्रीलंका में एक अप्रैल से तत्काल प्रभाव से आपातकाल लगा दिया था।सरकार ने रविवार जगह इकट्ठा होने पर रोक लगा दी थी। राजपक्षे के भतीजे एवं खेल मंत्री नमल राजपक्षे ने संवाददाताओं से कहा कि इंटरनेट सेवा पर प्रतिबंध अनुपयोगी है, क्योंकि बहुत सारे लोग सोशल मीडिया साइट से जुड़ने के लिए वीपीएन का इस्तेमाल करेंगे।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
211019 से प्रकाशित
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम् योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506

अधर में पाकिस्तानी सियासत, सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई एक दिन के लिए स्थगित

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की सियासत फिलहाल अधर में है। रविवार को निवर्तमान प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव खारिज होने और उनकी सलाह पर राष्ट्रपति की ओर से संसद भंग किए जाने के फैसले को लेकर पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को सुनवाई शुरू हुई, लेकिन कोई फैसला न हो सका। अब सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई मंगलवार तक के लिए स्थगित कर दी है। पाकिस्तान की नेशनल असेंबली में रविवार को पांच मिनट के अंदर इमरान खान के खिलाफ पेश अविश्वास प्रस्ताव को खारिज कर दिया गया। इसके बाद तेजी से कई घटनाक्रम हुए। इमरान खान ने इसके तुरंत बाद संसद भंग कर नए चुनाव कराने की संस्तुति राष्ट्रपति को भेजी और इस पर राष्ट्रपति ने तुरंत अपनी सहमति देते हुए संसद को भंग कर दिया। इसके बाद से विपक्ष का हंगामा जारी है। उधर, सुप्रीम कोर्ट ने तुरंत मामले का संज्ञान लेते हुए संबंधित पक्षों से जवाब तलब कर सोमवार को सुनवाई का फैसला किया था। सोमवार को मामले की सुनवाई शुरू तो हुई किन्तु कोई फैसला नहीं हो सका। कोर्ट ने मामले की सुनवाई एक दिन के लिए स्थगित कर दी। अब मंगलवार दोपहर 12.30 बजे सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई होगी। कोर्ट ने कहा कि यह संविधान से जुड़ा मामला है, इसलिए जल्दबाजी में कोई फैसला नहीं दिया जा सकता। पाकिस्तान के मुख्य न्यायाधीश उमर अता बांदियाल ने कहा है कि वर्तमान राजनीतिक स्थिति की वैधता पर तार्किक आदेश जारी किया जाएगा।